निर्मल गंगा जन अभियान

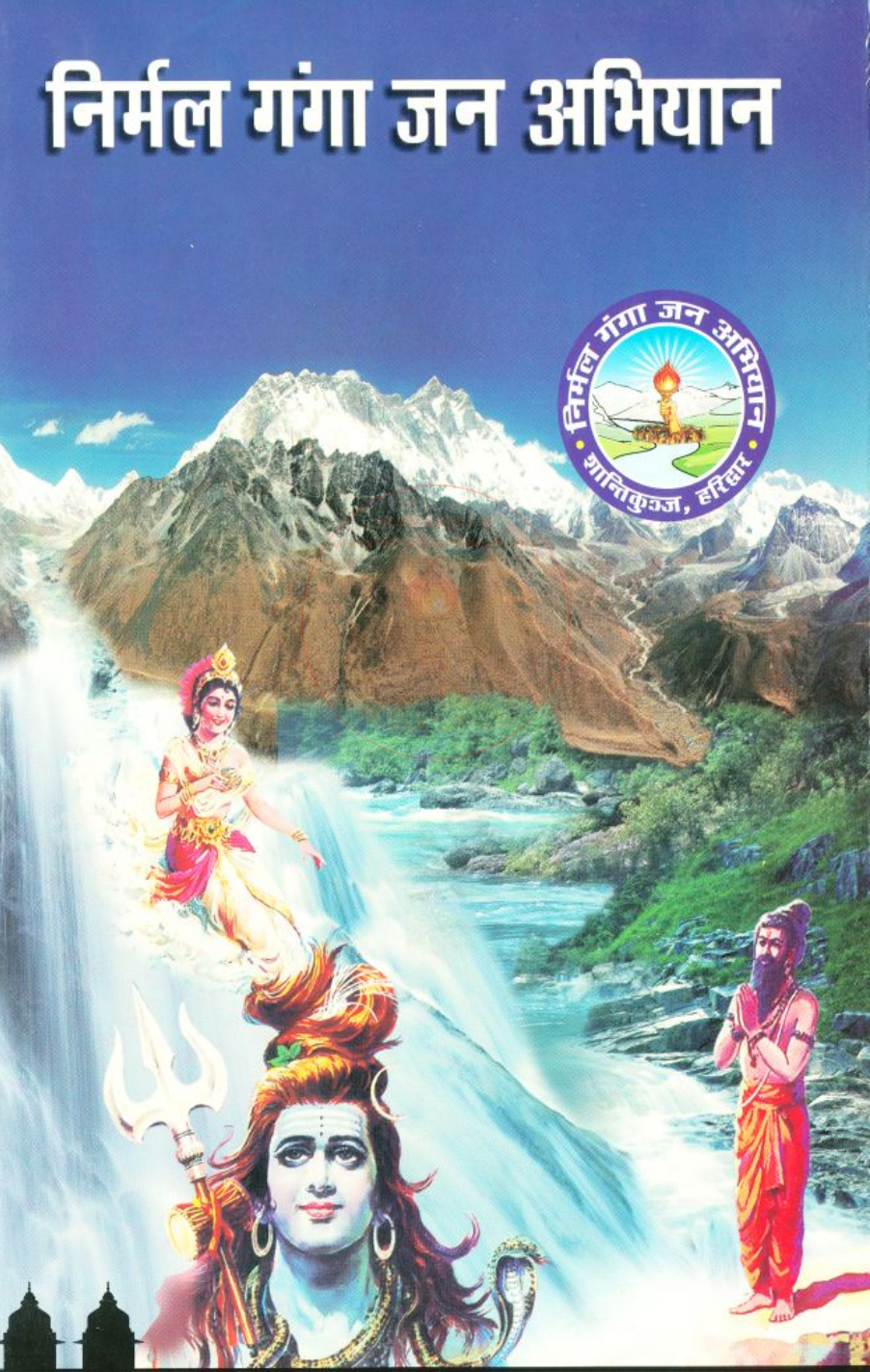

www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

निर्मल गंगा जन अभियान

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) 249411

पुनरावृत्ति सन्- 2014

मूल्य- 24/-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्मल गंगा जन अभियान

लेखक
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक-
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य- 24/-

पुनरावृत्ति सन्- 2014

फोन: (01334) 260602, 09258360652
फैक्स: (01334) 260866
E-mail: shantikunj@awgp.org
Web: www.awgp.org;
www.facebook.com\nirmalgangajanabhiyan

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्मल गंगा जन अभियान

गंगा को उसकी सनातन गरिमा प्रदान करने का एक और भागीरथी प्रयास

लक्ष्य - ''सदानीरा निर्मल गंगा''

उद्देश्य

१. ''जल ही जीवन है, अत: जल की स्वच्छता और जैव विविधता के संरक्षण का संगठित प्रयास।''

२. ''लोकमाता जाह्नवी'', गंगा लोकमाता है, अत: गंगा पुत्रों का अपनी माँ के प्रति कर्तव्यों का स्मरण एवं पालन हेतु प्रेरणा।

३. ''सभी जल स्त्रोत गंगा हैं'', अत: देश के सभी जल स्त्रोतों तक अभियान का विस्तार

४. ''हम बदलेंगे, युग बदलेगा'' की भावना से जन-जन को व्यक्तिगत तौर पर भागीदार बनाना।

५. ''हरियाली चूनर'' गंगा आँचल में सघन वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का प्रयास।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन 05
प्रसिद्ध व्यक्तियों के अभिमत 08
माँ की चिट्ठी, पुत्रों के नाम 10

खण्ड -1 गंगा की सनातन महिमा

1. गंगा की गौरव गाथा अकारण नहीं गायी जाती 13
2. पुण्यतोया गंगा की पवित्रता नष्ट न होने दें 17
3. गंगा माता की गोद में अमृतोपम पय पान 24
4. भगवती गंगा का दिव्य प्रवाह 30
5. गंगा महिमा - क्या कहते हैं वेद-पुराण 34
6. गंगा स्नान का पुण्यफल किसे ? 41
7. भगीरथ और उनकी भागीरथी 43
8. गंगा का भौतिक परिचय 45

खण्ड -2 निर्मल गंगा जन अभियान

1. निर्मल गंगा जन अभियान- एक दृष्टि 48
2. जन-जन की भागीदारी क्यों ? कैसे ? 54
3. निर्मल गंगा दीपयज्ञ 60
4. आद्यगुरु शंकराचार्य विरचित श्री गंगा स्तोत्रम् 63
5. ॐ श्री गंगा (सुरसरि) चालीसा 66
6. निर्मल गंगा अभियान-गीत 68
7. निर्मल गंगा - नारे एवं जयघोष 70
8. जल के विषय मे रोचक जानकारी 74
9. गंगा की सहायक नदिर्या एवं उनका प्रबंधन 75
10. निर्मल गंगा मंत्र 76
11. विनम्र सुझाव 77
12. हमारे सात आंदोलन 80
13. युग निर्माण योजना एक परिचय 90
14. हमारे प्रमुख संस्थान 93
15. समाचारों में हमारा अभियान 95

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

भारत की पहचान है गंगा, संस्कृति की शान है गंगा।

गंगा हमारी माता है। मानवीय आस्थाओं को जितना पोषण गंगामैया ने दिया है, उतना दुनिया की किसी और नदी ने नहीं दिया। गंगा में जल नहीं, अमृत प्रवाहित होता है। गंगाजल पान और गंगा स्नान से पाप धुल जाते हैं। सनातन संस्कृति का हर अनुयायी अपनी पूजा-उपासना में गंगाजल का आचमन करना चाहता है। वह अपने मुख में गंगाजल और तुलसीदल रखकर ही इस संसार से विदा होना चाहता है, ताकि उसकी आत्मा को तृप्ति, तुष्टि और शांति मिले, उसका परलोक धन्य हो जाये।

गंगाजल पवित्रता का प्रतीक है। हमारे पवित्र ग्रंथ और महापुरुषों ने गंगा का गुणगान किया है। भारत ही नहीं, केवल हिंदू धर्म ही नहीं, अनेक धर्म और देशों के धर्मात्मा विद्वानों ने भी गंगाजल के आध्यात्मिक गुण और प्रभावों की गाथा गायी है। यह कोरी मान्यता नहीं। गंगाजल की अद्वितीय पवित्रता सर्वविदित है। सब जानते हैं कि गंगाजल लम्बे समय तक सुरक्षित रहता है, सड़ता नहीं है। यह केवल भौगोलिक परिस्थितियों का ही प्रभाव हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। जिस क्षेत्र से गंगा का उद्‌गम हुआ है, वह उन ऋषि-महात्माओं की तपोभूमि है, जो सारे विश्व की आध्यात्मिक चेतना के सूत्रधार हैं। निस्संदेह इस क्षेत्र की आध्यात्मिक चेतना गंगाजल के साथ प्रवाहित होती है।

गंगा सुरसरि है। उसका अवतरण ही राजा सगर के साठ हजार शापित पुत्रों के उद्धार के लिए हुआ था। महर्षि भगीरथ ने अपने प्रचंड तप से जिस भागीरथी को स्वर्ग से उतरकर धरती पर प्रवाहित होने के लिए राजी किया था, वह तब से लेकर अब तक अरबों-खरबों लोगों का उद्धार करती आ रही है। गंगा इस देश की जीवन रेखा है, जो लगभग आधे देश को पोषण प्रदान करती है।

इन सब विशेषताओं के बावजूद हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि गंगा शिव के नियंत्रण में रहकर ही अपनी विशेषताओं से जन-जन को लाभान्वित करती रही है। गंगा में जल ही नहीं, देव संस्कृति प्रवाहित होती आ रही है।

दुर्भाग्य से हम अपनी संस्कृति को नजरंदाज कर अपसंस्कृति से प्रभावित होते जा रहे हैं। हम शिवत्व के नियंत्रण से गंगा को दूर कर अपनी स्वार्थ-संकीर्णताओं के वशीभूत होते जा रहे हैं और अपनी गंगा मैया की पूजा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आराधना करने के बजाय स्वार्थ सिद्धि के लिए उसे निरंतर अपवित्र करते जा रहे हैं। हमने अपनी तुच्छ महत्त्वाकांक्षाओं के कारण आज गंगा को आचमन योग्य तक नहीं छोड़ा है। हमारे इस अवांछित आचरण ने जन-जन को जीवन देने वाली गंगा को आज अपने अस्तित्व की ही लड़ाई लड़ने छोड़ दिया है।

विकास की आकांक्षा में अंधे प्रशासन को अपनी अनमोल धरोहर-गंगा के महत्त्व से अवगत कराना आवश्यक है। विकास की योजनाएँ बनाते समय गंगा की मौलिकता, उसके अविरल प्रवाह का ध्यान नहीं रखे जाने के कारण उसकी शुद्धि, वानस्पतिक प्रभाव, जैव विविधता बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। हमें स्वार्थ-संकीर्णता से उबरकर दूरदृष्टि अपनाने की जरूरत है, अन्यथा वरदायिनी गंगा यदि कुपित हुई तो देश, समाज, संस्कृति का क्या हश्र होगा, इसकी कल्पना करना कठिन है। पिछले दिनों प्रकृति का जो विनाशकारी तांडव उत्तराखंड ने देखा है, क्या हम इसकी पुनरावृत्ति देखने की प्रतीक्षा कर सकते हैं?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परिवार ने अपने निर्मल गंगा जन अभियान के माध्यम से गंगा की व्यथा को जन-जन तक पहुँचाने और अशिव संकल्पों से मुक्त कराकर उसे पुन: अपनी गरिमा के अनुरूप पवित्र बनाने के जो प्रयास आरंभ किये हैं, वे करोड़ों लोगों की जागरूकता, सक्रिय सहभागिता और संकल्पित प्रयासों से ही पूरे होंगे। प्रस्तुत पुस्तक गंगा की महत्ता और उसकी व्यथा को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयोजन प्रभावशाली ढंग से पूरा करेगी, ऐसा विश्वास है।

गंगा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए जितनी आवश्यकता भौतिक प्रयास किये जाने की है, उससे कहीं अधिक आवश्यकता जन-मान्यताओं को बदलने की है। जन-जन के मन में गंगा के प्रति माता का सम्मान लौटाना आवश्यक है। गंगा के शुद्धिकरण में प्रशासनिक प्रयास किये जायें, यह नितांत आवश्यक है, लेकिन ये सारे प्रयास तब तक अधूरे ही रहेंगे, जब तक हम गंगामैया की महत्ता को अंत:करण से अनुभव न करें। गाँव-गाँव में जागरूकता अभियान चले, जन-जन उसे प्रदूषण मुक्त रखने का संकल्प ले। जनमानस की पहल होगी तो बड़े उद्योगों के कारण हो रहे गंगा प्रदूषण को रोकने का सशक्त नैतिक दबाव उन उद्योगपतियों और प्रशासन पर भी होगा।

निर्मल गंगा जन अभियान गंगा की स्वच्छता, पवित्रता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने का विराट् अभियान है। वर्ष 2013 से आरंभ होकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्यूनतम 2026 तक यह अभियान चलता रहेगा। गंगा के उद्गम से लेकर गंगासागर तक उसके प्रवाह को अविरल और सदानीरा बनाये रखना, गंगा में फूलों के विसर्जन की परंपरा बदलना, मूर्ति विसर्जन जैसी परंपराओं को नया रूप देना, रासायनिक कृषि की अपेक्षा जैविक कृषि को प्रोत्साहित करना, वृक्षारोपण जैसे अनेक कार्य हमें इस जन अभियान के अंतर्गत पूरे करने होंगे।

यह अभियान गोमुख से गंगासागर तक के गंगातट को पाँच अंचलों में बाँटकर चलाया जा रहा है। समय-समय पर होने वाले कार्यक्रमों की प्रेरणाओं को स्थायित्व मिले, यही अभियान की सफलता का आधार होगा। प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में जनमानस को प्रगतिशील दिशाएँ देने, उनकी मान्यताओं को बदलने, गंगा के प्रति माता के भाव को पोषण देने की दिशा में एक अत्यंत प्रभावशाली प्रयास है।

देवों का वरदान है गंगा, हिमगिरि का अनुदान है गंगा।
भारत की पहचान है गंगा, संस्कृति की शान है गंगा॥
सब तीर्थों में महान् है गंगा, हम सबकी अरमान है गंगा।
अगर अभी हम न चेते तो, कुछ दिन की मेहमान है गंगा॥

गंगा अपनी खोयी गरिमा को पुनः प्राप्त हो, क्योंकि गंगा के साथ हमारी संस्कृति जुड़ी है, हमारा अस्तित्व जुड़ा है। संस्कृति और संस्कार दूषित हो रहे हैं, इसीलिए गंगा भी प्रदूषित हो रही है। गंगा प्रदूषण दूर करना है तो हमें अपनी आदतें, अपनी संस्कृति, अपने संस्कारों को बदलना नितांत आवश्यक है। गंगा है तो हम हैं। निर्मल गंगा जन अभियान गंगा को प्रदूषण मुक्त करने, गंगा के प्रवाह को अविरल बनाये रखने में अभीष्ट सफलता प्राप्त करे, यही शुभेच्छा।

-डॉ० प्रणव पण्ड्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभिन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों के अभिमत

गंगा, गंगा के तट पर रहने वालों को ही तारती नहीं है, सौ योजन दूर से भी कोई गंगा शब्द का उच्चारण करे तो उसको पवित्रता की प्राप्ति होती है। हमारे देश में अर्थ के द्वारा, वैभव के द्वारा, अधिकार के द्वारा किसी का मूल्यांकन बहुत क्षणिक हुआ है लेकिन त्याग तपस्या के द्वारा जिन लोगों ने जीवन व्यतीत किया वे सदियों तक इस देश को मुक्ति का संदेश देते रहे। गंगा माता का सर्वाधिक त्याग है कि वो हिमालय से विश्व का कल्याण करने के लिए पहाड़ों-पत्थरों को पार करते हुये मैदानों के बीच में जाते हुये करोड़ों लोगों को अन्नदान करते हुये आज तक निरंतर चल रही है। जब गंगा शब्द का उच्चारण करते हैं तो गंगा के जितने उपकार हैं गंगा का जितना सौंदर्य है, गंगा की जितनी प्रगति है और गंगा के मन में जितनी समता है वो सारे सद्गुण अपने आप आ जाते हैं। गंगा का उच्चारण करने से ऊर्जा की प्राप्ति होती है। जैसे ओंकार का स्मरण करने से स्वाभाविक रूप से पूरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान होने लगता है। एक ओंकार का उच्चारण करने से व्यक्ति को परागति प्राप्त होती है, ठीक उसी तरह से लौकिक जगत में अगर हम देखें तो गंगा शब्द का उच्चारण करने से होती है। गीता का समग्र रूप गंगा में है। कितने लोग इसके किनारे खनन करते हैं, उसको कितना कष्ट होता होगा, लेकिन जैसे शंकर जी ने सहन किया वैसे गंगा सहन करती है। गंगा के भीतर शिव है गंगा में विष्णु है गंगा हमारी संस्कृति है। गंगा का पावन प्रवाह और उसका जल वैज्ञानिकों ने सर्वश्रेष्ठ माना है। भगवान से प्रार्थना करता हूं, सदियों तक गंगा के तट पर साधना करने वाले दिव्य महापुरुषों के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि निर्मल गंगा जन अभियान जन जन का अभियान बनकर इस देश की पवित्रता को रक्षित करने में सहायक हो ।

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि

(निवृतमान जगद्गुरु शंकराचार्य; संस्थापक: भारतमाता मंदिर)

.....

देश की सभी नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं और उसका कारण हम हैं। आज समय आ गया है कि इनकी स्वच्छता हेतु को सशक्त अभियान चलायें। अपनी माँ अगर गंदी हो, मैली हो तो यह बेटों के लिये सोचने का विषय है। नर्मदा हमारी माता है और इसके लिये गायत्री परिवार द्वारा चलाया जा रहा नर्मदांचल शुद्धि अभियान स्वागतेय है।

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, म.प्र.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज यह गर्व की बात है कि हमारी पवित्र नदियां हमारी आस्थायें, नदी की हमारी संस्कृति इसके लिये फिर से एक बार आधुनिक युग में नई पीढ़ी को संस्कारित क रने का काम गायत्री परिवार ने आरंभ किया है। मैं गायत्री परिवार के इस प्रयास में सहयोग समर्थन करता हूँ।

श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

.....

गायत्री परिवार द्वारा नदियों के संरक्षण हेतु जो अभियान चलाया जा रहा है, मैं इसका स्वागत करता हूँ। बागमती हमारी सभ्यता है तथा यह हमारी गंगा भी है। इसके लिये चलाये जा रहे अभियान में हमारी सरकार का पूरा सहयोग है।

श्री खिलराज रेग्मि, माननीय प्रधानमंत्री, नेपाल राष्ट्र

.....

What Gayatri Pariwar is doing is divine, an act of holiness. that helps all of us to easily embrace Mother Ganges ! May She bless you all.

श्री एम नारायण स्वामी, Chief News Editor, IANS

.....

निर्मल गंगा जन अभियान गायत्री परिवार का एक अभिनव प्रयास है। सबको इससे जुडना चाहिये। लोग गंगा को स्नू डादान समझते हैं। ऐसे में कोई तो संस्था सामने आये। स्वच्छता का यह प्रयास समयानुस्नू ल है और यह निरंतर जारी रहना चाहिये। लोगों को इस कार्य हेतु जोड रहे हैं यह सराहनीय है एवं पूरे देश में यह जागृति की लहर फैलनी चाहिये।

श्री आनंद शर्मा, निदेशक, मौसम विभाग, देहरादून

.....

यह बहुत अच्छी योजना है। यह अभियान एक लक्ष्य को लेकर चल रहा है एवं अपने उद्देश्य को प्राप्त होगा ऐसा विश्वास है। यह कार्य आंदोलन का रूप ग्रहण करे, इसमें हमारा पूर्ण सहयोग मिलेगा।

आचार्य बालकृष्ण, पतंजलि योग संस्थान, हरिद्वार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँ गंगा की चिट्ठी, पुत्रों के नाम

गंगा माँ की चिट्ठी अपने बच्चों के नाम.....

मेरे प्यारे पुत्रो ! मैं- तुम्हारी माँ- आज तुम्हें पत्र लिख रहीं हूँ । माना कि मैं तुम्हारी जन्मदात्री माँ नहीं हूँ, किंतु इस देश की संस्कृति ने मुझे युगों-युगों से माँ का स्थान और मान दिया है और आज भी तुम दे रहे हो । किसी एक माँ के कुछेक पुत्र हो सकते हैं, किंतु मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ कि मेरे अनगिनत पुत्र हैं, जिनमें से अनेक को तो मेरा प्रत्यक्ष स्नेह मिल रहा है । तुम शायद यह समझ नहीं पाये हो कि मैं तुम्हारी ऐसी कौन-सी माँ हूँ, तो जान लो मैं तुम्हारी युगानुयुगीन गंगा माँ हूँ । मैं आज अत्यंत विह्वल होकर तुम्हें पत्र लिखकर अपनी पीड़ा बताना चाह रही हूँ ।

आज से युगों पूर्व तुम्हारे एक महातपस्वी पूर्वज के हार्दिक आमंत्रण पर सगर पुत्रों की पीर हरने, मैं स्वर्ग से उतर कर इस धरती पर आई, आने पर सर्वप्रथम भोले भण्डारी ने अपनी जटाओं में मुझे आश्रय दिया, उसके बाद राजर्षि भगीरथ जैसा बताते गये, उस अनुसार मैं चलती गई और इस प्रकार उनके परिजनों के उद्धार का कार्य संपन्न हुआ। उसके बाद से मैं आज तक अनवरत मनुष्यों का पाप प्रक्षालन कर रही हूँ, किंतु मेरे बेटे, इन सबमें तुमने यह नहीं देखा कि तुम्हारा मैल ले-लेकर मैं स्वयं कितनी मलिन हो चुकी हूँ । यह उन राजा रामचंद्र की ही भूमि है, जिन्होंने अपनी माता के वरदान की पूर्ति हेतु वन- गमन का आदेश स्वीकारने में एक पल की देर नहीं की, यह माता के सम्मान की पराकाष्ठा थी। और मेरे बेटों, आज विकास की दौड़ में तुम इतने अंधे हो गये हो कि अपनी बूढ़ी माँ का कष्ट तुम्हें नहीं दीख पड़ता है और इस अंधी दौड़ में तुम विकास और विनाश के मध्य का अंतर भूल गये हो। मेरे तट पर एवं इस भारत भूमि पर पहले भी विशाल नगर, अट्टालिकायें होती थीं, उस समय भी उद्योग धंधे चला करते थे। शायद तुम जानते होगे कि अनेक वस्तुओं के निर्माण में तुम्हारा देश भारतवर्ष विश्व में अग्रणी था, सुगम यातायात एवं सुविधाजनक मार्ग थे, फिर ऐसा क्या हुआ कि वहीं मेरे बेटे धीरे-धीरे प्रकृति के प्रति इतने हृदयहीन हो चले हैं। बेटों, इतना जान लो कि माता प्रकृति कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुदार नहीं होती, किंतु उसके प्रति तुम्हारा अविवेकी कार्य उसे रुष्ट कर सकता है और जब प्रकृति रौद्र हो जाती है, तो धरा का रूप बदल जाता है। तुम अब बच्चे नहीं हो, पर्याप्त परिपक्व हो गये हो। अबोध की त्रुटि क्षम्य है, किंतु जान-बूझकर की जाने वाली गलती तो निश्चय ही दण्ड को न्यौता देना है। तुमने अपने विकास के लिये बुद्धिविहीन होकर जंगल उजाड़े, पर्वत को नंगा किया या उन्हें काँटा-छाँटा। अपने मार्ग प्रशस्त करने हेतु नदियों को रोका, उनका प्रवाह मोड़ा, तुम्हारे आधुनिक नगरों, उद्योगों का जल-मल मेरे एवं मेरी अन्य छोटी-मोटी बहिन सरिताओं के प्रवाह में नि:संकोच छोड़ दिया। यहाँ तक कि तुमने हमारे गंतव्य स्थल महासागर-सागरों को भी नहीं छोड़ा, उन्हें भी प्रदूषित करते जा रहे हो। तुम्हारी धृष्टता की पराकाष्ठा यह है कि मेरा हरा-भरा आँचल भी तुमने छीन लिया है। मैं वस्त्रविहीन-सी लज्जित हो रही हूँ। मेरा लय-तालबद्ध प्रवाह भी तुमने अनेक स्थानों पर अवरुद्ध किया है। ऐसा नहीं कि इनका दुष्प्रभाव तुम भुगत नहीं रहे हो या जान नहीं पा रहे हो, किंतु हाय रे तुम्हारा दुर्दैव! मेरे बच्चे स्वयं अपने विनाश को आमंत्रित कर रहे हैं।

मेरे किनारों पर उद्गम से लेकर सागर संगम तक कितने सुंदर एवं पौराणिक तीर्थ बसे हुए हैं, किंतु आज उनकी क्या दुर्दशा कर दी है? मेरा जल जो कभी ब्रह्मा जी के कमंडलु से निकला था, आज इतना दूषित कर दिया है कि उसका आचमन तो छोड़ो, स्नान करना भी घातक है। तुम्हारी समझ के लिये मैं तुम्हारी विज्ञान की भाषा में अपनी पीड़ा समझाऊँ तो शायद बात तुम्हें अधिक समझ में आयेगी। मेरे जल में बॉयोलॉजिकल ऑक्सीजन का स्तर सामान्य 3 अंश से दोगुना बढ़कर 6 अंश हो गया है एवं मेरे तट पर स्थित प्रदेशों में अनेक बीमारियों का कारण दूषित जल है, यह मेरे लिये अत्यंत क्षोभकारक है । इस पावन भारत भूमि पर मेरा आँचल उद्गम से सागर तट तक 2525 कि. मी. फैला हुआ है और मैं इस देश के 11 राज्यों को जीवन देती हूँ । मेरे जल में प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला एक तत्व 'बैक्टिरियोफेज' जो धरती की किसी नदी में नहीं है- के कारण मेरा जल संचय करने पर भी वर्षों खराब नहीं होता, इसीलिये कहा भी गया है कि-"औषधि जाह्नवी तोयम्, वैद्यो नारायण: हरि: ।"

मृत शरीर, कचरा, बासी फूल, नालों का जल-मल, आज का तुम्हारा विष सदृश्य आविष्कार प्लास्टिक, तुम क्या-क्या नहीं बहाते हो? तुम्हारे लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नित्य संपन्नता उगलते उद्योग-व्यवसायों का जहरीला कचरा, नगरों का मैला, खेतों के रसायन मेरा आँचल तार-तार किये दे रहे हैं । मेरा जीवन संकट में आ गया है। अब और यह अपमान मैं नहीं सह सकती, मन तो करता है कि इस धरा से पुन: स्वर्ग को वापिस लौट जाऊँ, किंतु मेरे 40 करोड़ बेटों की चिंता मुझे यहाँ बाँधे हुए है । बेटे, माँ की सेवा कर स्वर्ग में जाने वाले श्रीराम, पाण्डव, श्रवण कुमार, वीर शिवाजी आदि के देश में तुम्हारे जैसे कृतघ्न पुत्र किस दंड के भागीदार होंगे कौन जाने?

मेरे लाल, अब भी समय गया नहीं है, माँ का हृदय सदा क्षमा से प्लावित होता है। अब भी चेतो, और वह सब छोड़ो जो आज तुम प्रकृति के साथ कर रहे हो, अन्यथा युगों पूर्व मेरे उद्गम का वह हिमशिखर जो तब गंगोत्री तक था, कल को इस धरा से विलुप्त हो जायेगा एवं गंगा माँ का नाम मात्र पुराणों में रह जायेगा और तुम्हारी भावी पीढ़ी इसके लिये केवल तुम्हें ही दोषी मानेगी।

इसके लिये 'जब जागे, तब सबेरा' को मानते हुये आज से ही चेत जाओ, प्रचण्ड जन-जागरण करो। अपनी आदतों में सुधार एवं अपने विकास को प्रकृति मित्र बनाओ, तब मेरा एवं संपूर्ण प्रकृति का रक्षण हो पायेगा एवं इस कार्य के लिये हम सब के अतिरिक्त, स्वर्ग के देवता भी तुम्हें और फलने-फूलने का आशीष देंगे । आशा ही नहीं विश्वास है कि मेरे मन की पीर को तुम समझ कर समझदारी भरा कार्य करोगे एवं एक आदर्श पुत्र एवं सच्चे मानव होने का प्रमाण दोगे ।

मैं तुम्हें अनेक आशीष देती हूँ एवं जब भी तुम्हारा मन चाहे स्नेह पाने के लिये इस वृद्ध गंगा माँ के आँचल में तत्काल चले आना . . . . .

---तुम्हारी
दुखियारी गंगा माँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1. गंगा की गौरव गाथा अकारण नहीं गायी जाती

गंगा भारत भूमि की सर्व प्रधान रक्त धमिनी है। उसके धार्मिक-आध्यात्मिक महत्त्व पर कोटि-कोटि धर्म प्रिय भारतीय विश्वास करते हैं। उसके सम्पर्क-सान्निध्य में शान्ति प्राप्त करते और प्रेरणा ग्रहण करते हैं। उसकी मान्य पवित्रता को, सद्ज्ञान की गरिमा को साथ जोड़ते हुए तत्त्वदर्शी लोग ज्ञान गंगा की तुलनात्मक चर्चा करते हैं।

आर्थिक दृष्टि से उसके द्वारा होने वाली सिंचाई, नौकायन, भूमि को उपजाऊ बनाने जैसे कितने ही महत्त्व हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से विचार किया जाय तो उसका जल अमृत है और समीपवर्ती क्षेत्रों में जो वातावरण बनता है, उसका अपना महत्त्व है। तटवर्ती क्षेत्र में उगे हुए वृक्ष, गुल्म और वनस्पति न केवल आर्थिक दृष्टि से वरन् स्वास्थ्यकर वायु प्रदान करने की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी हैं।

गौ जैसे पशु, वट, पीपल, आँवला जैसे वृक्ष, तुलसी जैसे पौधे मनुष्य की चेतना में शान्ति एवं शालीनता की वृद्धि करते हैं, इसका परीक्षण खुली चुनौती की तरह किया जा सकता है। नशे, मसाले मनुष्य को क्रोधित एवं उद्विग्न बनाते हैं। यह तथ्य अब किसी को अस्वीकार्य नहीं, गंगा जैसे जल प्रवाह न केवल शारीरिक, आर्थिक प्रभाव रखते हैं, वरन् उनकी क्षमता मनुष्य के मानसिक संतुलन को उच्चस्तरीय बनाये रखने में भी योगदान देती है। धार्मिक क्षेत्र की यह मान्यता अब विज्ञान के क्षेत्र में भी उपहासास्पद नहीं है। उसे क्रमशः अधिक तथ्यपूर्ण माना जा रहा है। गंगा स्नान, गंगा तट पर निवास, गंगा जल पान का माहात्म्य अब मात्र श्रद्धा का विषय ही नहीं है, उसके पीछे अनेक तथ्य, तर्क और प्रमाण भी जुड़ते जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा की गरिमा को सार्वभौम और सार्वजनीन स्तर पर मान्यता मिल रही है। आशा की जानी चाहिए कि भविष्य में उसकी बहुमुखी विशेषताओं को और भी अच्छी तरह समझा जायेगा और जन-साधारण द्वारा उसका और भी अधिक लाभ उठाया जायेगा।

इब्ने बतूता नामक एक भ्रमणशील लेखक ने जो संस्मरण लिखे हैं, उनका गिब्स ने अँग्रेजी में अनुवाद किया है। इस पुस्तक में तत्कालीन सुल्तान मुहम्मद तुगलक के शासन का विस्तृत वर्णन है। उसमें यह भी उल्लेख है कि बादशाह गंगा जल पीते थे। उनके लिए दौलताबाद गंगा जल पहुँचाने में 40 दिन लग जाते थे।

अबुल फजल ने अपने ग्रन्थ 'आईने अकबरी' में लिखा है, अकबर को गंगा जल से भारी प्रेम था। उन्हें नित्य गंगा जल मिलता रहे। इसके लिए उन्होंने 20 व्यक्तियों का दल नियुक्त किया। जब बादशाह आगरा या फतेहपुर सीकरी रहते हैं, तब गंगा जल सोरों से आता है और जब वे पंजाब जाते हैं, तब हरिद्वार से।

फ्रान्सीसी यात्री **बर्नियर** सन् 1456 से 1467 के बीच लगभग आठ वर्ष भारत रहा। उसने शहजादा दाराशिकोह की चिकित्सा भी की थी, अपने यात्रा विवरण में वे लिखते हैं-औरंगजेब के भोजन के साथ गंगा जल भी रहता है। बादशाह ही नहीं, अन्य दरबारी भी गंगाजल का नियमित प्रयोग करते हैं। यात्रा में भी वे ऊँटों पर लदवाकर गंगा जल अपने साथ ले जाते थे।

एक दूसरे फ्रान्सीसी यात्री **टैवर्नियर** ने लिखा है हिन्दुस्तान के राजे और नवाब समान रूप से गंगा जल का दैनिक उपयोग करते हैं।

ब्रिटिश कप्तान **एडवर्ड मूर** ने अपने संस्मरणों में लिखा है, शाहनवर के नवाब केवल गंगा जल पीते थे। इसके लिए उन्होंने काफिला तैनात कर रखा था।

इतिहासकार **गुलाम हुसैन** ने अपनी पुस्तक 'रियाजु-ए-सलातीन' में लिखा, हिन्दुओं की तरह इस देश के अन्य धर्मावलम्बी भी गंगा जल की बड़ी कद्र करते हैं और उसे स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी मानते हैं।

पेशवाओं के पीने का पानी गंगाजल ही होता था। गढ़ मुक्तेश्वर तथा हरिद्वार से बहँगियों द्वारा उनके लिए गंगा जल पहुँचता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दक्षिण भारत के **राजा कृष्णराव** को सन् 1925 में कोई असाध्य रोग हो गया था। उन्होंने सब दवाएँ छोड़कर केवल गंगा जल लेना आरम्भ किया और वे उसी से अच्छे हो गये।

अंग्रेजी शासन के दिनों **वैज्ञानिक हैकिन्स** ने गंगा जल की विशेषताओं के सम्बन्ध में प्रचलित किंवदन्तियों पर शोध कार्य किया था। उन्होंने काशी नगर के गन्दे नालों का जल जाँचा, जिसमें हैजे के असंख्य कीटाणु भरे हुए थे। वही नाला जब गंगा में मिला तो उसमें रहने वाले विषाणु तत्काल मर गये। सड़े हुए मुर्दों की लाश से निकलने वाला विष भी गंगा में घुलते ही अपनी हानिकारक प्रकृति खो बैठता है। कुँए में तथा अन्य जलों में हैजा के कीटाणु डाले गये तो वे तेजी से बढ़े, किन्तु गंगा जल में मिलते ही स्वयमेव नष्ट हो गये।

नन्दा देवी, गुरला, मान्धाता, धौलागिर, गोसाई थान, कंचनजंगा, एवरेस्ट जैसे संसार के सबसे ऊँचे गिरि शिखरों का पिघलता हुआ बर्फ हिमालय में इधर-उधर चक्कर काटता हुआ गोमुख पर एकत्रित होकर गंगा जल के रूप में दृष्टिगोचर होता है। इन विशिष्ट भू-क्षेत्रों की धातुएँ तथा रासायनिक वस्तुएँ ऐसी हैं, जो गंगाजल को मानवी उपयोग के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बनाती हैं। हिमालय स्थित ऋषि-देवताओं के तप का ओज भी इस जल के साथ संस्कार रूप में मिला रहता है।

रसायन विज्ञानी **प्रो. एन. एन. गोडबोले** ने गंगाजल की विशेषताओं का कारण ढूँढ़ने के लिए लम्बी रासायनिक छान-बीन की। उन्होंने गंगा जल में कुछ ऐसे विशेष प्रोटेक्टिव कॉलोइड्स पाये गये, जो उसे सदा पवित्र एवं कीटाणु रहित बनाये रहते हैं। यह तत्त्व अन्य नदियों में बहुत कम मात्रा में पाया जाता है। गोडबोले ने अपने शोध निष्कर्ष में लिखा है, गंगाजल जीवाणु वृद्धि को रोकता ही नहीं, वरन् उनका विनाश भी कर देता है। उनका यह भी कथन है कि गंगा जल का अधिक प्रभावपूर्ण स्वरूप प्रयाग तक ही पाया गया, बाद में कई बड़ी नदियाँ मिल जाने से उसमें वह गुण नहीं रहते, जो इससे ऊपर पाये जाते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र में गंगा जल को शारीरिक और मानसिक रोगों का निवारण करने वाला और आरोग्य तथा मनोबल बढ़ाने वाला बताया गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा वारि सुधा समं बहु गुण पुण्यं सदायुष्करं,
सर्व व्याधि विनाशनं बलकरं वीर्यं पवित्र परम्॥
हृद्यं दीपन पाचनं सुरुचिरम्मिष्टं सु पथ्यं लघु-
स्वान्तध्वान्त निवारि बुद्धि जननं दोष त्रघनं वरम्॥

अर्थात् गंगा का जल अमृत के तुल्य, बहुगुणयुक्त, पवित्र, उत्तम, आयु को बढ़ाने वाला, सर्व रोगनाशक, बलवीर्य वर्धक, परम पवित्र, हृदय को हितकर, दीपन-पाचन को बढ़ाने वाला, रुचिकारक, मीठा, उत्तम पथ्य होता है तथा लघु और भीतरी दोषों का नाशक, बुद्धि जनक, तीनों दोषों का नाश करने वाला सब जलों में श्रेष्ठ है।

-वाङ्मय क्र. 34,पृ. 4.213-216

***

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- भगवान् के सर्वोत्तम व्यक्तित्व का अपने भक्त के लिए जो प्रसाद है वह है - गंगा जल; मन वह जो भगवान् के चरणों में निमग्न हो; भगवान् हरि का वह दिन-एकादशी, ये सब पवित्र हैं और पवित्र करने वाले हैं।
  - स्कंद पुराण
- ''भारत महान् है, हिमालय महान् है, परंतु वह क्षेत्र हिमालय में जहाँ गंगा का जन्म हुआ विशेषत: महान् है, क्योंकि वह स्थान वह है जहाँ गंगा भगवान् के चरणों में रहती है।'' - स्कंद पुराण
- ''यदि एक जीव एक तरफ तपस्या से, त्याग से, बलिदान से जिसकी प्राप्ति में समर्थ है, तो दूसरी तरफ निस्संदेह केवल भागीरथी-गंगा के किनारे रहने और स्नान से वह प्राप्त करता है।''
  - महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय 27, श्लोक 26

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. पुण्यतोया गंगा की पवित्रता नष्ट न होने दें

संसार के किसी भी देश की संस्कृति ने एक सरिता को-नदी रूपी जलप्रवाह को अपने मांगलिक कार्यों में इस प्रकार इतनी श्रद्धा और अनुराग के साथ कभी ग्रहण नहीं किया होगा, जितना पुण्य सलिला गंगा को। गौमुख में गंगोत्री ग्लेशियर से नि:सृत गंगा की भौगोलिक एवं प्राकृतिक विलक्षणता ने संसार के अनेकानेक मनीषियों, संधानकर्ताओं को आकर्षित किया है। किन्तु इन शिखरों के ऊपर से जो हिमानी ग्लेशियर सैकड़ों वर्गमील में फैला है, उसके जटिलपथ की खोज का कार्य अभी तक किसी के लिए भी सम्भव नहीं हुआ है।

गंगा एवं हिमालय एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़े हैं। देवात्मा हिमालय एवं भागीरथी दोनों का इतिहास जहाँ तक ज्ञात हो पाया है, यही बताता है कि दोनों ने मिलकर सृष्टि के आदि से अब तक बृहत्तर भारत को समृद्ध सम्पन्न बनाने में नहीं, आस्था उन्नयन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संस्कृति का प्रथम मन्त्र गंगा का मन्त्र है। गंगा के किनारे ही पहला मन्दिर बना था। गंगा के तटवर्ती क्षेत्रों में ही पहला जनपद बसा था।

बँगला के प्रसिद्ध कवि श्रीयुत द्विजेन्द्रलाल राय ने भारतीय आत्मा की अन्तिम श्रद्धा व्यक्त करते हुए भावपूर्ण शब्दों में लिखा है-

परिहरि भव सुख दु:ख जे खल॥
माँ शापित अन्तिम शपन॥
वरषि श्रवणे तव जल कल-कल,
वरषि सुप्ति मम नयन॥
वरषि शान्तिमम शंकित प्राणे,
वरषि अमृत मम अंगे।
माँ भागीरथि जाह्नवि सुरधुनि,
माँ कल्लोलिनि गंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे कल्लोलिनि गंगे। तुम जन्म-जन्मान्तरों के दुःखों को दूर करने वाली हो। अन्तिम समय मेरे शंकित मन और प्राणों को शान्ति और तृप्ति प्रदान करो। अपने अमृत मय जल की हमारे सम्पूर्ण अंगों में वर्षा करो।

कवियों और शास्त्रकारों द्वारा अभिव्यक्त इस श्रद्धा के पीछे कोई निराधार कल्पनाएँ और मात्र भावुकता नहीं रही। किसी भी तत्त्व के प्रति श्रद्धा, उसकी उपयोगिता और वैज्ञानिक गुणों के आधार पर रही है। गंगा जी के जल में ऐसे उपयोगी तत्त्व और रसायन पाये जाते हैं, जो मनुष्य की शारीरिक विकृतियों को ही नष्ट नहीं करते, वरन् विशेष आत्मिक संस्कार जागृत करने में भी वे समर्थ हैं, इसलिए उसके प्रति इतनी श्रद्धा व्यक्त की गई। वैज्ञानिक परीक्षणों से भी यह बातें स्पष्ट होती जा रही है।

प्राचीन काल में जब भारतवर्ष का अरब, मिश्र और योरोपीय देशों से व्यापार चलता था, तब भी और इस युग में भी सब देशों के नाविक गंगा की गरिमा स्वीकार करते रहे हैं। डॉ० नेल्सन ने लिखा है कि हुगली नदी का जो जल कलकत्ता से जहाजों में ले जाते हैं, वह लन्दन पहुँचने तक खराब नहीं होता, परन्तु टेम्स नदी का जल जो लन्दन से जहाजों में भरा जाता है, बम्बई पहुँचने के पहले ही खराब हो जाता है।

तब जबकि जल को रासायनिक सम्मिश्रणों से शुद्ध रखने की विद्या की जानकारी नहीं हुई थी, तब पीने के पानी की बड़ी दिक्कत होती थी। खारी होने के कारण लोग समुद्र का पानी नहीं पी सकते थे। अपने साथ जो जल लाते थे, वह भी कुछ ही दिन ठहरता था, जबकि समुद्री यात्रा महीनों लम्बी होती है। यह दिक्कत उन्हें आने में ही रहती थी। जाते समय वे लोग गंगाजी (हुगली) का बहुत जल भर ले जाते थे, बहुत दिनों तक रखा रहने पर भी उसमें किसी प्रकार के कीड़े नहीं पड़ते थे। समुद्री जल में रखे चावल बहुत दिन तक अच्छे नहीं रहते, सड़ने लगते हैं, जबकि गंगाजी के पानी में वह शीघ्र नहीं सड़ते। यों संसार में और भी अनेक पवित्र नदियाँ हैं, पर गंगाजी के जल जैसी पवित्रता अन्य किसी में भी नहीं है।

गंगाजल के जो रासायनिक परीक्षण किये गये हैं, उनके निष्कर्षों पर एकाएक वैज्ञानिक भी विश्वास नहीं करते, क्योंकि उसमें कुछ ऐसे तत्त्व पाये जाते हैं, जो संसार की और किसी भी नदी के जल में नहीं पाये जाते, गंगाजल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में अत्यधिक शक्तिशाली कीटाणु-निरोधक तत्त्व पाया गया है। उनका नाम कॉलोइड रखा गया है।

फ्रान्स के प्रसिद्ध डॉ० डी हेरेल ने जब गंगाजल की इतनी प्रशंसा सुनी तो वे भारत आये और गंगाजल का वैज्ञानिक परीक्षण किया। उन्होंने पाया कि इस जल में संक्रामक रोगों के कीटाणुओं को मारने की जबरदस्त शक्ति है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि एक गिलास में किसी नदी या कुएँ का पानी लें, जिसमें कोई कीटाणु नाशक तत्त्व न हो, उसमें गंगाजल मिला देने पर उसमें कृमिनाशक सामर्थ्य आ जाती है। इससे सिद्ध होता है कि गंगाजी में कोई ऐसा विशेष तत्त्व है जो किसी भी मिश्रण वाले जल को भी अपने ही समान बना लेता है। यही कारण है 1557 मील लम्बी गंगाजी में गोमती, घाघरा, यमुना, सोन, गण्डक और हजारों छोटी-छोटी नदियाँ मिलती चली गयीं, तब भी गंगासागर पर उसकी कृमिनाशक क्षमता अक्षुण्ण बनी रही। यह एक प्रकार का चमत्कार ही है।

डॉ० डी. हेरेल ने अपने प्रयोगों से सिद्ध कर दिया कि इस जल में टी. बी., अतिसार, संग्रहणी, व्रण, हैजा के जीवाणुओं को मारने की शक्ति विद्यमान है। गंगाजी के जल की सहायता से ही उन्होंने एक औषधि 'बैक्टीरियोफैज' का निर्माण किया, जो ऊपर कही गयी बीमारियों के लिए काफी लाभप्रद सिद्ध हुई।

डॉ० केहिमान ने लिखा है- ''किसी के शरीर की शक्ति जवाब देने लगे तो उस समय यदि उसे गंगाजल दिया जाये तो आश्चर्यजनक ढंग से जीवनी शक्ति बढ़ती और रोगी को ऐसा लगता है कि उसके भीतर किसी सात्विक आनन्द का स्रोत फूट रहा है।''

लगता है इस बात का पता भारतीयों को आदिकाल से था, तभी प्राचीन काल के अधिकांश वानप्रस्थी और संन्यासी जीवन के अन्तिम दिनों में हिमालय की ओर चले जाते थे। आज भी गंगाजी के किनारे जितने आश्रम हैं, उतने सब मिलाकर समूचे भारतवर्ष में भी नहीं हैं।

डॉ० हेनकेन आगरा में गवर्नमेण्ट साइन्स डिपार्टमेण्ट में एक बड़े अफसर थे। प्रयोग के लिए उन्होंने जो जल लिया, वह जल वाराणसी के उस स्नान घाट का था, जहाँ बनारस की गन्दगी गंगाजी में गिरती है। परीक्षण से पता चला कि उस जल में हैजा के लाखों कीटाणु भरे पड़े हैं। 6 घण्टे तक जल रखा रहा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके बाद दुबारा जाँच की गयी तो पाया कि अब उसमें एक भी कीड़ा नहीं है, जल पूर्ण शुद्ध है। हैजे के कीटाणु अपने आप मर चुके हैं।

यह घटना अमेरिका के प्रसिद्ध साहित्यकार मार्कट्वेन को आगरा प्रवास के समय ब्योरेवार बताई गयी, जिसका उन्होंने भारत-यात्रा वृत्तान्त में जिक्र किया है। इस प्रयोग का वर्णन प्रयाग विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के अध्यापक पण्डित दयाशंकर दुबे, एम.ए., एल. एल. बी. ने भी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'श्रीगंगा रहस्य' में किया है।

बर्लिन के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० जे. ओलिवर ने तो भारत की यमुना, नर्मदा, रावी, ब्रह्मपुत्र आदि अनेक नदियों की अलग-अलग जाँच करके उनकी तुलना गंगाजल से की और बताया कि गंगा का जल न केवल इन नदियों की तुलना में श्रेष्ठ है, वरन् संसार की किसी भी नदी में इतना शुद्ध कीटाणुनाशक और स्वास्थ्यकर जल नहीं होता।

डॉ० ओलिवर का इस सम्बन्ध में एक लेख न्यूयार्क से छपने वाले 'इण्टर नेशनल मेडिकल जर्नल' में भी छपा था।

आरोग्य की दृष्टि से गंगाजल का जो महत्त्व है, उससे आधुनिक वैज्ञानिक एवं डॉक्टर आश्चर्यचकित हैं। विश्लेषण करने पर गंगाजल में ताँबा, स्वर्ण, पारद आदि धातुओं एवं अनेक बहुमूल्य क्षारों की ऐसी संतुलित मात्रा मिली है, जिसका सेवन एक प्रकार से औषधि का काम करता है। अच्छे स्वास्थ्य को वह और भी अधिक बढ़ाने में सहायक होता है। गिरते हुए स्वास्थ्य को गिरने से रोकता है और रोगियों को निरोग बनाने में बहुमूल्य औषधि का काम करता है। अनेकों रोगी जो वर्षों तक खर्चीला औषधि उपचार करने पर रोग मुक्त न हो सके, केवल गंगा जल के सेवन से रोग मुक्त होते देखे गये हैं। कोढ़ की एक मात्र चिकित्सा गंगाजल मानी गयी है। प्राचीन काल के आयुर्वेद ज्ञाता कोढ़ी लोगों को गंगा किनारे रहने और निरन्तर गंगाजल सेवन करते रहने की सलाह देते थे और उसका परिणाम भी आशाजनक होता था।

धर्म ही नहीं, किन्तु आयुर्वेद की दृष्टि से भी गंगाजल में जो गुण पाये जाते हैं, उन्हें देखकर भी चकित रह जाना पड़ता है। चरक ने जिसका काल आज से दो हजार वर्ष पूर्व है- गंगाजल को पथ्य माना और कहा है-''औषधि जाह्नवी तोयं''। गंगा जल औषधि है, इसकी समता संसार की कोई औषधि नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकती। चक्रपाणि दत्त ने 1060 वर्ष पूर्व ही खोज करके बताया था कि गंगाजल स्वास्थ्यवर्धक है। ''भण्डारकर ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट'' में एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ है, ''भोजन कुतूहल''। उसमें गंगाजल की उपयोगिता बताते हुए लिखा है- गंगा जल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, रुचिकर, पथ्य, भोजन पकाने योग्य, पाचक, शक्ति बढ़ाने वाला और बुद्धि को तीव्र करने वाला है।

गंगाजी से मिलने वाले व्यक्तिगत लाभों की चर्चा की जाये तो उसका एक स्वतंत्र गंगा-पुराण ही बन सकता है। विश्रामधाम कार्यालय बम्बई के श्री एन. आर. निगुडकर एक बार हिमालय यात्रा पर गये। एक दिन वे चलते समय फिसलकर गिर पड़े। सिर में गहरी चोट आई, घाव हो गया। उन्होंने लिखा है कि मैं प्रतिदिन गंगा-जल से घाव धो लिया करता था, उतने से ही वह गहरा घाव अच्छा हो गया।

गंगा स्नान महिमा के लेखक ललनप्रसाद पाण्डेय ने गंगा जल की औषधोपम उपयोगिता का वर्णन करते हुए 19वें पृष्ठ पर लिखा है कि मैं स्वयं पेट का रोगी था, गंगा जल के नियमित सेवन से मेरे पेट की कमजोरी जाती रही।

बौद्ध लोग भी गंगा का अत्यंत आदर करते थे। जब भूटान का युद्ध समाप्त हो गया तो तिब्बत के तूशीलामा ने एक दूत भेजकर वारेन हेस्टिंग्स से गंगा किनारे कुछ जमीन माँग ली और वहाँ पर एक मन्दिर तथा मठ बनवाया। लामा का कहना था, हिन्दुओं की ही तरह बौद्ध भी गंगाजी को परम पुनीत मानते हैं। भावनाशील श्रद्धासिक्त कविहृदय भगवती गंगा को मूर्तिमान देव-सत्ता के रूप में अनुभव करता है और उसके सान्निध्य की पुलकन को अपनी अभिव्यंजना में इस प्रकार व्यक्त करता है-

विधिविष्णुः शम्भुस्त्वर्मास पुरुषत्वेन सकला,
रमोमागीर्मुख्यात्वमसिललनाजन्हुतनय॥
निराकारागाधा भगवति सदात्वं विहरसि,
क्षितौ नीराकाराहरसि जनतापान्स्वकृपया॥

हे जाह्नवी! पुरुष रूप में तुम ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश हो और स्त्री होकर तुम रमा, उमा तथा सरस्वती हो। हे भगवती! तुम निराकार तथा अत्यन्त गम्भीर हो, किन्तु इस पृथ्वी तल पर जल स्वरूप धारणकर विहार करती हो और अपनी कृपा से लोगों के पाप-ताप दूर करती हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसिद्धाते कीर्तिभवजलधिपारं गमयति स्मृतौ,
वेदे लोके व्रजनहरिणी शान्ति सरणिः।
अतोहं यामित्वां शरणम् भये मोक्षजनानः,
भवत्या पाल्यो स्मि प्रभवसि समुद्धारयशसा॥

तुम्हारी यह कीर्ति प्रसिद्ध है कि तुम संसार सागर से पार करा देती हो। लोक, वेद तथा स्मृति में तुम्हारी प्रशंसा अत्यन्त प्रशस्त है। हे अभय तथा मोक्ष देने वाली मैं तुम्हारी शरण आया हूँ। मेरा उद्धार करो। वृहन्नारदीय पुराण के अध्याय 6 में गंगा और गायत्री दोनों को लोक-परलोक के लिए परम कल्याणकारक बताया गया है, देखिए-

गायत्री जाह्नवी चो भे सर्वपाप हरेस्मृत।।
दतयोर्यक्ति दीनोय स्तं विद्यात्पतितं द्विजाः॥60॥

हे द्विजो! गायत्री और गंगाजी ये दोनों सब पाप हरने वाली हैं। इनकी भक्ति से जो हीन है, उसको पतित जानो।

गायत्री छन्दसां माता लोकस्य जाह्नवी।
उभेते सर्वपापानां नाशकारणतां गते॥61॥

गायत्री वेदों की माता और लोक माता गंगाजी हैं, ये दोनों सब पापों का नाश करने वाली हैं।

यस्य प्रसन्ना गायत्री तस्य गंगा प्रसीदति।
विष्णु शक्ति युतेतेच सर्व कामार्थ सिद्धदे॥62॥

जिस पर गायत्री प्रसन्न हैं, उस पर गंगाजी प्रसन्न हैं। ये दोनों विष्णु शक्ति (पोषण की शक्ति) सहित सब काम-अर्थ देने वाली हैं।

धर्मार्थ काम मोक्षाणां फलरूपे निरंजन॥
सर्व लोकानुग्रहार्थं प्रवर्तते महोत्तमे॥63॥

ये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सब फल देने वाली हैं। ये दोनों (गंगा-गायत्री) सब लोक के अनुग्रह (कृपा) के लिए वर्तमान हैं।

इन पौराणिक मान्यताओं की पुष्टि संत-साधकों द्वारा होती रही है। एक बार रामकृष्ण परमहंस के मन में इन शास्त्र वचनों के प्रति शंका पैदा हुई। गंगा तट पर खड़े हुए वे सोचने लगे कि भगवती जाह्नवी को महिमा मंडित बनाने वाली यह सब कवियों की कल्पना मात्र है या इसके पीछे सत्य का कुछ अंश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी है, वे अभी इसी असमंजस में डूबे हुए थे कि गंगा की विशाल जलराशि के मध्य दो हाथ ऊपर उठते दिखाई पड़े। कुछ समझ पाते इससे पूर्व एक दिव्य दिव्य नारी मूर्ति प्रकट हुई और उनकी ओर आने लगी। पीछे-पीछे एक सुन्दर बालक शंखध्वनि करता चला रहा था। थोड़ी देर बाद दृश्य गायब हो गया। रामकृष्ण देव समझ गये कि यह सब उनकी शंका के निवारणार्थ ही था। स्वयं तरण-तारिणी गंगा को इसके लिए प्रकट होना पड़ा, वह निश्चय ही कलिमल हरणी है।

-वाङ्मय क्र. 34 पृ. 4.216-219

***

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- "गंगा में स्नान निस्संदेह मनुष्य के सारे पापों को धो देता है, परंतु उससे क्या लाभ होता है। वे पाप गंगा के किनारे के पेड़ पर टिके होते हैं, जैसे ही मनुष्य पवित्र जल से नहाकर वापस आता है, वे उसके कंधे पर कूदकर फिर हावी हो जाते हैं। मनुष्य गंगा में जाने तक केवल पापों से मुक्त रह पाता है।"

  - रामकृष्ण परमहंस

- "मैं यह सुनिश्चित मान चुका हूँ कि खगोल विद्या, खगोल शास्त्र, अध्यात्म आदि यह सब कुछ जो हमें प्राप्त हुआ है गंगा के किनारों से उतरकर आया है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि लगभग 2500 वर्ष पहले पाइथॉगोरस रेखा गणित सीखने सैमोस से गंगा को गये थे।"

  - फ्रांसिस एम. वॉल्टेयर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. गंगा माता की गोद में अमृतोपम पय पान

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगीरथ ने प्रचण्ड तप करके गंगा को स्वर्ग से उतरकर धरती पर प्रवाहित होने का अनुग्रह करने के लिए सहमत किया था। इससे पूर्व उनका लाभ देव लोक के निवासी ही उठाते थे। गंगावतरण में भगवान् शिव का महान् योगदान रहा। स्वर्ग से धरती पर उतरते समय उनका प्रचण्ड वेग धारण करने का प्रश्न बड़ा विकट था, उसका समाधान भगवान् शिव ने अपनी जटाओं पर उतरने का अवसर देकर सम्भव किया। भगीरथ तो तप करके वरदान पाकर ही निवृत्त हो गये। धार्मिक मान्यता के अनुसार शिवजी तो अभी भी उन्हें अपनी जटाओं में धारण किये हुए हैं। वे कहाँ से निकली? पौराणिक उत्तर है-विष्णु भगवान् के चरणों से। इस प्रकार गंगाजल, विष्णु का चरणामृत ही होता है।

दूसरी दृष्टि से गंगा को हिमालय का अमृत रस कह सकते हैं। उनका सार तत्त्व निचुड़ता और गंगा के जल में सम्मिश्रित होकर प्रवाहित होता है। दिव्य जड़ी-बूटियाँ इस क्षेत्र में अभी भी पायी जाती हैं। अन्य क्षेत्र में उगने पर उनकी वे विशेषताएँ नहीं रहती हैं, जो हिमालय क्षेत्र में उगने पर रहती हैं। ब्राह्मी, अष्ट वर्ग, रत्न ज्योति जैसी बूटियाँ शिलाजीत जैसे खनिज होते तो अन्यत्र भी हैं, पर भूमि की विशेषता के कारण उनके गुण इस क्षेत्र के उत्पादन में रहते हैं। वे दूसरी जगह नहीं रहते। ये विशेषताएँ जल स्रोतों के साथ घुलकर गंगा में जा पहुँचती हैं। गंगा लगभग 500 मील हिमालय क्षेत्र में परिभ्रमण करने के उपरान्त मैदानी भूमि में आती है। इस बीच प्रायः तीस नदियाँ दूर-दूर से बहकर आती और गंगा में विसर्जित होती चलती हैं। इस प्रकार हिमालय के अति महत्त्वपूर्ण क्षेत्र का रासायनिक निचोड़ उसकी जलधारा में सम्मिलित होता रहता है। इस प्रकार आरोग्य शास्त्र की दृष्टि से गंगाजल की उपयोगिता किसी बहुमूल्य औषधि द्रव से कम नहीं रहती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक स्वास्थ्य संवर्धन गंगा की सर्वोपरि विशेषता है। मानवी सत्ता की तरह पदार्थ सत्ता के भी 1. स्थूल, 2. सूक्ष्म, 3. कारण तीन स्तर हैं।

बाह्य दृष्टि से जो गुण या लाभ दिखाई पड़ते हैं, वे स्थूल हैं। जो वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा गम्भीर अनुसंधान द्वारा प्रमाणित होते हैं, वे सूक्ष्म हैं और जो तत्त्वदर्शी आत्म विज्ञानवेत्ता सूक्ष्म दृष्टि योगियों के द्वारा योग दृष्टि से देखे और समझे जाते हैं, वे कारण गुण कहलाते हैं। तुलसी यों स्थूल दृष्टि से एक हरा-भरा पौधा मात्र है। सूक्ष्म दृष्टि से ज्वर नाशक एवं अन्य कई रोगों के शमन के गुण उसमें हैं। उसमें सतोगुणी आध्यात्मिक तत्त्व इतनी अधिक मात्रा में है कि उसे घर में लगाने से और सेवन करने से शरीर में सतोगुणी प्रवृत्तियाँ अनायास ही बढ़ने लगती हैं। इसीलिये इसका धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक प्रयोग किया जाता है। गाय के सम्बन्ध में भी यही बात है। स्थूल दृष्टि से वह एक सीधा-सादा उपयोगी पशु मात्र है, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से गौ दुग्ध में प्राण तत्त्व एवं जीवनी शक्ति की अधिकता होती है। कारण दृष्टि से उसके कणों में देवत्व के परमाणु व्याप्त हैं। जिसके सान्निध्य से मनुष्य में दिव्य गुण, धर्म, स्वभावों के आचार एवं विचारों में अभिवृद्धि होती है। तुलसी और गाय की तरह प्रत्येक पदार्थ में अपने-अपने स्थूल, सूक्ष्म और कारण स्तर होते हैं। उन्हीं के अनुसार उनके गुणों का निरूपण किया जाता है।

गंगा जल की विशेषता में ऐसे ही दिव्य कारणों का समावेश होने से उसे देव संज्ञा दी गयी है। स्थूल दृष्टि से यह एक आर्थिक लाभ वाली उपयोगी नदी मात्र है। सूक्ष्म दृष्टि से उसमें आरोग्य वृद्धि का विशेष गुण है। किन्तु कारण दृष्टि से उसकी महिमा एवं महत्ता अपार है। उसमें स्नान करने से शरीर की गर्मी एवं मलिनता ही नहीं हटती वरन् अन्तःकरण में पवित्रता का संचार भी होता है। इसी उद्देश्य से असंख्य भावनाशील नर-नारी उसमें स्नान करने के लिए दौड़े आते हैं और अपनी धर्म-भावना तृप्त करते हैं। यह अन्धविश्वास भर नहीं है, इसके पीछे तथ्य हैं। जहाँ गंगा की पवित्रता अभी भी अक्षुण्ण है, वहाँ उसके तट पर कुछ समय निवास करके यह प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है कि उससे आन्तरिक शान्ति का कितना लाभ मिलता है। उसकी कल-कल ध्वनि कानों को पवित्र करती है, उसके दर्शन से नेत्रों की कुवासनाएँ शान्त होती हैं। उसकी समीपता से मन के कुविचारों पर अंकुश लगता है। उसके स्नान और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पान से अन्त:करण की भावनाएँ सात्विक बनती हैं। मनुष्य के रोम-रोम में जन्म-जन्मान्तरों से संचित दुष्प्रवृत्तियाँ रमी होती हैं, इन्हीं के उभार से मनुष्य दुष्कर्म करने का थोड़ा-सा भी अवसर मिलने पर फिसल पड़ता है और न चाहते हुए भी बरबस दुष्कर्म कर बैठता है। यदि इन संस्कारजन्य प्रवृत्तियों पर अंकुश लगा सके तो मनुष्य बहुत से पापों से बच सकता है। ये सब गुण गंगा जल में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा देवों-ऋषियों के आशीर्वाद और तप के प्रभाव से हैं।

गंगा के माहात्म्य में जगह-जगह उसके पाप नाशक गुण का वर्णन किया गया है। उसका तात्पर्य इन्हीं मानसिक दुष्प्रवृत्तियों से है जो अवसर आने पर प्रलोभन उत्पन्न होने पर कुमार्ग की ओर, कुकर्म की ओर धकेल देती है। गंगा का सान्निध्य, इनके ऊपर एक शक्तिशाली अंकुश के समान है। गंगा माहात्म्य में पापनाश का मूल तत्त्व यही अंकुश है।

कई लोग सोचते हैं कि किये हुए दुष्कर्मों का फल हमें गंगा स्नान करने के बाद न भोगना पड़ेगा, यह सोचना गलत है। किये हुए शुभ-अशुभ कर्मों का प्रतिफल तो भोगना ही पड़ता है, वह स्नान आदि साधारण उपायों से छूट नहीं सकता। किये जा चुके पापों की निवृत्ति का तो प्रायश्चित् ही एक मात्र उपाय है, जो गंगा तट पर और भी सुगमता से हो सकता है। उसे पापनाशिनी इसलिए कहा गया है कि उसके सान्निध्य में तप करने से पाप वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। गंगा माहात्म्य का वर्णन करते हुए शास्त्रकारों ने जिन पापों के नाश का उल्लेख किया है, वे मनोगत कुसंस्कार ही हैं। इनकी गणना भी मानसिक पापों में की गई है। मानसिक उद्वेगों के उफान का रुक जाना भी एक प्रकार से भावी पापों का नष्ट होना ही है। इसका तात्पर्य यही है, कि पिछले अनेक जन्मों के संचित उन कुसंस्कारों का शमन होता है, जो पाप कर्मों के वास्तविक उत्पादक हैं।

गंगा के सान्निध्य से इन पाप वृत्तियों के नष्ट होने के अनेकों शास्त्रीय प्रमाण मिलते हैं। पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड, अध्याय 60, 39 और 43 में इस प्रकार के कतिपय श्लोक हैं, उनमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं-

गंगोति स्मरणादेव क्षयं याति च पातकम्।
कीर्तनादतिपापानि दर्शनाद् गुरुकल्मषम्॥

गंगाजी के नाम के स्मरण-मात्र से पातक, कीर्तन से अतिपातक और दर्शन से भारी से भारी पाप (महापातक) भी नष्ट हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्नानात् पानाच्च जाह्नव्यां पितृणां तर्पणात्तथा।
महापातकवृन्दानि क्षयं यान्ति दिने-दिने॥

गंगाजी में स्नान, जलपान और पितरों का तर्पण करने से महापातकों की राशि का प्रतिदिन क्षय होता रहता है।

अग्निना दह्यते तूलं तृणं शुष्कं क्षणाद् यथा।
तथा गंगाजलस्पर्शात् पुंसा पापं दहेत क्षणात्॥

जैसे अग्नि का संसर्ग होने से रुई और सूखे तिनके क्षणभर में भस्म हो जाते हैं, व उसी प्रकार गंगाजी अपने जल का स्पर्श होने पर मनुष्यों के सारे पाप एक ही क्षण में दग्ध कर देती हैं।

त्यजन्ति पितरं पुत्राः प्रियं पत्न्यः सुहृद्गणः।
अन्ये च बान्धवाः सर्वे गंगा तान्न परित्यजेत्॥

पुत्र पिता को, पत्नी प्रियतम को, सम्बन्धी अपने सम्बन्धी को तथा अन्य सब भाई-बन्धु भी प्रिय बन्धु को छोड़ देते हैं, किन्तु गंगाजी अपने जनों का परित्याग नहीं करती।

विष्णुपादाब्ज सम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि॥

गंगे! तुम विष्णु का चरणोदक होने के कारण परम पवित्र हो, तीनों लोकों में गमन करने से त्रिपथ गामिनी कहलाती हो। तुम्हारा जल धर्ममय है, इसलिये तुम धर्मद्रवी के नाम से विख्यात हो। जाह्नवी! मेरे पाप हर लो।

विष्णुपाद प्रसूतासि वैष्णवी विष्णुपूजिता।
त्राहि मामेनसस्तस्मादाजन्ममरणान्तिकात्॥

भगवान् विष्णु के चरणों से तुम्हारा प्रादुर्भाव हुआ है। तुम श्री विष्णु द्वारा सम्मानित वैष्णवी हो। मुझे जन्म से लेकर मृत्यु तक के पापों से बचाओ।

श्रद्धया धर्मसम्पूर्णे श्रीमता रजसा च त।।
अमृतेन महादेवि भागीरथि पुनीहि माम्॥

धर्म से परिपूर्ण महादेवी भागीरथी! तुम अपने शोभायमान रज-कणों से और अमृतमय जल से मुझे श्रद्धा-सम्पन्न बनाती हुई पवित्र करो।

गंगा गंगेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो सैकड़ों योजन दूर से भी माँ गंगा, माँ गंगा कहता है, वह सब पापों से मुक्त हो, विष्णुलोक को प्राप्त होता है।

पाठयज्ञपरैः सर्वैर्मन्त्रहोम सुरार्चनैः।
सा गतिर्न भवेअन्तो र्गगंसंवेवया च या॥

पाठ, यज्ञ, मन्त्र, होम और देवार्चन आदि समस्त शुभ कार्यों से भी जीव को वह गति नहीं मिलती, जो गंगा जी के सेवन से प्राप्त होती है।

विशेषात्कलिकाले च गंगा मोक्षप्रदा नृणाम्।
कृच्छ्राच्च क्षीणसत्त्वानामनन्तः पुण्यसम्भवः॥

विशेषतः इस कलिकाल में सत्त्वगुण से रहित मनुष्यों को कष्ट से छुड़ाने-मोक्ष प्रदान करने वाली गंगाजी ही हैं। गंगाजी के सेवन से अनन्त पुण्यों का उदय होता है।

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अबगाढ़ा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

गंगाजी नाम लेने मात्र से पापों को धो देती हैं, दर्शन करने पर सप्त पीढ़ियों तक को पवित्र कर देती हैं।

न गंगासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति एवमाह पितामहः॥

ब्रह्मा जी का कथन है कि गंगा के समान तीर्थ, श्री विष्णु से बढ़कर कोई पूज्य नहीं है।

तीर्थानां तु परं तीर्थ नदीनामुत्तमा नदी।
मोक्षदा सर्वभूतानां माहपातकिनामपि॥

गंगा तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ, नदियों में उत्तम नदी तथा सम्पूर्ण महापातकियों को भी मोक्ष देने वाली है।

सर्वेषां चैव भूतानां पापोपहतचेतसाम्।
गतिरन्यत्र मर्त्यानां नास्ति गंगासमा गतिः॥

जिनका चित्त पाप से दूषित है, ऐसे समस्त प्राणियों और मनुष्यों की गंगा के सिवा अन्यत्र गति नहीं है।

पवित्राणां पवित्रं या मंगलानां च मंगलम्।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वापापहरा शुभा॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान् शंकर के मस्तक से होकर निकली हुई गंगा सब पापों को हरने वाली और शुभकारिणी हैं। वे पवित्र करने वाली और मंगलमय पदार्थों के लिये भी मंगलकारिणी हैं।

कहा भी गया है-"**औषधि जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणः हरिः।**" अर्थात् आध्यात्मिक रोगों की दवा गंगाजल है और उन रोगों के रोगियों के चिकित्सक नारायण हरि परमात्मा हैं। उन्हीं की कृपा से आन्तरिक पाप-दोषों का समाधान होता है। पाप वृत्तियाँ एक प्रकार की आध्यात्मिक बीमारियाँ ही हैं, इनका उपचार सांसारिक उपायों से नहीं, वरन् गंगा तट पर निवास करते हुए नारायण हरि की परब्रह्म परमात्मा की उपासना करने में ही है।

सप्त ऋषियों ने अपनी तपस्थली हिमालय की छाया और गंगा की गोद में इसीलिए बनायी थी। भगवान् राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न अयोध्या की सुविधाओं को छोड़कर गंगा तट की दिव्य विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ही इस क्षेत्र में तप करने के लिये आ गये थे। तपस्वियों की परम्परा हिमालय क्षेत्र में पहुँचने और गंगा तट पर निवास करने की रही है। यह सब अकारण ही नहीं होता रहा है। तत्त्वदर्शी अध्यात्म विज्ञानियों ने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अनुकूलताओं, उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए ही इस प्रकार का चयन किया था। गंगा यों एक नदी भर है, पर सूक्ष्म दृष्टि से उसे प्रवाहमान देव-सत्ता ही कहा जा सकता है। उसके स्नान, दर्शन, जलपान आदि से सहज ही पवित्रता का संचार होता है। माता की गोदी में रहने के समान ही उसके सान्निध्य का भाव भरा आनन्द अभी भी भावनाशील लोग सहज ही उपलब्ध करते हैं।

हमारे ब्रह्मवर्चस की स्थापना के पीछे गंगा माता की यही गौरव गरिमा का आधारभूत तथ्य सन्निहित है। गायत्री का यों भी गंगा से युग्म है। उस पर सप्तसरोवर का यह स्थल उस पवित्रता को और भी असंख्य गुना बढ़ा देता है, जिससे अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ की गयी साधनाओं का महत्त्व अधिक है। यहाँ आकर कोई भी साधक अपनी उस जिज्ञासा को तृप्त कर सकता है।

-वाङ्मय क्र. 34 पृ. 4.219-222

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. भगवती गंगा का दिव्य प्रवाह

मोटी दृष्टि से हर नदी एक जलधारा मात्र है। पर सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उनके साथ जुड़े हुए गुणों का प्रभाव और परिचय प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। हिमालय एक पहाड़ है, पर दिव्यदर्शियों ने उसमें आध्यात्मिक दिव्यता का प्रकाश देखा है और उसके सम्पर्क में आकर आशातीत लाभ भी उठाया है। मेरी दृष्टि में हिमालय भी पत्थर, नदी, नाले, बरफ, वृक्ष, वनस्पति, पशु-पक्षियों का स्थल मात्र है, पर उसकी आध्यात्मिक गरिमा इतनी असाधारण है कि उस क्षेत्र के सम्पर्क में आकर न जाने किस-किस ने क्या-क्या पाया।

देखने में सभी नदियाँ लगभग एक सी लगती हैं, जल की मात्रा एवं उपयोगिता की दृष्टि से वे न्यूनाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। वहाँ जितनी शान्ति मिलती है, एकाग्रता एवं स्थिरता रहती है, उतनी अन्यत्र दुर्लभ है।

आत्मशान्ति एवं तप साधना की सफलता के लिए गंगा तट का निवास गंगाजल पान, गंगास्नान अमोघ आधार है, जिनके लिए जितने समय तक इस प्रकार का लाभ उठा सकना सम्भव हो, उन्हें उसके लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। गंगा का आध्यात्मिक महत्त्व शास्त्रों में इस प्रकार बताया गया-

यत्र गंगा महाभागा स देशस्तत्तपोवनम्।
सिद्धक्षेत्रस्तु तज्ज्ञेयं गंगातीरं समश्रितम्॥

(कूर्मपुराण 47)

जहाँ पर यह महाभागा गंगा है, वह देश उसका तपोवन होता है। उसको सिद्ध क्षेत्र जानना चाहिए।

स्नातानां तत्र पयसि गंगं ये नियतात्मनाम्।
तुष्टिर्भवति या पुंसां न स्त्रा क्रतुशतैरपि॥ 20॥

(पद्मपुराण)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा के जल में स्नान किये हुए नियत आत्मा वाले पुरुषों को जो तुष्टि होती है, वह तो बसन्त ऋतुओं से भी नहीं होती है।

भक्तिमुक्तिप्रदा गंगा सुखमोक्षाग्रतः स्थिता।
अनेकजन्मसंघातपापं प्रसांविनश्यति ॥ 28॥

(पद्मपुराण)

मनुष्यों के समक्ष भक्ति और मुक्ति प्रदान करने वाली सुख से ही मोक्ष कारिणी गंगा स्थित है। इस महामहिमामयी गंगा के प्रभाव से मनुष्यों के अनेक जन्मों के पापों का संघात नष्ट हो जाता है।

सम्प्राप्नोत्यक्षयं स्वर्गं गंगास्नानेन केशवम्।
यशो राज्यं लभेत् पुण्यं स्वर्गमन्ते परां गतिम्॥ 5॥

गंगा के जल में स्नान करने की बहुत बड़ी महिमा है। इसके करने से कभी नाश को न प्राप्त होने वाला स्वर्गलोक का निवास मिल जाता है। भगवान् श्री केशव के चरणों की प्राप्ति होती है। संसार में उत्तम यश प्राप्त होता है। राज्य का लाभ होता है और महान् पुण्य मिलता है तथा अन्त समय में स्वर्गलोक और परा गति होती है।

मनुष्याः सिद्धगन्धर्वा ये चान्ये सुरसत्तमाः।
गंगातीरे तपस्तप्त्वा स्वर्गलोकेऽच्युताभवन्॥ 11॥
पारिजातसमाः पुष्पवृक्षाः कल्पद्रुमोपमाः।
गंगातीरे तपस्तप्त्वा तत्रैश्वर्यं लभन्ति हि॥ 12॥
तपोभिर्बहुभिर्यज्ञर्वतैर्नानाविधैस्तथा।
पुरुदानैर्गतिर्या च गंगा संसेवतां च सा॥ 13॥

मुनिगण-सिद्ध लोग -गन्धर्व वृन्द और जो अन्य देवों में परम श्रेष्ठ हैं,वे गंगा के तट पर तपस्या करके स्वर्ग लोक में स्थायी रूप से निवास प्राप्त कर अच्युत होते हुए ही वहाँ रहते हैं॥ 11॥ गंगा के तट पर तपश्चर्या करके वहाँ पर परम ऐश्वर्य का लाभ कमाया करते हैं, क्योंकि वहाँ पर जो पुष्पों वाले वृक्ष हैं, वे पारिजात (देवतरु) के समान है और समस्त मनोकामना पूर्ण कर देने वाले कल्प वृक्षों के तुल्य होते हैं॥ 12॥ बहुत प्रकार के तपों से यज्ञ और नाना प्रकार के व्रतों से तथा अधिक दानों से जो मनुष्य को गति प्राप्त होती है, वही गति भागीरथी गंगा के जल में स्नानादि से प्राप्त होती है, अतः इस गंगा का भली-भाँति सेवन करना चाहिए॥ 13॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नास्ति विष्णुसमं ध्येयं तपो नानशनात्परम्।
नास्त्यारोग्यसमं धन्यं नास्ति गंगासमा सरित्॥

(अग्निपुराण)

भगवान् के समान कोई आश्रय नहीं। उपवास के समान कोई तप नहीं। आरोग्य के समान कोई सुख नहीं और गंगा के समान कोई जल तीर्थ नहीं है।

येषां मध्ये याति गंगा ते देशाः पावना वराः।
गतिगंगा तु भूतानां गतिमन्वेषतां सदा॥
गंगा तारयते चाभौ वंशौ नित्यं हि सेविता॥
गंगातीर्थसमुद्भूतमृद्धारी सोऽधहाच्छडर्कवत्।
दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्था गंगेतिकीर्तनात्।
पुनाति पुण्यपुरुषाञ्छततशोऽथ सहस्त्रशः॥

(अग्निपुराण)

जिन क्षेत्रों में होकर गंगा जाती है, वे पवित्र हैं। गंगा सद्गति देने वाली है। जो उसका नित्य सेवन करते हैं, वे अपने वंश सहित तर जाते हैं। गंगा तट की मिट्टी धारण करना। गंगा दर्शन, गंगा स्नान, गंगा जल पान, गंगा नाम का जप करने से असंख्य मनुष्य पवित्र और पुण्यवान् हुए हैं।

प्रधानांशस्वरूपा सा गंगा भुवनपावनौ।
विष्णुविग्रहसंभूता द्रवरूपा सनातनी॥
पापिपापेध्यदाहाय ज्वलदग्नि स्वरूपिणी।
सुखस्पर्शा स्नानपानैर्निर्वाणपददायिनी॥
गोलोकस्थान प्रस्थानमुखासोपान रूपिणी॥

(देवी भागवत पुराण)

विष्णु भगवान् के चरणों से उत्पन्न हुई परम पावनी गंगा तुम्हारा (वैष्णवी) रूप ही द्रव स्वरूप है। तुम्हारा जल पापियों के पाप नाश करने में अग्नि ज्वाला के समान है तथा तुम्हारा स्पर्श मात्र ही निर्वाण पद देने में समर्थ है।

गंगायांच मृतो मृत्युः स्वर्ग मोक्षचविन्दति।
या गतिर्योगयुक्तस्य सत्वस्थस्यमनीषिणः॥
सा गतिस्त्यजतः प्राणान्गगायां तु शरीरिणः॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चान्द्रायण सहस्त्राणि यश्चरेत्कायशोधनम्॥
पानम् कुर्याद्यथेच्छ च गंगाम्भः स विशिष्यत।।

(पद्मपुराण)

गंगा के समीप में मृत्यु को प्राप्त होने वाला मनुष्य स्वर्ग का निवास और मोक्ष दोनों का लाभ प्राप्त किया करता है। जो गति योगाभ्यास में निरन्तर निरत एक योगी पुरुष की होती है और सत्य में संस्थित एक महामनीषी पुरुष की गति हुआ करती है, वही गति उस पुरुष की भी होती है, जो गंगा के तट पर अपने प्राणों का त्याग किया करता है। एक सहस्त्र चान्द्रायण महाव्रत करके जो काया की शुद्धि की जाती है, उसमें भी अधिक यथेच्छ रूप से गंगा के जल का पान करने से होती है।

यद्यकार्यशतम् कृत्वाकृतम् गंगाभिषेचनम्।
सर्वं तत् तस्य गंगाम्भो दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥
सर्वकृतयुगे पुण्यम् त्रेतायां पुष्करं स्मृतम्।
द्वापरेऽपि कुरुक्षेत्रं गंगा कलियुगे स्मृता॥

(महाभारत)

जैसे अग्नि ईंधन को जला देती है, उसी प्रकार सैकड़ों निषिद्ध कर्म करके भी यदि गंगा स्नान किया जाये तो उसका जल उन सब पापों को भस्म कर देता है। सतयुग में सभी तीर्थ पुण्यदायक होते हैं। त्रेता में पुष्कर का महत्त्व है। द्वापर में कुरुक्षेत्र विशेष पुण्यदायक है और कलियुग में गंगा की अधिक महिमा बतायी गयी है।

-वाङ्मय क्र. 34 पृ. 4.222-224

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5. गंगा महिमा
क्या कहते हैं वेद-पुराण

महोज्योतिर्वहति वक्षणासु॥ -ऋग्वेद

गंगा आदि नदियों में महान् ब्रह्म ज्योति ही बह रही है।

नास्ति गंगासमं तीर्थं। -बृह० यो० याज०

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है।

स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी।-भगवान् श्रीकृष्ण (गीता 10.31)

नदियों में मैं गंगा हूँ।

गंग सकल मुद मंगल मूला,
सब सुख करनि हरनि सब शूला॥

-तुलसी (मानस, अयो०)

गंगाजी में जाकर अपवित्र जल भी पवित्र हो जाता है।

अपहत्य तमस्तीव्रं यथा भात्युदये रविः।
तथापहत्य पाप्मानं भाति गंगाजलोक्षितः॥ -वेदव्यास

जैसे सूर्य उदयकाल में घने अन्धकार को विदीर्ण करके प्रकाशित होते हैं, उसी प्रकार गंगाजल में स्नान करने वाला पुरुष अपने पापों को नष्ट करके सुशोभित होता है।

विसोमा इव शर्वयों विपुष्पास्तरवो यथा।
तद्वद् देशा दिशश्चैव हीना गंगाजलैः शिवैः॥

-वेदव्यास (महा., अनु.)

जैसे बिना चाँदनी की रात और बिना फूलों के वृक्ष शोभा नहीं पाते, उसी प्रकार गंगाजी के कल्याणमय जल से वंचित हुए देश और दिशाएँ भी शोभा एवं सौभाग्य से हीन हैं।

भवन्ति निविषाः सर्पा तथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात्।
गंगाया दर्शनात् तद्वत् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

-वेदव्यास (महा., अनु.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसे गरुड़ को देखते ही सारे सर्पों के विष झड़ जाते हैं, उसी प्रकार गंगाजी के दर्शन मात्र से मनुष्य सब पापों से छुटकारा पा जाता है।

गांग-वारि मनोहारि, मुरारि-चरणच्युतम्।
त्रिपुरारि-शिरश्चारि-पाप-हारि पुनातु माम्॥

-महर्षि वाल्मीकि

जो श्री विष्णु भगवान् के चरणों से उत्पन्न हुआ है, श्री शंकर के शिर पर विराजमान है तथा सम्पूर्ण पापों का हरण करने वाला है, वह मनोहर गंगा जल मुझे पवित्र करे।

प्रज्ञोपनिषद् - गंगा महिमा

प्रज्ञोपनिषद् के 6वें मंडल के प्रथम अध्याय में **(पृष्ठ 6.15-6.16)** युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने माँ गंगा की दिव्यता का वर्णन इस प्रकार किया है:-

उत्तराखण्डसंभूता नद्य आरोग्यवर्धकम्।
चित्तसन्तुलनोद्गारि वहन्त्यादाय वारि च॥ 42॥
शिखरस्था हिमानीयं प्रवत्यादित्य तेजसा।
क्षेत्रे पाषाणयुक्ते चा क्षुण्णं वैशिष्ट्यमस्य तु॥ 43॥
हिमजलस्य सदा तिष्ठत्यग्रे नागरिके स्थल।।
दूषितं जलमेतच्च शुद्धतां नो जहाति तु॥ 44॥
अत्रत्यानां नदीनां तु निर्झराणां च विद्यत।।
जलं सहायकं शक्तेवृद्धौ च मलशोधने॥ 45॥

उत्तराखण्ड की सभी नदियाँ आरोग्यवर्धक और मानसिक सन्तुलन बनाने वाला जल लेकर बहती हैं। शिखरों पर जमा हुआ हिम सूर्यताप से पिघलता है, जो पत्थर वाले क्षेत्रों में अपनी विशिष्टता अक्षुण्ण बनाये रखता है। आगे चलकर नगरों की गंदगी मिलने पर वह दूषित होता है, फिर भी अपनी शुद्धता को खोता नहीं। अस्तु, यहाँ के नदी-निर्झरों द्वारा प्राप्त हुआ जल मलों के शोधन एवं बल अभिवर्धन में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है॥ 42-45॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नदीष्वेतासु गंगा तु मुख्येयं वर्तते नद्या।
जलमस्यामृतं दिव्यमाधिव्याधि विनाशकम्॥ 46॥
पुण्येनास्या जलेनात्र खनिजानामथापि च।
वन्यानामौषधीनां च मिश्रणं विपुलं मतम्॥ 47॥
ओषधं जाह्नवीतोयमतएव तदुच्यते॥
वैशिष्ट्यं च निजं नूनं क्षेत्रजं भवति स्वतः॥ 48॥
गुणासतदनुरूपाश्च तत्र जातेषु निश्चितम्।
पदार्थेषु समेष्वेव जायन्ते च यथा तथा॥ 49॥
गंगावतरणरूपे च गंगायाः परमाद्भुतम्।
कृतं वैज्ञानिकं चेत्थं विद्वद्भिस्तु विवेचनम्॥ 50॥
मरीचिरूपं यच्चात्र जलं तत्पूर्णरूपतः।
निर्दोषं कथितं तेजो जले परिणतं भवेत्॥ 51॥
अन्तरिक्षस्थितेष्वेतत्तेजो युक्तेषु सम्भृतम्।
जलमाकाशगंगादिपिण्डेष्वस्ति तु यच्छुभम्॥ 52॥
उत्तरस्थे ध्रुवक्षेत्रे याति सूर्यास्त्रसंगतेः।
विष्णुपादाब्जसंभूता सोच्यते ह्यतएव तु॥ 53॥
उत्तरस्थं ध्रुवक्षेत्रं नाभिरस्य च मन्यताम्।
ब्रह्माण्डस्यात एवोक्तं सैति ब्रह्मकमण्डलौ॥ 54॥
पतत्येषा न्तरिक्षे तो जटायां शंकरस्य तु।
अन्तरिक्षं जटा तस्य व्योमकेशस्य सम्मतम॥ 55॥
पतत्येवं हिमाद्रौ सा हिमरूपतया सदा।
गोमुखादथनिर्याति प्रत्यक्षं वारितां गता॥ 56॥
मरीचिजल दिव्यत्व कारणादेव निर्मल।।
गंगाजले समायान्ति नैव विकृतयो शुभाः॥ 57॥
औषधं जाह्नवीतोयं यतो स्याः सलिलस्य तु।
मुख्यंस्रोतोन्तरिक्षे स्ति न पृथिव्यां तु कुत्रचित॥ 58॥
पार्थिवेषु पदार्थेषु प्रायो विकृतयः सदा।
तत्कालं हि समायान्ति यातयामं तदुच्यते॥ 59॥
गंगाजलं तु तद्दिव्यमपवादतया स्य तु।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यते कारणं चात्र वर्तते चेदमेव हि ॥ 60 ॥

टीका-गंगा इन सभी नदियों में प्रधान है। उसका जल आधिव्याधियों का निवारण करने वाला माना गया है, उसके साथ दिव्य वनौषधियों तथा खनिजों की उपयोगी मात्रा घुली रहती है, अतएव वह औषधि रूप बन जाता है। हर क्षेत्र की अपनी विशेषता होती है, उसके अनुरूप ही वहाँ उत्पन्न होने वाले खाद्य-पदार्थों में गुण रहते हैं। गंगावतरण में गंगा की अद्भुत वैज्ञानिक विवेचना विद्वान् इस प्रकार बताते हैं। संसार में विद्यमान जलों में मरीचि-जल (किरण रूप में विद्यमान जल) पूर्ण निर्दोष माना गया है। यही तेज जल रूप में परिणत होता है। आकाश में अनेक तेजस्वी पिण्डों (आकाश गंगा आदि) में विद्यमान यह मरीचि-जल उत्तरी ध्रुव में सूर्य की किरणों के सम्पर्क में पहुँचता है। यही गंगा का विष्णु (सूर्य) के चरणों (किरणों) से निकल कर ब्रह्म कमण्डलु में जाना कहा गया है। उत्तरी ध्रुव इस अपने ब्रह्माण्ड की धुरी है, यही ब्रह्मा (ब्रह्माण्ड) का कमण्डलु (धुरी या नाभि) है। वहाँ से वह (गंगा) अन्तरिक्ष में गिरती है, अन्तरिक्ष ही शिवजटा है, क्योंकि शिवजी को व्योमकेश भी कहते हैं। व्योम अर्थात् अन्तरिक्ष जिनके केश अर्थात् बालस्वरूप हैं। वहाँ से वह (गंगा) हिमालय पर घनीभूत बर्फ बनकर गिरती है। तदनन्तर जल रूप में गोमुख से बहती हुई दीखती है। उसी मरीचि-जल की दिव्यता के कारण गंगा-जल में सहसा विकृति नहीं आती है। चूँकि इसके जल का मुख्य स्रोत पृथ्वी में नहीं है-अन्तरिक्ष में है, इसीलिये यह औषध-रूप में है। पार्थिव पदार्थों में तत्काल विकृतियाँ देखी जाती हैं, उसे बासी कहा जाता है, किन्तु गंगाजल इसी कारण इसका अपवाद है ॥ 46-60 ॥

वाल्मीकि रामायण में गंगा अवतरण कथा

राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करवाया। उसके निमित्त उन्होंने घोड़ा छुड़वाया। जब वह घोड़ा बहुत समय तक नहीं लौटा तो उन्होंने अपने साठ हजार पुत्रों (उस समय प्रजा को ही राजा पुत्रवत् समझते थे) को ही घोड़ा खोजने का आदेश दिया। उन्होंने आदेश दिया, कि जाओ, सारी पृथ्वी खोदो और घोड़े के चोर का पता लगाओ। राजा सगर के पुत्रों ने एक जगह महामना भगवान् कपिल को देखा। यज्ञ का वह घोड़ा भगवान् कपिल के पास ही चर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा था। भगवान् कपिल को अपने यज्ञ में विघ्न डालने वाला जानकर वे क्रोध करने लगे। भगवान् कपिल को भी उनकी अनर्गल बातें सुनकर रोष आया, उनके मुँह से एक हुँकार निकल पड़ी। उस हुँकार के साथ सभी सगरपुत्र जलकर राख हो गये।

पुत्रों को गये बहुत दिन बीतने पर राजा सगर ने अपने पौत्र अंशुमान् को भेजा, कहा-जाओ, उस चोर का पता लगाओ, जिसने मेरे यज्ञ सम्बन्धी अश्व का अपहरण कर लिया है। वीर अंशुमान् धनुष और तलवार लेकर चल दिया। वह उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ उनके चाचा सगरपुत्र राख के ढेर हुए पड़े थे। वह शोक से फूट-फूट कर रोने लगा। उसने अश्व को भी वहाँ चरते हुए देखा। अंशुमान् ने उन राजकुमारों को जलाञ्जलि देने की इच्छा की, किन्तु वहाँ कहीं दूर तक जलाशय नहीं दिखायी दिया। तब उसको पक्षीराज गरुड़ दिखायी दिये, जो उसके चाचाओं के मामा थे। गरुड़ ने अंशुमान् से कहा-पुरुषसिंह शोक न करो। इन राजकुमारों का वध सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये हुआ है। महात्मा कपिल के रोष से ये दग्ध हुए हैं, इनके लिए तुम्हें लौकिक जल की अञ्जलि देना उचित नहीं है। हिमवान् की ज्येष्ठ पुत्री गंगा जी है, उन्हीं के जल से अपने इन चाचाओं का तर्पण करो। लोकपावनी गंगा के जल से भीगी हुई यह भस्मराशि इन सबको स्वर्गलोक में भेज देगी। अब तुम घोड़ा लेकर जाओ और अपने पितामह का यज्ञ पूर्ण करो। वह घोड़ा लेकर अपने पितामह के पास पहुँचा और गरुड़ की बतायी सारी बात भी सुनायी। पृथ्वीपति राजा सगर अपना यज्ञ विधिवत् पूर्ण कर अपनी राजधानी लौट आये। उन्होंने गंगा जी को धरा पर लाने के विषय में बहुत विचार किया, परन्तु किसी निर्णय पर पहुँच न सके। राजा सगर की मृत्यु के बाद अंशुमान् बड़ा प्रतापी राजा हुआ। वह अपने पुत्र दिलीप को राज्य देकर हिमालय कठोर तपस्या करने चला गया।

राजा दिलीप भी इसी चिन्ता में डूबे रहते कि किस प्रकार पृथ्वी पर गंगाजी का उतरना सम्भव होगा? किस प्रकार मैं अपने पितरों का उद्धार कर सकूँगा। राजा दिलीप की मृत्यु के उपरांत उनके पुत्र भगीरथ ने राज्य सँभाला। उन्हें संतान नहीं थी, वे संतान की इच्छा तो रखते थे, पर फिर भी पितरों के उद्धार के लिए गंगाजी को पृथ्वी पर उतारने के प्रयत्न में लग गये और गोकर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तीर्थ में भारी तपस्या करने लगे। वे पंचाग्नि सेवन करते और एक-एक मास में आहार ग्रहण करते। उनकी तपस्या से भगवान् ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और कहा, मैं तुम्हारी तपस्या से बड़ा प्रसन्न हूँ। तुम कोई वर माँगो। तब भगीरथ ने कहा, 'यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो सगर के सभी पुत्रों को मेरे हाथ से गंगा जी का जल प्राप्त हो और इक्ष्वाकु वंश की वृद्धि भी होती रहे।' भगवान् ब्रह्मा जी ने कहा, 'तुम्हारा मनोरथ पूरा हो, पर गंगा जी को धारण करने के लिए तुम भगवान् शंकर को तैयार करो, क्योंकि गंगाजी का वेग यह पृथ्वी सहन नहीं कर सकेगी। केवल शंकर जी ही उन्हें धारण कर सकते हैं।'

भगीरथ पुनः एक वर्ष तक भगवान् शंकर की उपासना में लगे रहे। भगवान् पशुपतिनाथ प्रकट होकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बोले, 'मैं अवश्य ही गंगा को अपने मस्तक पर धारण करूँगा।' गंगाजी भगवान् शंकर के शोभायमान मस्तक पर गिरीं, पर उन्हें लगा कि मैं अपने प्रखर प्रवाह के साथ शंकर जी को लिये पाताल में घुस जाऊँगी। उनके इस अहंकार को जानकर भगवान् ने गंगा को अपनी जटाओं में ही उलझाकर अदृश्य कर दिया। वे वहाँ से निकलने का मार्ग न पा सकीं।

भगीरथ ने पुनः भगवान् शिव की तपस्या कर उन्हें संतुष्ट कर लिया। तब महादेव जी ने गंगाजी को बिन्दु सरोवर में ले जाकर छोड़ दिया। वहाँ छूटते ही उनकी सात धाराएँ हो गयीं। ह्लादिनी, पावनी और नलिनी - ये धाराएँ पूर्व दिशा की ओर चली गयीं। सुचक्षु, सीता और महानदी सिन्धु ये तीन धाराएँ पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित हुईं और जो सातवीं धारा थी, वह महातेजस्वी राजर्षि भगीरथ के पीछे-पीछे चलने लगी। इस प्रकार गंगा का अवतरण सम्पन्न हुआ।

मार्ग में पराक्रमी राजा जह्नु यज्ञ कर रहे थे, गंगा जी अपने जल प्रवाह से उनके यज्ञ मण्डप को बहा ले गयीं। राजा जह्नु इसे गंगाजी का गर्व समझकर कुपित हो उठे, और उन्होंने गंगा जी के समस्त जल को पी लिया। तब देवताओं ने गंगाजी को उन महात्मा नरेश की कन्या बना दिया और उन्हें विश्वास दिलाया कि आप गंगाजी को प्रकट करके इनके पिता कहलायेंगे। इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री - जाह्नवी भी कहलाती हैं। गंगाजी के जल से सभी सगर पुत्र निष्पाप होकर स्वर्ग में पहुँच गये। माँ गंगा भगीरथ की ज्येष्ठ पुत्री बनकर भागीरथी नाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से विख्यात हुई। माँ गंगा आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों पथों को पवित्र करती हुई गमन करती हैं, इसलिए त्रिपथगा मानी गयी हैं। इस प्रकार त्रिपथगा, दिव्या और भागीरथी- इन तीनों नामों से गंगा की प्रसिद्धि हुई।

गंगावतरण का यह मंगलमय उपाख्यान धन, यश, आयु, पुत्र और स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाला है। जो भी इसे अन्यों को सुनाता है, उसके ऊपर देवता और पितर प्रसन्न होते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- ''माँ गंगे, तुम्हारे पथ बड़े विचित्र हैं, तुम सागर भरती हो, परंतु भवसागर को सुखाती हो, जो सभी सांसारिक दुःखों का सागर है।'' - महर्षि वाल्मीकि
- ''पवित्र गंगा भारत में देश की सबसे महत्त्व की चिरस्थायी सम्पदा है।''
  -डेनियल लैक
- ''वह भूमि जहाँ गंगा नहीं बहती है, बिलकुल इस तरह है, जैसे कि एक क्षेत्र जो सूर्य से रहित हो, एक घर जो बिना रोशनी का हो, एक ब्राह्मण, जो वेदों से रहित हो।'' - जीन टैवर्नियर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

6. गंगा स्नान का पुण्यफल किसे ?

गंगा स्नान का पर्व था। भारी भीड़ स्नान का पुण्य लाभ करने के लिए जा रही थी। सभी गंगा माता की जय बोल रहे थे। शंकर-पार्वती सूक्ष्म शरीर से आकाश मार्ग से जा रहे थे। माँ पार्वती ने इतनी भीड़ को एक ही दिन गंगा स्नान के लिए जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया और शंकर जी से इसका कारण पूछा।

शंकर जी ने कहा-आज सोमवती अमावस्या पर्व है। शास्त्रों में इस पर्व का बहुत माहात्म्य बताया है और स्नान करने वाले स्वर्ग जाते हैं, ऐसा लिखा है। इसी कारण हर पर्व पर इतने लोग गंगा स्नान को आते हैं। पार्वती जी का असमंजस और भी अधिक बढ़ गया। उन्होंने कहा-स्वर्ग से तो हम लोगों का सम्पर्क निरन्तर रहता है। वहाँ तो थोड़ी जगह है। इतने लोग हर पर्व पर आते हैं, हर साल कई-कई सोमवती अमावस्याएँ पड़ती है, एक वर्ष में ही करोड़ों लोग डुबकी लगाते हैं। सौ वर्ष में तो उनकी संख्या इतनी हो जायेगी, जितनी के लिए वहाँ खड़े होने की भी जगह नहीं है, इसलिए यह माहात्म्य गलत मालूम पड़ता है। साथ ही शास्त्र लिखने वाले ऋषि झूठ क्यों बोलेंगे ? यह बात भी समझ में नहीं आती। देव! इस सन्देह का निवारण कीजिए।

शिवजी बोले-देवि! स्नान के साथ मन को स्वच्छ बनाने की भी शर्त है। उसका पालन यह स्नान करने वाले करते नहीं और केवल मेला - मनोरंजन भर करते हैं। उस पुण्य के भागीदार नहीं बनते, जो शास्त्रकारों ने स्वर्ग जाने के रूप में कहा है।

पार्वती जी की शंका का निराकरण न होते देखकर शिवजी ने उन्हें उदाहरण प्रस्तुत करते हुए वस्तु-स्थिति समझाने का प्रयत्न करने की बात सोची। उन्होंने एक नाटक रचा। जिस रास्ते दर्शनार्थी जा रहे थे, उसी से सटकर दोनों वेश बदल कर बैठ गये। शिवजी ने वयोवृद्ध कोढ़ी का रूप बनाया और पार्वती को असाधारण सुन्दरी बनाकर पास में बिठा लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस विचित्र जोड़े को देखकर दर्शनार्थी पूछते कि आप लोग आपस में कौन हैं ? यहाँ किस प्रयोजन से बैठे हैं ? पूर्व गढ़न्त के अनुसार पार्वती कहती हैं- 'यह वृद्ध मेरे पति हैं। इनकी इच्छा गंगा स्नान की हुई। अंग इनके काम नहीं देते, सो इन्हें मैं अपनी पीठ पर लादकर यात्रा पूरी कर रही हूँ। बहुत थक जाने के कारण हम लोग यहाँ बैठे सुस्ता रहे हैं। जल्दी ही शेष यात्रा फिर आरम्भ करेंगे। कल ही तो सोमवती अमावस्या है।' पूछने वालों में से अधिकांश की कुटिल दृष्टि थी। इशारों-शब्दों से उनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने ढंग से एक ही परामर्श दिया कि इस बुड्ढे को गंगा में छोड़ देना चाहिए और रूपसी को उनके साथ चलना चाहिए। उनके लिए हर प्रकार की सुख-सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी, चैन की जिन्दगी कटेगी।

इन परामर्शों को सुनते-सुनते पार्वती हैरान हो गयी कि ये कैसे धर्मात्मा लोग हैं ? वे भी गंगा स्नान करने जा रहे हैं। पर इनके मन इतने कलुषित हैं तो धर्माडम्बर रचने से क्या लाभ ? पार्वती जी पूछ बैठीं- 'नाथ ! क्या सभी धर्माडम्बरी ऐसे ही होते हैं ?' इस पर शिवजी बोले- 'हाथ की पाँचों उँगलियाँ एक समान नहीं होती। इस भीड़ में कुछ सच्चे लोग भी होते हैं। वे भी तुम्हें देखने को मिलेंगे।'

प्रतीक्षा के बाद एक भावुक भक्त उधर आया। ध्यान पूर्वक इन पति-पत्नी की परिस्थिति और मनोदशा परखता रहा और गद्‌गद हो गया। सुन्दरी के पग-वन्दन करता हुआ बोला- 'देवी, तुम धन्य हो। तुम्हारी जैसी नारियों की धर्म भावना से ही यह धरती-आकाश अपनी जगह पर स्थित है। मैं कुछ आप लोगों की सेवा करना चाहता हूँ। मेरे पास कुछ सत्तू है। इसे आप लोग भी ग्रहण करें। भूखे होंगे न ? इसके बाद इन वृद्ध सज्जन को मैं अपनी पीठ पर बिठाकर गंगा स्नान कराऊँगा। आप कहेंगी तो आपके घर तक भी इन्हें पहुँचा आऊँगा।'

शिवजी ने पार्वती से कहा- 'देखा, इतनी भीड़ में केवल यह आदमी तीर्थ सेवन की गंगा स्नान की शर्तों को पूरी कर रहा था। यही है, वह जिसको स्वर्ग जाने का वह प्रतिफल मिलेगा, जिसका वर्णन गंगा स्नान के सम्बन्ध में ऋषि-मनीषियों ने किया है।'

-वाङ्मय क्र. 34 पृ. 4.224-225

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. भगीरथ और उनकी भागीरथी

पौराणिक गाथा के अनुसार भगीरथ के पूर्वजों को शाप लगा था और वे जलकर भस्म हो गये थे। मरने के उपरान्त भी उन्हें सद्गति नहीं मिली। वे नरकगामी हुए। उपाय यह बताया गया कि स्वर्ग से गंगा अवतरित होकर आये और उस स्थान पर होती हुई बहे, जहाँ वे भस्म हुए थे, तो उन पितरों की सद्गति सम्भव होगी।

राजकुमार भगीरथ राजघरानों में उत्पन्न हुए पर अन्य विलासी लड़कों की तरह न थे, जिन्हें सुरा-सुन्दरी की नारकीय अग्नि में अपने चढ़ते यौवन को जला डालने की उतावली रहती है। यों बड़े आदमियों के पीछे कुसंग भी दुर्भाग्य की तरह पीछे पड़ा रहता है, पर मनस्वी भगीरथ का संस्कारवान् मन भटका नहीं। विचारशीलता ने उसे जीवन समस्याओं को ध्यान में रखने की प्रेरणा दी।

पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्य की बात भगीरथ सोचा करते। शाप से पितरों के भस्म होने के कारण उनके कुल का गौरव घट गया था। वे चाहते थे कि ऐसा आदर्श पथ अपनाया जाये, जिससे वह खोया हुआ सम्मान पुनः प्राप्त हो। दुष्कर्म स्वतः ही एक शाप है, जो उन्हें करता है, वह भस्म हुए बिना नहीं रहता। फिर अपयश का नरक तो उन्हें मिलता ही है। पूर्वज इस प्रकार की भूल कर चुके थे। अब बिगड़ी बात बनानी हो तो आदर्श सत्कर्म करने का-श्रेष्ठता के पथ पर चलने का मार्ग ही शेष था। यदि दुष्कर्मों का फल नरक है, तो सत्कर्म स्वर्ग भी तो दे सकते हैं। गंगा को पृथ्वी पर लाने का पुण्य उन्हें ही नहीं, उनके पूर्वजों को भी सद्गति प्रदान कर सकता है, तो जीवन उसी कार्य में क्यों न लगा दिया जाये, भगीरथ निरन्तर यही सोचते रहते।

सोचना बहुत कुछ और करना कुछ नहीं, यह दुर्बल मनोभूमि के पुरुषों का मार्ग है। मनस्वी लोगों को जो उचित और उपयुक्त प्रतीत होता है, उस पर वह चलने के लिए कटिबद्ध भी होते हैं। साहस के सामने बेचारी कठिनाइयाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितनी देर ठहर पाती हैं, उन्हें रास्ता देना ही पड़ता है। भगीरथ ने गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने का अपना निश्चय जब परिजनों को सुनाया तो वे अवाक् रह गये। इतना बड़ा काम, इतना छोटा लड़का कर सकेगा, इस पर उन्हें विश्वास न होता था। आरम्भ में सभी ने एक स्वर में असहमति प्रकट की और मार्ग की बाधाओं को बताते हुए निरुत्साहित किया, पर जैसा कि सदा से होता आया है, वह यहाँ भी हुआ। दृढ़-निश्चय के आगे सब झुकते हैं, और अन्ततः समर्थन भी मिलता है और सहयोग भी।

भगीरथ घर से चल पड़े और हिमालय पर जाकर तप करने लगे। हिमगिरि के देवता- शंकर का हृदय पसीजा। उन्होंने अपने मस्तक में निवास करने वाली गंगा को मरुभूमि में प्रवाहित होने की व्यवस्था कर दी। आधुनिक बुद्धिवादी कहते हैं कि शिवलिंग पर्वत के गर्भ में अपरिमेय जल की यह अजस्र धारा गंगा छिपी पड़ी थी। मनस्वी भगीरथ ने एक तपस्वी इंजीनियर के रूप में उसे खोजा और उसे मरुभूमि में ले आने के लिये अवरोध भागों को तोड़-फोड़कर भगवती जाह्नवी को मैदान में उतारने की सफलता प्राप्त कर ली।

जो हो, भगीरथ अपने लक्ष्य में सफल हुए। यह तप उन्हें बहुत लम्बे समय तक करना पड़ा और दुर्गम प्रदेश की कठिनाइयों ने उनके शरीर को जीर्ण-शीर्ण भी कर डाला, पर इससे क्या? मनुष्य शरीर की सार्थकता बहुत दिन जीने या ऐश आराम करने में नहीं, वरन् इस बात में है कि यश को उज्ज्वल बनाने वाला कोई सत्कार्य उससे बन पड़े। युवावस्था का महत्त्वपूर्ण भाग गंगावतरण के पराक्रम में लगाकर भगीरथ ने खोया कुछ नहीं, पाया बहुत कुछ। शाप पीड़ित पूर्वजों को सद्गति मिली, वे स्वयं यशस्वी हुए और सबसे बड़ी बात यह हुई कि उनके सत्प्रयत्नों से अवतरित गंगा द्वारा अब तक कोटि-कोटि प्राणियों ने अपनी क्षुधा, तृष्णा और अशान्ति मिटाते हुए समृद्धि और शान्ति का आनन्द लाभ किया।

भगीरथ आज हम लोगों के बीच मौजूद नहीं हैं। काल की कराल गति ने उन्हें भी नियत अवधि से अधिक यहाँ नहीं रहने दिया। फिर भी वे अमर हैं। भगवती भागीरथी अपने कल-कल नाद में उस महा तपस्वी के पुरुषार्थ का निरन्तर गुणगान करती रहती हैं। जीवन ऐसे ही लोगों का धन्य है, यों वासना और तृष्णा के कीचड़ में कुलबुलाते हुए कीड़ों की तरह जिन्दगी तो सब लोग किसी तरह पूरी कर ही लेते हैं। -वाङ्मय क्र. 34 पृ. 4.225-226

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

8. गंगा का भौतिक परिचय

गंगा का भौतिक परिचय भी कम महत्त्व का नहीं। वह अनेक नदियों का सहयोग अपने में समन्वित कर सकने में सफल हुई है। एकाकी सत्ता कितनी ही समर्थ क्यों न हो, वह नगण्य, दुर्बल और स्वल्प प्रयोजन पूरा कर सकने में ही समर्थ हो सकेगी। बड़े कार्य समन्वय से ही सम्भव होते हैं। गंगा एक पवित्र नदी है। उसका गौरव इस बात में भी है कि उसने अपने में एक बड़ा परिवार घुलाया और आत्मसात् किया है। यही कारण है कि उसका विस्तार वैभव इतने बड़े क्षेत्र को जल सुविधा देते हुए भी घटा नहीं, वरन् बढ़ता ही गया है। बंगाल में पहुँचते-पहुँचते उसकी अनेक धाराएँ हो गयी हैं और वे सभी जल राशि से सदा भरी-पूरी रहती हैं।

समुद्र तल से 13800 फुट की ऊँचाई पर अवस्थित गंगोत्री से निकलकर 1557 मील (लगभग 2525 किमी.) की यात्रा करती हुई गंगा अनंत सागर में विलीन होती है। इन दिनों जहाँ गंगोत्री तीर्थ है, वहाँ से 10 मील क्रमशः ऊपर गोमुख नामक स्थान से गंगा की धारा निकलती है, पर वह समूचा क्षेत्र गंगोत्री ग्लेशियर ही कहलाता है।

गंगा में कितनी ही छोटी-बड़ी नदियाँ मिलती हैं। इनमें से कितनी ही उल्लेखनीय हैं। यथा-नन्द प्रयाग में विष्णु गंगा, स्कंद प्रयाग में पिण्डर, रुद्र प्रयाग में मन्दाकिनी, देव प्रयाग में अलकनन्दा, प्रयाग में यमुना, आगे चलकर गोमती, घाघरा, सोन, गण्डक, कोसी, सरयू, ब्रह्मपुत्र जैसी बड़ी नदियाँ उसी में जा मिलती हैं। राम गंगा, बागमती, महानंदा आदि अन्य कई नदियाँ भी उसी में जा मिली हैं।

गंगा तट पर मैदानी इलाके में काशी और प्रयाग तीर्थ प्रसिद्ध हैं। हिमालय क्षेत्र में कई काशी और कई प्रयाग हैं। जैसे गुप्त काशी-उत्तर काशी। रुद्र प्रयाग, विष्णु प्रयाग, सोन प्रयाग, देव प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नन्द प्रयाग आदि।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा का कुल जल ग्रहण क्षेत्र 10 लाख 80 हजार वर्ग किलोमीटर है। गंगा नहरों से इन दिनों 6 लाख 95 हजार हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है। सिंचाई के अतिरिक्त गंगा की प्रवाह शक्ति का उपयोग करके भद्राबाद, मुहम्मदपुर और पथरी पर विशालकाय बिजलीघर बने हैं। वर्षा में गंगा का फालतू पानी जो व्यर्थ ही बहकर समुद्र में चला जाता है, उसे दक्षिण की कावेरी नदी में मिलाने की योजना विचाराधीन है। यदि वह नहर सम्भव हो सकी तो वह छः राज्यों को पानी देती हुई दक्षिण भारत की जल व्यवस्था में भी बहुत योगदान देगी।

धन्य हैं, हम भारतवासी जिन्हें गंगा जैसी सर्वगुण सम्पन्न माता के पयपान करने का अवसर मिलता है।

***

जरा विचार करो यदि गंगा रूठ गयी तो क्या होगा ?

* रेगिस्तानी होगी 10.80 लाख हेक्टेयर भूमि।
* 48 करोड़ भारतवासी तरसेंगे बूँद-बूँद को और होंगे असमय काल-कवलित।
* ऋतुओं का चक्र पलट जायेगा।
* भूख से तड़पेंगे भारतवासी।
* कैसे देंगे सत्य की दुहाई, कैसे लेंगे गंगा जल की शपथ।
* श्मशान होगा आधा देश।
* कृषि, उद्योग, पशुपालन, व्यापार का होगा दिवालिया।
* मरते को अंतिम समय में नहीं उपलब्ध होगा तुलसी दल - गंगा जल, कैसे होगी मुक्ति।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड- 2

निर्मल गंगा जन अभियान

1. निर्मल गंगा जन अभियान- एक दृष्टि
2. जन-जन की भागीदारी क्यों ? कैसे ?
3. निर्मल गंगा दीपयज्ञ
4. आद्यगुरु शंकराचार्य विरचित श्री गंगा स्तोत्रम्
5. ॐ श्री गंगा (सुरसरि) चालीसा
6. निर्मल गंगा अभियान-गीत
7. निर्मल गंगा - नारे एवं जयघोष
8. जल के विषय मे रोचक जानकारी
9. गंगा की सहायक नदिर्या एवं उनका प्रबंधन
10. निर्मल गंगा मंत्र
11. विनम्र सुझाव
12. हमारे सात आंदोलन
13. युग निर्माण योजना एक परिचय
14. हमारे प्रमुख संस्थान
15. समाचारों में हमारा अभियान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1. निर्मल गंगा जन अभियान एक दृष्टि

गंगा महिमा- गंगा हमारी जीवन धारा और धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म का पवित्र प्रवाह है। देवत्व की गरिमा का गान है गंगा। भारती के हृदय से संचारित प्राणदायक रक्त का प्रवाह है। यह जल धार नहीं, संस्कृति का पावन संचार है। गंगा अपने आँचल में समेटे है, आधे से अधिक भारत को। मन में देवत्व, घरों में संस्कृति और खेतों में फसलों को सींचती, अन्न उपजाती, सागर को गौरव प्रदान करती है। देवात्मा हिमालय, साक्षात् शिव की जटाओं से धरती पर आई सुरसरि भगवती गंगा, देव संस्कृति के उद्गम और विकास की साक्षी है। इसने सांस्कृतिक विकास के अनन्त उतार-चढ़ाव देखे हैं। विजय और पराजय की हर लहर की दर्शक रही हैं ये भगवती और अपने बच्चों का आर्तनाद इसने सुना है। बुद्ध के धर्म चक्र से लेकर वर्तमान वैज्ञानिक युग के आगमन तक के हर उत्थान-पतन की मौन गवाह रही हैं और अपनी संतान का अपने आँचल में आश्रय देती रही है। ऋषियों-देवताओं का संदेश ले पहाड़ों, चट्टानों को काटती हुई, दुर्गम बाधाओं को पार करती हुई, जन-जन का कल्याण करती सागर में समा जाती हैं।

(1) भौगौलिक संदर्भ- गंगा के तटीय नगरों में प्राचीन काल से ही धर्म, भाषा, सभ्यता, संस्कृति, कला, संगीत, दर्शन, शिक्षा आदि का विशेष विकास हुआ है। गोमुख, गंगोत्री, देव प्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज (त्रिवेणी संगम), बनारस, कन्नौज, बंग भूमि आदि सभी पवित्र तीर्थ एवं प्रमुख नगर इसी का आश्रय-सान्निध्य पाते रहे हैं।

(2) वैज्ञानिक संदर्भ-सुरसरि गंगा में कभी न सड़ने वाला अन्तरिक्षीय - मरीचि तत्त्व पाया जाता है। इसके जल में अनेक रोगों के कीटाणुओं को विनष्ट करने की क्षमता भरी पड़ी है। फ्रांस आदि देशों में डिस्टिल किया हुआ गंगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल अनेक नामों से औषधियों की भाँति प्रयोग किया जाता है। इसके प्रवाहित जल में पाये जाने वाला कालीफेज बैक्टीरिया मन को धोकर पवित्र बनाता है।

(3) आध्यात्मिक संदर्भ- माँ गंगा के निर्मल सान्निध्य मात्र से अनेकों साधकों-सिद्धों के अन्तर्हृदय में पावन तरंगें भरने लगती हैं। इसीलिए तो अनेकों साधकों ने इसी के किनारे बसना पसंद किया और उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ भी पायीं। आध्यात्मिक दृष्टि से गंगा अध्यात्मवादियों का सिद्ध क्षेत्र रही है। आर्ष ग्रन्थों जैसे वेदों, पुराणों, उपनिषदों, महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रन्थों में गंगा की मुक्त कण्ठ से महिमा गायी गयी है। इसके पावन तटों पर ही ऋषियों, मुनियों, अवतारों, महामानवों ने विशिष्ट तप संपादित किये हैं। भारत के सभी जल स्रोतों को गंगा माना जाता है, जो इसके अपरिमित महत्त्व को दर्शाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(4) आर्थिक संदर्भ- आर्थिक दृष्टि से गंगा हमारे देश की जीवन धारा है। 48 करोड़ जनता को अपने आँचल में समेटे है। गंगा अपने बेसिन में बसे 11 राज्यों के 10.80 लाख वर्ग किमी. को अपने जल से पोषण-सिंचन करती हुई श्री-सम्पन्नता प्रदान करती है। गंगा के बेसिन में गंगा जल का उपयोग करते हुए अनेकों की संख्या में लघु कुटीर उद्योग एवं बड़े उद्योग भी विकसित हुए हैं। गंगा पर स्थापित अनेक जल विद्युत परियोजनाएँ हजारों मेगावाट विद्युत का उत्पादन कर रही हैं।

(5) सांस्कृतिक संदर्भ- गंगा का महत्त्व सभी वेदों, पुराणों, उपनिषद् ग्रन्थों, महाभारत, रामायण आदि शास्त्रों में अनेक स्थानों पर अभिव्यक्त हुआ है। इसके तट पर महर्षि वसिष्ठ, भगवान् राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि अनेक तपस्वियों ने अपने विशिष्ट तप सम्पादित किये हैं।

(6) जैव विविधता- पृथ्वी पर जितने नदी क्षेत्र हैं, उनमें सबसे अधिक लोग गंगा क्षेत्र में निवास करते हैं। 100 में से 43 भारतीय इस क्षेत्र में निवास करते हैं। गंगा के इस विचित्र परिपथ पर जीवों और वनस्पतियों की अतुलनीय प्रजातियाँ हैं। इसके परिपथ पर 101 पक्षियों की प्रजातियाँ, 25 प्रकार के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घड़ियाल एवं मगरमच्छ, 382 प्रकार की मछलियाँ पायी जाती हैं। गंगा तटवर्ती क्षेत्र अपने शान्त व अनुकूल पर्यावरण के कारण जैव विविधता का भण्डार है। इसमें 35 सरीसृप तथा इसके तट पर 42 स्तनधारी प्रजातियाँ पायी जाती हैं। डॉल्फिन की दो प्रजातियाँ गंगा और इरावदी पायी जाती हैं। गंगा में पायी जाने वाली शार्क के प्रति विश्व के वैज्ञानिकों की काफी रुचि है। सबसे बड़ा डेल्टा सुन्दरवन क्षेत्र विश्व की बहुत सी वनस्पतियों और बंगाल टाइगर का गृह क्षेत्र है। गंगा प्रतिवर्ष 73 करोड़ टन मिट्टी बहाती है, जिससे इसके डेल्टा में बड़े मैंग्रोव वन का निर्माण हुआ है। वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फण्ड (WWF) के अनुमान के अनुसार सन् 2013 में गंगा नदी में 1800 डॉल्फिन से भी कम जीवित बची हैं। प्रदूषण की चपेट में ये मारी जा रही हैं या दुर्बल होती जा रही हैं। जल जीवों की अनेकों प्रजातियाँ अब तक पूरी तरह से लुप्त हो चुकी हैं। न्यूनतम जल प्रवाह एवं प्रदूषण के चलते जैव विविधता संकट में है।

अविलम्ब निर्णय करना होगा, माँ मानते हैं या कूड़े-कचरे का घर। पोषण चाहते हैं या शोषण कर उसका अस्तित्व मिटा देना चाहते हैं। भीषण संकट के इस दौर से गुजरते विश्व में गंगा से ये दुर्व्यवहार सामूहिक आत्महत्या के समान जान पड़ता है। गंगा के प्रति अनास्था के इस दौर में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की प्रेरणा से अखिल विश्व गायत्री परिवार ने जन-जन के सहयोग से प्रारम्भ किया है "**निर्मल गंगा जन अभियान**"।

गोमुख से गंगा सागर तक अभियान का विवरण निम्नानुसार है-

माँ गंगा के पाँच अंचल-

अभियान की सफलता हेतु सम्पूर्ण 2525 किमी. लम्बे प्रवाह को पाँच अंचलों में विभक्त किया गया है-

1. भागीरथी अंचल- गोमुख से हरिद्वार तक
2. विश्वामित्र अंचल- हरिद्वार से कानपुर तक
3. भारद्वाज अंचल- कानपुर से बनारस तक
4. गौतम अंचल- बनारस से सुल्तानगंज तक
5. रामकृष्ण अंचल- सुल्तानगंज से गंगासागर तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभियान के पाँच चरण- अभियान की विविधता एवं निरंतरता को ध्यान में रखते हुए पाँच चरण तय किये गये हैं।

प्रथम - सर्वेक्षण- गोमुख से गंगा सागर तक विस्तृत सर्वेक्षण।

द्वितीय - ''गंगा संवाद'' (गंगा की कथा-व्यथा के आयोजन) तटीय नगरों-ग्रामों में आयोजन।

तृतीय - गंगा अमृत कुंभ जन जागरण यात्रायें (जन-जागरण, स्वच्छता, हरी चूनर-वृक्षारोपण हेतु पद यात्रायें)।

चतुर्थ - सहयोग आन्दोलन- नियम-कानून पालन हेतु जन सहयोग, जन जागरण।

पंचम - दस वर्ष तक शुद्धि एवं संरक्षण हेतु निरंतर प्रयास-पुरुषार्थ।

पाँच प्रयास - पाँच परिणाम

1. **जल शुद्धि - निर्मल गंगाजल**-जन-जन की भागीदारी से जल की निर्मलता बनाये रखने के लिए प्रेरणा देना।
   1. निर्माल्य (बासी फूल) विसर्जन पर रोक, डस्टबिन प्रयोग का प्रचलन अभ्यास में लाना।
   2. साबुन-शैम्पू का प्रयोग न होने देना।
   3. प्लॉस्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों के विसर्जन पर रोक एवं इस हेतु तटों-घाटों के समीप ''गंगा कुण्डों'' का निर्माण।
   4. शहर, आश्रम, गाँवों के सीवेज मिलने पर रोक, सोक पिट ''सोख्ता गड्ढा'' एवं सैटलिंग टैंक का निर्माण।
   5. उद्योगों का प्रदूषित पानी गंगा में मिलने पर सरकारी रोक हेतु आन्दोलन।
   6. जल परीक्षण कर प्रदूषण से जनता को अवगत कराना। जन-जागरण, फिल्म प्रदर्शन, पोस्टर, दीवार लेखन, पत्रक वितरण, प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, जन सभा। पर्यावरण, गंगा सेवक सेना का गठन।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. तट शुद्धि - हरे-भरे स्वच्छ तट-तटों/घाटों की नियमित स्वच्छता, शौचालयों का निर्माण, तथा तटों पर सघन वृक्षारोपण का क्रम जन भागीदारी से करना।

1. तटों पर मल-मूत्र विसर्जन पर रोक एवं सुलभ शौचालयों का निर्माण (सरकारी, संस्थागत सहयोग से)
2. नियमित स्वच्छता का प्रबंध
3. घाटों पर स्वच्छता कार्यक्रम
4. तटों की मरम्मत
5. तटों पर वृक्षारोपण- त्रिवेणी, पंचवटी का तटीय मन्दिरों में रोपण
6. हरी चूनर चढ़ाना (तट पर सघन वृक्षारोपण)
7. शवदाह के उचित स्थान तट से दूरी पर
8. गंगा की गोद में निर्माण/खनन पर रोक
9. पॉलिथिन एवं नशा निषेध
10. डस्टबिन/वर्मी कल्चर के पिट निर्माण
11. तटों को पानी से धोने के स्थान पर झाड़ू एवं पोंछे का प्रयोग
12. तीर्थ पुरोहितों से शुद्धि हेतु अपील, तीर्थ पुरोहितों की विशेष भागीदारी, तीर्थ पुरोहितों को संदेशवाहक, तीर्थ रक्षक बनाना
13. गंगा स्वयंसेवी सेना - तटों की सुरक्षा-सेवा, रखरखाव।

3. तटीय ग्राम शुद्धि - आदर्श ग्राम तीर्थ-तटीय ग्रामों में गोवंश आधारित कृषि का पुनर्जीवन तथा स्वच्छ, स्वस्थ, व्यसनमुक्त, सुशिक्षित, स्वावलम्बी ग्राम निर्माण हेतु प्रयास।

1. रासायनिक खेती का हतोत्साहन
2. गौपालन एवं गौ आधारित खेती को बढ़ावा
3. निस्तार के पानी का प्रबंध, सोक पिट (सोख्ता गड्ढा) तैयार करना
4. तटों पर वृक्षारोपण
5. व्यसनमुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, सुसंस्कारी, स्वावलम्बी ग्राम के निर्माण हेतु प्रशिक्षण
6. घूरे (कचरे के ढेर) से सोना बनाओ, काम को प्रोत्साहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. प्रदर्शनी एवं फिल्म प्रदर्शन ग्रामों में
8. मण्डलों का निर्माण।

4. **सच्चा तीर्थ सेवन - तीर्थ गरिमा की रक्षा** - हजारों श्रद्धावान् तीर्थयात्रियों को इस अभियान से जोड़ने और उन्हें इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में भागीदार बनाने का प्रयास।
   1. यात्रियों के बीच पर्व-त्योहारों पर पत्रक, माइक सम्पर्क द्वारा जन-जागरण
   2. स्नान तिथियों पर जन-जागरण एवं दूसरे दिन सफाई
   3. अभियान में तीर्थ यात्रियों का सहयोग प्राप्त करना
   4. व्यसनमुक्ति एवं दीवार लेखन में सहयोग
   5. तीर्थ सेवन क्यों और कैसे, पर सेमीनार एवं गोष्ठियों का आयोजन करना

5. **दूषित जल स्त्रोत प्रबन्धन - स्वच्छ सदा नीरा गंगा**-
   1. सहायक नदियों/जल स्त्रोतों को स्वच्छ बनाये बिना गंगा को पूर्णरूपेण निर्मल नहीं बनाया जा सकता, अतः गंगा की सहायक नदियों पर भी छोटे-छोटे अभियानों का क्षेत्रीय स्तर पर आयोजन
   2. भागीरथी जलाभिषेक के माध्यम से समीपवर्ती/सहायक जल स्त्रोतों की शुद्धि
   3. सूचना के अधिकार एवं जनहित याचिका माध्यम का उपयोग
   4. सत्याग्रह करना।

उक्त सभी प्रयासों को 10 वर्ष तक श्रद्धा भरी तत्परता के साथ चालू रखना, ताकि ये सब कार्य जन-जीवन के स्वभाव में आ जायें।

> "गंगा भारत के सुस्मरणीय भूतकाल की प्रतीक है, जो वर्तमान तक प्रवाहित होती रही है और भविष्य के समुद्र की तरफ निरंतर प्रवहमान है।"
>
> -जवाहर लाल नेहरू(भूतपूर्व प्रधानमंत्री)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. जन-जन की भागीदारी क्यों ? कैसे ?

सभ्यता की जननी से असभ्य व्यवहार

- लाखों वर्षों से प्रवाहित अविरल प्रवाह को जगह-जगह छोटे-बड़े बाँध बनाकर अवरुद्ध कर दिया हमने।
- संसार के पवित्रतम जल में मल-मूत्र डालकर अपवित्र कर डाला हमने।
- मोक्षदायिनी पावन धारा को मल-मूत्र वाहिनी बना डाला हमने।
- अमृतमयी धारा में उद्योगों का जहरीला रासायनिक प्रवाहित कर विषमय बनाया है हमने।
- अंतरिक्ष के मरीचि (प्रकाशरूप) जल में अस्पतालों का रेडियो धर्मी कचरा डाल प्रदूषित किया है हमने।
- 21 वीं शताब्दी के वैज्ञानिक आधुनिक युग में अभी भी तीज-त्यौहारों की उलझन में फँसे हम लोग माँ पर संकट खड़े कर रहे हैं।
- आध्यात्मिक प्रवाह रूपी गंगा पर मूढ़ मान्यताओं, अंध परम्पराओं, अंध विश्वासों का कहर है। बिना जले, अधजले शव विसर्जन, लाखों की संख्या में प्लास्टर ऑफ पेरिस की रासायनिक रंगों-पेण्ट से रंगी मूर्तियों का विसर्जन, घर की बासी पूजन सामग्री डालकर संकट खड़े कर रहे हैं हम।
- साक्षात् देवी रूप गंगा में निर्माल्य (बासी फूल) डाल उसका अपमान कर रहे हैं हम।
- तट पर मल-मूत्र त्याग कर कूड़ा-कचरा, पॉलीथीन फेंककर तीर्थ की मर्यादा को भंग कर रहे हैं हम।
- रेत, मिट्टी, पत्थर आदि का असंयमित विवेकहीन दोहन कर नदी के जीवन पर संकट खड़े किये हैं हमने।
- बिजली उत्पादन, सिंचाई हेतु गंगा जल का अवैज्ञानिक दोहन एवं न्यूनतम प्रवाह के अभाव में सदानीरा गंगा जल विहीन हो रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके आँचल में पलने वाली जैव विविधता, जलीय जीवन पर संकट उत्पन्न किये हैं हमने।

- तटीय प्रदेशों के हरे-भरे वनों को नष्ट कर हमने छीना है माँ का आँचल।
- मुक्तिदायिनी भवतारिणी गंगा आज मानवी कुचक्रों में फँसी व्यथित हो तड़प रही है।
- अपने ही पुत्रों द्वारा सताई हुई गंगा आज विकल वेदना से कराह रही है। अभी भी समय है जागो, गंगा पुत्रों जागो, माँ के करुण क्रन्दन को सुनो।

प्रदूषण तरह-तरह के -

एक चीनी यात्री ने अपने यात्रा वृतान्त में लिखा था कि भारत की नदियों में दूध बहता है। यह कथन भारतीय नदियों के निर्मल और पुष्टिदायक स्वरूप का प्रमाण है, परन्तु विगत वर्षों में हमने इन सरिताओं को दूध तो क्या जल बहाने लायक भी नहीं छोड़ा? आज-कल नदियाँ मल-मूत्र वाहिनी बनी हुई हैं। समझदारों की इस नासमझी पर हैरानी होती है। प्रदूषण की चपेट में तड़पती माँ गंगा एवं उसकी सहायक नदियों में प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं-

1. शहरों एवं नगरों का अनुपचारित सीवेज- 5528 MLD (2011) या कहें 1 टैंकर सीवेज प्रत्येक 23 मीटर नदी में प्रतिदिन डाला जाता है।
2. औद्योगिक अपशिष्ट- 3400 MLD
3. रासायनिक खाद- 4.8 लाख टन प्रतिवर्ष
4. कीटनाशक-1300 टन प्रतिवर्ष
5. खतरनाक कचरा- 1000 टन एवं
6. फ्लाय ऐश- 4.25 लाख टन प्रतिवर्ष
7. कचरा (गार्बेज) - 80000 टन
8. प्लॉस्टिक - 20000 टन प्रतिवर्ष
9. अस्पतालों का रेडियो धर्मी कचरा
10. अन्य परम्परायें- पर्व स्नान, निर्माल्य (बासी फूल), पर्व-त्यौहार, वाटर स्पोर्ट, शवों को प्रवाहित करना, पशुओं, वाहनों, कपड़ों की धुलाई, मूर्ति विसर्जन, उत्खनन, अतिक्रमण-भवन। इसमें शहरी गंदे नालों से लगभग 70 % एवं उद्योगों से 30 % प्रदूषण होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाव-भरा आह्वान

आज-कल नदियों के साथ हमारा व्यवहार विपरीत हो गया है। नदियों को कहते हम माँ हैं, पर पुत्रवत् व्यवहार के स्थान पर शत्रुवत् व्यवहार करते दिखते हैं। परिणाम सामने है, प्रदूषित होती दम तोड़ती हमारी नदियाँ। निर्मल गंगा जन अभियान के अंतर्गत ऐसे न करने योग्य कार्यों को चिह्नित किया गया तथा उनके विकल्प भी तलाशे और सुझाये जा रहे हैं। हमारे शास्त्रों में अनेक जगह ऋषियों ने नदी माता के प्रति किये जाने वाले आचारों का निर्देश किया है। साथ ही न करने योग्य कृत्यों का भी स्पष्ट उल्लेख किया है। गंगा दर्शन और स्नान हेतु पहुँचने वाले श्रद्धालु भावावेश में माता का आँचल गंदा करते, अनजाने में अमृतमय जल को विषैला करते और गंगा के जीवन पर संकट खड़ा करते दिखाई पड़ते हैं। स्कन्दपुराण में उल्लेख है-

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थ क्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थ क्षेत्रे कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति।।

अर्थात्-अन्य क्षेत्र में किये गये पापों का शमन तीर्थ क्षेत्र में हो जाता है, परन्तु तीर्थ क्षेत्र में किये गये पाप वज्र लेप जैसे, अर्थात् कभी न मिटने वाले होते हैं। अत: सोचें, समझें और उचित करें ।

सोचो ! समझो! और उचित करो!!

न करने योग्य -

- घर की कचरा युक्त पूजन सामग्री, बासी फूल गंगा में न डालें ।
- तट पर पॉलीथीन का प्रयोग न करें ।
- घाट पर नहाने एवं कपड़े धोने का साबुन प्रयोग न करें।
- गुटका एवं शेम्पू पाउच न फेंके ।
- तटों और घाटों पर मल-मूत्र का त्याग न करें ।
- प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी एवं जहरीले रंगों से रँगी प्रतिमाओं का विसर्जन न करें ।
- तटीय खेतों में रासायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग न करें ।
- मल-मूत्र युक्त पानी गंगा में प्रवाहित न होने दें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- शहर का गंदा नाला एवं उद्योगों का गंदा-जहरीला पानी प्रवाहित होने से रोकें।
- प्लास्टिक के दोनों में दीपदान न करें।
- मृत पशु, शव, अधजले शव गंगा में प्रवाहित न करें।

करने योग्य-

- घर की पूजन सामग्री, बासी फूल एवं अन्य सामग्री की खाद बनाएँ ।
- पॉलीथीन के स्थान पर कागज के बैग उपयोग करें ।
- मल-मूत्र हेतु शौचालयों का प्रयोग करें ।
- पर्यावरण अनुकूल मूर्तियों की ही स्थापना करें ।
- रासायनिक खाद, कीटनाशक के स्थान पर गोबर, केंचुआ खाद एवं गौमूत्र से बने कीटनाशक का प्रयोग करें ।
- गंदे पानी के सोक पिट (सोख्ता गड्ढा) बनाएँ।
- अच्छा हो, आटे के दिये बनाकर घाट पर ही दीपदान करें, जल में न बहायें ।

अगर अभी न चेते भाई - तो महँगी पड़ेगी माँ से जुदाई

गंगा दिनों-दिन प्रदूषित होती जा रही है। यदि यही दशा रही तो वह दिन दूर नहीं जब गंगा की स्थिति भी यमुना जैसी हो जाएगी और गंगा से पोषण पाने वाले नगरों के लोग शुद्ध जल के लिये उसी प्रकार तरसेंगे जैसे पौराणिक कथाओं में सगर पुत्रों का उल्लेख मिलता है। उनके उद्धार के लिये ऋषि भगीरथ ने कठोर तप-पुरुषार्थ किया था।

आओ हम सब एक बार पुनः भागीरथी प्रयास करें और पुण्यतोया गंगा की गौरव गरिमा को पुनर्स्थापित करें। माँ भारती के पुत्रों के पुरुषार्थ, संकल्प एवं मोक्ष की आधार माँ भागीरथी गंगा पर आये सामयिक संकटों के निवारण हेतु ''निर्मल गंगा जन अभियान'' में भागीदारी हेतु आपको सादर आमंत्रण है। गाँव-गाँव, नगर-नगर में गंगा सेवक मण्डल का निर्माण कर इस कार्य की निरंतरता बनाये रखें तो हमारा यह पवित्र उद्देश्य अवश्य ही पूर्ण होगा एवं हम अपनी आने वाली पीढ़ी को विरासत में फिर से वही पतित पावनी गंगा भेंट कर सकेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा प्रज्ञा मण्डल का स्वरूप एवं गठन

जो भी परिजन अखिल विश्व गायत्री परिवार के निर्मल गंगा अभियान में आस्था, श्रद्धा, निष्ठा एवं रुचि रखते हों, वे अपने-अपने मुहल्ले या ग्राम में आस-पास के किसी समर्पित परिजन को बुलाकर निर्मल गंगा दीपयज्ञ सम्पन्न करायें। अपने न्यूनतम चार साथी तलाशें, उनका समर्थन एवं सहयोग प्राप्त करें। उन चार साथियों की तलाश कैसे करें? वे लोग जो पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रभावित हों, अथवा माँ गंगा के प्रति अपने कर्तव्य पूरे करने के लिए उदारतापूर्वक आपको किसी प्रकार का सहयोग देते हों, उन्हें जिम्मेदार मानें। पाँच से पच्चीस सदस्यों तक का विस्तार करें।

उद्देश्य- मण्डल के नैष्ठिक सदस्यों/बहिनों द्वारा जन-सम्पर्क के माध्यम से अपने क्षेत्र के घर-घर में माँ गंगा के प्रति सच्ची श्रद्धा जागृत करने और उसे प्रदूषित होने से बचाने के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक संकल्प जगाने का प्रयास किया जायेगा। साथ ही देव-संस्कृति के सूत्रों को स्थापित करने का उत्तरदायित्व सँभालना होगा। अपने ग्राम को तीर्थ बनाने हेतु आदर्श ग्राम योजना को लागू करना होगा।

सदस्यों से अपेक्षा-

- साप्ताहिक गोष्ठी-सत्संग में अवश्य उपस्थित होंगे।
- माँ गंगा का नित्य ध्यान-दर्शन करें। उपासना में एक माला गायत्री मंत्र का जप करें।
- गंगाष्टक पाठ कर तुलसी के गमले में अर्घ्य प्रदान करें।
- घर-घर माँ गंगा का संदेश पहुँचाने का क्रम बनायें।
- व्यक्तिगत रूप से माँ गंगा के जल की अशुद्धि का कारण न बनने का संकल्प करें।

मण्डल की साप्ताहिक गतिविधियाँ-

- तट/जल स्वच्छता हेतु सामूहिक श्रमदान करें।
- नये लोगों को संकल्पों से जोड़ने का क्रम बनायें।
- पूर्णिमा पर दीपयज्ञ/दीपदान का आयोजन करें।

स्थायी गतिविधियाँ-

- घर-घर में गंगा कलश एवं देव स्थापना का क्रम बनायें।
- ग्राम स्वच्छता के प्रति जागरूकता का क्रम बनायें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- गाँव में बाल संस्कार शालायें चलायें।
- व्यसनमुक्त ग्राम हेतु नियमित प्रयास करें।
- गौ आधारित कृषि स्वयं अपनायें और दूसरों को प्रेरणा दें।
- तटों/घाटों पर वृक्षारोपण करें।

आप भी अपने गाँव, शहर में माँ गंगा के प्रति श्रद्धा, आस्था रखने वाले परिजनों के सहयोग से गंगा प्रज्ञा मंडल का गठन करें। अपने गाँव को आदर्श गाँव बनाने तथा माँ गंगा की पीड़ा को कम करने के लिये मिल-जुल कर प्रयास करें। मण्डल के उद्देश्य, कार्य एवं पंजीयन का प्रारूप, पंजीयन पत्रक यहाँ दिया गया है।

गंगा प्रज्ञा मण्डल पंजीयन पत्रक

ग्राम ..... ब्लॉक ..... तहसील ..... जिला .....

1. मण्डल प्रभारी का नाम ..... पिता का नाम .....

2. पत्र-व्यवहार का पता ....

पिन कोड- ..... फोन नं..... 3. जन्म तिथि- .....

विवाह तिथि- ..... 4. शैक्षणिक योग्यता- ..... 5.व्यवसाय-

..... 6. किस कार्य में विशेष रुचि रखते हैं ? ....

7. क्या गायत्री परिवार से जुड़े हैं ? .....किसी अन्य संस्था से संबंध रखते हों तो उसका नाम - ....

8. नजदीकी गायत्री शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ का पता- .....

.....

हस्ताक्षर प्रभारी.....

मण्डल के अन्य सदस्यों की जानकारी के लिए प्रारूप-

क्र..... नाम .....जन्म तिथि .....फोन नं.....

शैक्षणिक योग्यता .....पता.....

.....विशेष अभिरुचि.....

.....

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. निर्मल गंगा दीपयज्ञ

यह दीपयज्ञ बहुत ही आसान है, सहज है, कुछ ही दीपकों की व्यवस्था करके सम्पन्न कराया जा सकता है। इसके लिए हर कोई अपने-अपने घर से पाँच-पाँच दीपक एक थाली या प्लेट में ला सकते हैं। अथवा अकेले ही लगभग 24 दीपकों की व्यवस्था दो थालियों में की जा सकती है। थोड़ी सी अगरबत्ती, फूल, चावल, कुमकुम और कलावा-सूत्र और थोड़ा सा प्रसाद या केले मँगाकर ये दीपयज्ञ अति अल्प खर्च से ही सहज ही सम्पन्न कराया जा सकता है। इस दीपयज्ञ में जो परिजन उत्साहपूर्वक आगे आयें, परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों से प्रभावित होते हों, उदारतापूर्वक वे दीपयज्ञ में किसी भी प्रकार की सेवा-सहायता करते हों, ऐसे चार-पाँच साथियों को लेकर उन्हें गंगा प्रज्ञा मण्डल का सदस्य बनाया जाये। उनके गंगा प्रज्ञा मण्डल के पंजीयन हेतु नाम, जन्मतिथि एवं पते शान्तिकुञ्ज में भेजकर पंजीयन क्रमांक वहाँ से लिया जा सकता है। आगे बढ़कर वे पाँचों साथी अपने-अपने चार-चार साथी अन्य तलाशकर पाँच से पच्चीस का विस्तार करते चले जायेंगे। इस दीपयज्ञ में पवित्रीकरण से लेकर गुरु पूजनम् तक युग यज्ञ पद्धति से प्रक्रिया चलेगी, इसके आगे कर्मकाण्ड इस प्रकार होगा।

माँ गंगा आवाहनम्-

कलि-कल्मषों का नाश करने में समर्थ, त्रिदेवों की प्रिय माता गंगा का भाव-पूर्वक आवाहन है। वे हमारे दीपयज्ञ में पवित्रता का दिव्य संचार करने के लिए पधारें।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी, हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके॥ -यजु० 21.1

पापनाशिनी मकरवाहिनी, तोय कुम्भधारी।
हे गंगा माँ पुण्यदायिनी, जनमंगलकारी॥
यह संसार पवित्र करो, जन मण्डल में विचरो।
दीपयज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो॥ जन-कल्याण करो॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ एह्येहि गंगे दुरितौघनाशिनि, झषाधिरूढे उदकुम्भहस्ते।
श्रीविष्णुपादाम्बुज सम्भवे त्वं, पूजां गृहीतुं शुभदे नमस्ते॥
ॐ गंगायै नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

षोडश नाम स्मरण

आवाहन के उपरांत हर हर गंगे दोहराते हुए माँ गंगा के षोडश नामों का उच्चारण कर स्तुति करें -

1. मातु जाह्नवी-हर हर गंगे।
2. त्रिपथ गामिनी-हर हर गंगे।
3. त्रिभुवन तारिणी-हर हर गंगे।
4. कलुष निवारिणी-हर हर गंगे।
5. शाप निवारिणी-हर हर गंगे।
6. त्रिताप हारिणी-हर हर गंगे।
7. नरक निवारिणी- हर हर गंगे।
8. मोक्ष दायिनी-हर हर गंगे।
9. पाप नाशिनी-हर हर गंगे।
10. लोक कल्याणी-हर हर गंगे।
11. सरिता सुरसरि-हर हर गंगे।
12. ब्रह्म कमण्डलु वासिनी गंगे-हर हर गंगे।
13. शंकर जटानिवासिनी गंगे-हर हर गंगे।
14. विष्णु पाद सम्भूते गंगे-हर हर गंगे।
15. शंकर मौलि विहारिणी गंगे-हर हर गंगे।
16. पारावार विहारिणी गंगे-हर हर गंगे।

इसके उपरान्त सर्वदेव-नमस्कार एवं पंचोपचार पूजन सम्पन्न कराकर अग्नि स्थापन, गायत्री स्तवन, एवं गायत्री मंत्राहुति के बाद माँ गंगा को आहुतियाँ प्रदान करें।

गंगा मंत्राहुतिः- माँ गंगा हम सबमें पवित्रता के दिव्य भावों को संचारित करें, ऐसी प्रार्थना के साथ उन्हें ये विशेष आहुतियाँ प्रदान करें-

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी, हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके स्वाहो।
इदं गंगायै, इदं न मम॥ -यजु० 21.1

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके उपरान्त महामृत्युंजय मंत्राहुतिः एवं पूर्णाहुतिः प्रदान करें। वैदिक मंत्र से आहुति के बाद माँ गंगा की आरती करें।

हमारा निजी संकल्प (माँ गंगा की सौगन्ध)

(प्रत्येक नदी की रक्षा हमारा कर्तव्य)

आओ संकल्प करें और माँ गंगा की शपथ लें कि ...हम अपने द्वारा नगर, ग्राम, संस्थान, आश्रम से गंगा को प्रदूषित नहीं करेंगे तथा दूसरों को भी प्रदूषित करने से रोकेंगे।

श्री गंगा जी की विशिष्ट आरती

आरती त्रिपथगामिनी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की।
प्रकट भईं विष्णु चरण से आप, मिटाने जग के सारे ताप।
हर रही भक्तों के संताप, लुटाती प्यार, अमृत समधार।
वन्दना अभयदायिनी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की॥
कृपाकर हिमगिरि में उतरीं, प्रकट हो गोमुख से उभरीं।
जगतहित भूतल पर विचरीं, जगातीं भक्ति, श्रेष्ठ तपशक्ति।
कथा यह अमृतवाहिनी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की॥
तटों पर विकसित तीर्थ अनेक, जगाते अद्‌भुत ज्ञान विवेक।
भावना शुद्ध, कर्मशुभ नेक, पुण्य की खान, सृष्टि की शान,
प्रतिष्ठा पापनाशिनी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की॥
कर रहे ऋषि मुनि महिमा गान, तुम्हारी करुणा अमित-महान्।
लुटाती भक्तों को अनुदान, जगातीं भाग्य-विमल वैराग्य,
कीर्ति शुभ सिद्धि दायिनी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की॥
कृपाकर दो ऐसा वरदान, बनें सब साधक श्रेष्ठ महान्।
बढ़ायें मानवता का मान, भीरूता भगे-वीरता जगे।
विजय हो तरन-तारिणी की, कि गंगा मोक्षदायिनी की॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. आद्यगुरु शंकराचार्य विरचित श्री गंगा स्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे।
शंकर मौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले॥ 1॥

भागीरथि सुखदायिनि मातः तव जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं ाहि कृपामयि मामज्ञानम्।
हरिपदपाद्य तरंगिणि गंगे हिमविधुमुक्ता धवलतरंगे॥ 2॥

दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम्।
तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गंगे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः।
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे खण्डितगिरिवर मण्डित भंगे॥ 3॥

भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवन धन्ये।
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावारविहारिणि गंगे विमुखयुवतिकृत तरलापांगे॥ 4॥

तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गंगे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे।
पुनरसदंगे पुण्यतरंगे जय जय जाह्नवि करुणापांगे॥ 5॥

इन्द्रमुकुटमणिराजित चरणे सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये।
रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे॥
अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातरवन्द्ये॥ 6॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥
वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरदः क्षीणः ।
अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ॥ 7 ॥

गंगास्तवमिममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥
येषां हृदये गंगाभक्तिः तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुराकान्ता पञ्झटिकाभिः परमानन्दकलित ललिताभिः ॥
गंगास्तोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विमलं सारम् ।
शंकर सेवक शंकर रचितं पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः ॥ 8 ॥

जय जय गंगे, जय हर गंगे । जय जय गंगे, जय हर गंगे ॥
जय जय गंगे, जय हर गंगे । जय जय गंगे, जय हर गंगे ॥ (2बार)

आद्यगुरु शंकराचार्य विरचित गंगास्तोत्र
(हिन्दी पद्यानुवाद)

भगवति-सुरसरि गंगामाता, त्रिभुवन पावनि जगविख्याता ।
शंकर जटाविहारिणि जय हो, तव चरणों में यह मन लय हो ॥
भागीरथि सुखदायिनि माते । वेद तुम्हारी महिमा गाते ।
गरिमा विदित न हमें तुम्हारी, जड़मति कर दो दूर हमारी ॥
हरि चरणोदकधारिणि माता, हिम शशि-मुक्ता सम जल मय हो ।
तव चरणों में यह मन लय हो ॥
दुष्कर्मों को दूर करो माँ, भवसागर से पार करो माँ ।
तव निर्मल जल जो पी लेता, सहज परमपद वो पा लेता ॥
गंगा भक्ति जिसे सध जाये, उसे न यम की शक्ति सताये ॥
पतितपावनि मातु जाह्नवि, हिमगिरि फोड़ बही निर्भय हो ॥
तव चरणों में यह मन लय हो ॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भीष्मजननि हे पतित-तारिणि, भागीरथी त्रिलोकपावनि।
कल्पलता जैसे फल देती, भक्तों की पीड़ा हर लेतीं॥
ज्यों नव युवती पति से मिलती, त्यों तव धारा सिन्धु विलय हो।
तव चरणों में यह मन लय हो॥

श्रद्धा से जो भक्त नहाते, पुनर्जन्म से वे बच जाते।
माता गंगे, नरकनिवारिणि, शुभ महिमामयि दोष विनाशिनि॥
भक्तों को पवित्र कर देतीं, माता तुम अति करुणामय हो।
तव चरणों में यह मन लय हो॥

इन्द्र झुकाते सिर चरणों में, शुभसुख भर देती भक्तों में।
रोग-शोक पापों को हर लो, कुमति कलाप दूर सब कर दो॥
सृष्टि-सार, शोभा धरती की, माँ तुम ही आश्रय भक्तों की।
स्वर्ग-भूमि में आनन्ददायिनि, माँ तुम अतिशय करुण हृदय हो॥
तव चरणों में यह मन लय हो॥

जो तेरे तट पर बस जाता, वह वैकुण्ठ सहज पा जाता।
तेरे जल में कमठ मीन बन, रहूँ किनारे क्षुद्र जीव बन॥
माँ के निकट रहूँ आजीवन, दूर न तुमसे रहूँ नृपति बन।
हे भुवनेश्वरि-पुण्यदायिनि, हे मुनि कन्या तुम श्री मय हो।
तव चरणों में यह मन लय हो॥

गंगा भक्ति जिसे सध जाती, सुखमय मुक्ति उसे मिल जाती।
मधुर रागमय गंगा-स्तुति, परमानन्द प्रदायिनि प्रस्तुति॥
शंकर-सेवक, शंकर विरचित, शुभ फल यह देती मन वांछित।
श्रद्धाभाव सहित जो गाये, उसका जीवन मंगलमय हो।
तव चरणों में यह मन लय हो॥

जय जय गंगे, जय हर गंगे॥ जय जय गंगे, जय हर गंगे॥
जय जय गंगे, जय हर गंगे॥ जय जय गंगे, जय हर गंगे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5. ॐ श्री गंगा (सुरसरि) चालीसा

दोहा

ब्रह्म कमण्डलुवासिनी, विष्णु चरण जल जात।
जटाशंकरी, जाह्नवी, भवतारिणि विख्यात।।
दिव्य सम्पदा दायिनी, माँ गंगा गुणधाम।
शोक निवारिणि मोक्षदा, शत-शत तुम्हें प्रणाम॥

चौपाई

जय माँ गंगे भवभय हारिणि। पापनाशिनी हे जगतारिणि॥ 1॥
विष्णुचरण निसृत जगपावनि। ब्रह्म कमण्डलु मध्य निवासिनि॥ 2॥
कीन्ह भगीरथ ऋषि तपभारी। द्रवित हुई माँ जग हितकारी॥ 3॥
प्राणिमात्र हित आशिष दीन्हा। प्रकटी मातु अनुग्रह कीन्हा॥ 4॥
शिवजी ने तव वेग सँवारा। हर्षित-मुदित हुआ जग सारा॥ 5॥
तुम शिवप्रिया सदा शिव करिणी। कीन्ही हरित, सुशोभित धारिणी॥ 6॥
शाप-विदग्ध सगर सुत तारे। अगणित जन करि कृपा उबारे॥ 7॥
गंगा नहि केवल जल धारा। मातृशक्ति साक्षात् उदारा॥ 8॥
वसुओं के हित प्रकटीं माता। लीला अनुपम जग विख्याता॥ 9॥
तिनहिं शाप से मुक्ति दिलाई। भीष्म जननि तव कथा सुहाई॥ 10॥
हिमगिरि से उपजी धारायें। सब ही श्रेष्ठ पुनीत कहायें॥ 11॥
उन सबमें अनुपम गंगामाँ। जीवन दायिनि प्रिय सुखधामा॥ 12॥
सुरसरि से मिल बहु धारायें। पावन विविध प्रयाग बनायें॥ 13॥
विश्वनाथ-शिव तव तटवासी। तीर्थ मोक्षप्रद सेवहि काशी॥ 14॥
गंगाजल है औषधि अविकल। अमृत रूप वह है मरीचि जल॥ 15॥
कायागत बहु रोग नसावहिं। मन के रोग शान्त हो जावहिं॥ 16॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नष्ट होंहिं अघ बहु भव रोगा। रचइ मोक्ष प्रद शुभ संयोगा ॥ 17॥
जिनकी रही भावना जैसी। मातु कृपा पायी तिन्ह तैसी ॥ 18॥
दर्शन हित कोउ करहि प्रयासा। कोऊ तट पर करहि निवासा॥ 19॥
करहि भक्तियुत सिञ्चन पाना। करि स्नान देहि बहु दाना॥ 20॥
सबके हृदय भाव अस रहईं। माता अवसि अनुग्रह करईं॥ 21॥
ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, योगी। परमारथी प्रपंच वियोगी॥ 22॥
विविध कामना रत संसारी। सब चाहहिं माँ कृपा तुम्हारी॥ 23॥
तव तट निकट यज्ञ-तप करहीं। तव आशीष मोद मन भरहीं॥ 24॥
काम, क्रोध, मद, मोह नसावहिं। सुख, संतोष, शान्ति शुभ पावहिं॥ 25॥
निर्मल माँ निर्मलता देतीं। जीवन को पावन कर देतीं॥26॥
निर्मल जल जे मलिन बनावहिं। करहिं मूर्खता पाप कमावहिं॥ 27॥
पूजन करि जो पुण्य कमावहिं। तेहि ते अधिक पाप चढ़ि धावहिं॥ 28॥
नगर ग्राम जे जल-मल भरहीं। प्रकृति शाप वश पीड़ा सहहीं॥ 29॥
तट पर जे जन पशु-तरु काटहिं। ते सब घोर नरक में जावहिं॥ 30॥
निर्मल भाव सहित जे आवहिं। सेवा करि तट स्वच्छ बनावहिं॥ 31॥
तट पर पावन वृक्ष लगावहिं। पालहिं, पोसहिं, पुष्ट बनावहिं॥ 32॥
मातहि अति प्रिय ते नर-नारी। पावहिं श्री, यश, होंहि सुखारी॥ 33॥
शुक, सनकादि, देव, अवतारी। सब गावहिं माँ कीर्ति तुम्हारी॥ 34॥
मातु सबहिं प्रिय, सब प्रिय मातहिं। मातु न पूछइ पंथहि-जातहिं॥ 35॥
जग सौभाग्य रूप जल पावन। शिव प्रसाद सुन्दर मन भावन॥ 36॥
थलचर, जलचर, नभचर प्राणी। सबको पोषण दे कल्याणी॥ 37॥
कलिमल नाशिनि-पुण्य प्रदायिनि। निर्मल मति शुभ जीवन दायिनि॥38॥
श्रद्धायुत सुर सरितहिं ध्यावहिं। निज अनुरूप पुण्य फल पावहिं॥ 39॥
मानव केहि विधि तव गुण गावहिं। शेष-शारदा पार न पावहिं॥ 40॥

दोहा- यह चालीसा भाव युत, पठन-मनन करि जोय।
शुभ सुख, श्री, यश पावहिं, अन्त परम गति होय॥

***

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

6. निर्मल गंगा अभियान - गीत

जो जल मैला किया उसे हम फिर से शुद्ध बनायेंगे।
पुनः पुण्यतोया गंगा की पावनता लौटायेंगे॥

फूल-पात-अस्थियाँ धार में करी प्रवाहित हमने ही,
औ' मल-मूत्र बहाकर इसको किया प्रदूषित हमने ही।
रासायनिक अहितकर कचरा इसमें बहुत बहाया है,
प्राण-प्रवाही जल को हमने विषमय स्वयं बनाया है।
अब तक जो की भूल, न उसको आगे हम दोहरायेंगे।

इसका जल-जीवन पाकर ही खेत-खेत हरियाये थे,
गाँव-नगर-उद्योग तभी तो तट पर ही विकसाये थे।
लेकिन हमने निहित स्वार्थ में तट निष्प्राण बनाये हैं,
वृक्षों की कीमत पर हमने अनगिन नगर बसाये हैं।
इन सूखे निष्प्राण तटों को चूनर हरी चढ़ायेंगे।

तट पर बसी बस्तियों का अब यूँ होगा उत्कर्ष यहाँ,
ग्रामवासियों के जीवन में होगा उच्चादर्श यहाँ।
होगा नहीं प्रयोग खेत में वहाँ विषैली खादों का,
नहीं बोलबाला फिर होगा सामाजिक अपराधों का।
गाँव-गाँव मिलकर गंगा की शुचिता अधिक बढ़ायेंगे।

तीर्थयात्रियों के दल तट पर जो सुदूर से आयेंगे,
उचित तीर्थसेवन का उनमें श्रेष्ठ भाव उमगायेंगे।
होगी केवल जनहितकारी सच्ची तीर्थ-प्रवज्या फिर,
स्वास्थ्य मानदंडो की उनमें होगी नहीं अवज्ञा फिर।
तीर्थसेवियों में भी ऐसी हम प्रेरणा जगायेंगे।

प्राणदायिनी गंगा का यूँ होगा निर्मल नीर यहाँ,
शान्त, श्रांतिहर, सुखकर, शीतल होगा गंगा-तीर यहाँ।
फिर तटीय गाँवों में सच्चा जन-जीवन लहरायेगा,
और तीर्थ-सेवन का मानव पुण्य सहज पा जायेगा।
गोमुख से गंगासागर तक लाभ सभी जन पायेंगे।
पुनः पुण्यतोया.....

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाप ताप हर लेती सबके गंगा की जलधार है

पाप ताप हर लेती सबके, गंगा की जल धार है।
सन्मति पा जाता गायत्री, गंगा से संसार है॥
हर-हर गंगे, जय माँ गायत्री... ॥
सगर सुतों को जीवन देने, गंगा भू-पर आई थी।
सुरपुर से आकर स्वर्गंगा, शंकर जटा समायी थी॥
आशुतोष की कृपा भगीरथ ने, तप से ही पायी थी।
तब शिव शीश वासिनी गंगा, धरती पर लहरायी थी॥
पतित पावनी गंगा ने कर दिये, दूर संताप सभी॥
मूर्छित मानव के जीवन का, यह सच्चा आधार है॥
सृष्टि देख निष्प्राण प्रजापति, ब्रह्मा भी अकुलाये थे।
गायत्री से ही वह उसको, प्राणवान कर पाये थे॥
गायत्री कर सिद्ध विश्वरथ, ऋषिवर विश्वामित्र हुए।
बला-अतिबला विद्या से, सम्पन्न राम सौमित्र हुए॥
गायत्री सत्पथ विद्यायिनी, विद्या है वरदान है।
मनुज देवता दोनों की, संरक्षक है सुखसार है॥
गंगा गायत्री स्वरूप है, दो दैवी वरदान मिले।
इन्हें वरण करके सुर मानव, को अनगिन अनुदान मिले॥
दोनों ही गतिमय जीवन का, पावन भाव जगाती है।
अुण से विभु, लघु से महान, जीवन को यहाँ बनाती है॥
नाम भिन्न है, पर अभिन्न हैं, दोनों भाव स्वभाव से।
एक स्नान से, एक ध्यान से, कर देती उद्धार है॥
जब देखी बह रही विश्व में, विष से भरी हवाएँ हैं।
विश्वामित्र, भगीरथ दोनों, एक रूप हो आये हैं॥
है दैवी संकल्प मनुज में ही, देवत्व जगाने का।
करुणा की गंगा लहराकर, धरती स्वर्ग बनाने का॥
पहुँचायी संस्कृति की भागीरथी, समूचे विश्व में।
दुष्चिन्तन पर आज विश्व में, होंता प्रबल प्रहार है॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. निर्मल गंगा नारे एवं जयघोष

निर्मल गंगा अभियान सफल बनायें, उद्घोष लगायें

- नदियों का सौंदर्य बढ़ाओ, हरियाली चूनर ओढ़ाओ।
- मैली नदियाँ सड़ते ताल, पर्यावरण किया बेहाल।
- गंगा को माता माना है, स्वच्छ रखेंगे यह ठाना है।
- जिसने सगर सुतों को तारा, संकट में वो गंगा धारा।
- दूषित नदियाँ मैली सीढ़ी, ताना देगी अगली पीढ़ी।
- पवित्र जल गंदा न बनाओ, कचरा फूल कभी न सिराओ।
- हिमगिरि से सागर तक जाती, गंगा पावन प्यार लुटाती।
- गंगे तारिणी पातकम्, बोलो वंदे मातरम्।
- पानी पानी मत चिल्लाओ, अगर चाहिये, आज बचाओ।
- कपड़े धोयें, ढोर नहायें, जल को ये अस्वच्छ बनायें।
- ब्रह्म कमंडल से चल आई, कैसी पावन गंगा माई।
- नहीं बनो धरती के भार, मत रोको नदियों की धार।
- नदिया सब कुछ सहती है, फिर भी धारा बहती है।
- गंगा नदी नहीं माता है, फिर भी पुत्र सताता है।
- संस्कृति की संवाहक गंगा, उसको रखना अच्छा चंगा।
- गंगा जमुना सी सरितायें, हमें बचाओ टेर लगायें।
- गंगा मैया की यह बानी, स्वच्छ रखो तुम मेरा पानी।
- हर हर कल कल गंगा बहती, शुचिता में पावनता रहती।
- संकट हरने भू पर आई, संकट में है गंगा माई।
- जन जागृति यह लाना है, नदियाँ शुद्ध बनाना है।
- अगर न भू पर जल होगा, सोचो कैसा कल होगा।
- सब भक्तों को तारती, गंगा जीवन भारती।
- हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, गंगा साफ करो सब भाई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- मत रोको नदियों की धारा, डाल के उसमें कचरा गारा।
- जीव वनस्पति जल के प्राणी, नहीं चाहते मैला पानी।
- नदिया का पानी ये कहता, मुझमें तेरा जीवन रहता।
- जय जय गंगा माई की, हिम्मत करो सफाई की।
- गंगा का होगा उद्धार, कहता भक्तों का परिवार।
- सदियों से गंगा बहती है, संस्कृति की गाथा कहती है।
- सिमटी नदियाँ सिकुड़े ताल, क्या होगा दुनिया का हाल।
- माँ के कंठ विनाश का फंदा, क्यों करते गंगा को गंदा।
- शुद्ध हवा और निर्मल पानी, सही स्वास्थ्य की यही कहानी।
- दुर्लभ पावन कुम्भ नहाओ, जल में मैला नहीं बहाओ।
- गंगा सबकी जीवन धारा, नीर नहीं यह अमृत धारा।
- आओ पावन कुम्भ मनाएँ, गंगा तट पर वृक्ष लगाएँ।
- गंगा तट पर ध्यान धरेंगे, जल-तट गंदा नहीं करेंगे।
- पावन है गंगा की धार, तीर्थ शुद्धि का करो विचार।
- गंगा के बेटे कहलाएँ, तट को पावन, स्वच्छ बनाएँ।
- दूषित कर गंगा की धार, खोलें नहीं नरक के द्वार।
- विष्णु के चरणों से आई, निर्मल-पावन गंगा माई।
- गौ गायत्री गंगा गीता, भारत की ये शान पुनीता।
- पापों से करती उद्धार, पावन गंगा जल की धार।
- प्रदूषण करते को टोको, गंदे नालों का जल रोको।
- माँ गंगा की यही पुकार, जल और तट का करो सुधार।
- स्वर्ग धरा पर लायेंगे, गंगा स्वच्छ बनायेंगे।
- गंदगी का नाश हो, तटों पर हरियाली हो।
- गंगा सदा नीरा हो, भागीरथी की जय हो।
- गंगा तट पर ध्यान धरेंगे, जल को गंदा नहीं करेंगे।
- उद्योगों नालों की धार, गंगा को करती बीमार।
- पावन तट को तीर्थ बनायें, जल में मैला नहीं बहायें।
- भव रोगों का है उपचार, निर्मल पावन गंगा धार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोहा: गंगा को निर्मल करें अपने मन में ठान ।
क्या करें क्या ना करें यह अच्छे से जान ॥1 ॥

चौपाई: घर का कूड़ा कचरा लेकर, बासी पुष्प नदी में न डालो
पॉलिथीन शहर का नाला, इस सरिता में तुम ना ढालो ॥1 ॥
स्नान करो जब भी गंगा में, साबुन तेल कभी न लगाओ।
लेप लगा तट की मिट्टी का, अपने तन का मैल भगाओ ॥ 2 ॥
शैम्पू गुटके के पैकेट से, इसके तट को कभी न भरना।
नित्य क्रिया अपनी प्रतिदिन की, इसके आँचल में न करना ॥ 3 ॥

दोहा: मानव के उद्धार को भू पर लाये साथ।
भागीरथ की गंगा को रखा न हमने साफ ॥ 2 ॥

चौपाई: मैले कपड़े गाय भैंस को, इसकी धारा में मत धोना।
दीप दान करना जो चाहो, प्लास्टिक का मत लेना दोना ॥ 4 ॥
दूषित रंग रँगी प्रतिमायें, उद्योगों का मैला पानी।
जहर मिलाते हैं धारा में, सच्ची बात कभी ना मानी ॥ 5 ॥
मरे हुये पशु और आदमी, गंगा में मत कभी बहाना।
और किनारे के खेतों को, दूषित खाद कभी ना लाना ॥ 6 ॥

दोहा: ना करने की बात को, सबने मन से जाना।
क्या करें कैसे करें अब हमको बतलाना ॥ 3 ॥

चौपाई: देवों के बासी पुष्पों से, अपने घर में खाद बनाओ
गंदे पानी को भरने को, उसका सोख्ता स्थान बनाओ ॥ 7 ॥
पॉलिथिन के बदले देखो, कागज की थैली चलवाओ।
देसी रंगों से रँगवा कर , मिट्टी की मूरत बनवाओ ॥ 8 ॥

दोहा: गंगा की रक्षा करें, संस्कृति लेय बचाय।
उसकी शुद्धि के लिये, ऐसे करो उपाय ॥ 4 ॥

चौपाई: अपने उद्योगों का पानी, वहीं उसे उपचार कराओ।
पुन: उसे उपयोग में लाकर, गंगा को फिर शुद्ध बनाओ ॥ 9 ॥
रासायनिक खाद ना लाना, शव का पूरा दाह कराना।
दीप दान, आटे का दीपक, बन जाये जीवों का दाना ॥10 ॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा को माता कहते हैं, माता का सम्मान बढ़ाओ।
गंगा के तट रक्षण को, उसे हरी चूनर पहनाओ॥11॥

दोहा: गायत्री परिवार ने शुरू किया अभियान।
गंगा को निर्मल करें लौटे उसकी शान।।5॥
गंगा अपना धर्म है, गंगा ही है प्राण।
गंगा सेवा से मिले, पापों से परित्राण॥6॥
बोलिये गंगा मैया की जय !!!

दोहेः-

नदियाँ हैं संस्कृति की वाहक, इनको हमें बचाना है,
मानव की रक्षा की खातिर, घर-घर अलख जगाना है।

गंगा गीता और गौमाता, अपनी संस्कृति की पहचान,
गंगा मैली, गीता भूले, गौमाता को लेते जान।

नदी, जलाशय शुद्धिकरण को, हम संकल्पित होते हैं,
पिछले दिनों हुई भूलों को, अब मिलकर हम धोते हैं।

मानुस जल को राखिये, जल है प्राण समान,
जल की जो रक्षा करे, वह ही चतुर सुजान।

गंदे नालों का नहीं, शुभ नदियों से मेल,
समझदार हो तो रोको, ऐसा गंदा खेल।

नदियाँ हमें पुकारतीं, देकर हरि की आन,
साफ रखो हमको सदा, मत लो हमरे प्रान।

जो जीवन देती हैं हमें, उनमें ठेला मैल,
बंद करो यह दुष्टता, वर्ना होगी जेल।

तट पर वृक्ष लगायेंगे, गंगा को बचायेंगे॥
गंगा स्वच्छ बनायेंगे, महाकुम्भ नहायेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

8. नदी-जल के विषय में रोचक जानकारी

- वयस्क व्यक्ति के शरीर में 70 % जल होता है।
- शुद्ध जल का पी एच मान 7 होता है, जो न अम्लीय और न ही क्षारीय होता है।
- पानी संसार का सबसे अच्छा विलयक (घोलक) होता है।
- धरती का लगभग दो तिहाई क्षेत्र जलीय है।
- धरती पर उपलब्ध जल कभी घटता-बढ़ता नहीं है। जो करोड़ों वर्ष पहले था, वही अब भी है।
- धरती पर कुल जल की मात्रा लगभग 3260 लाख वर्ग मील है।
- शरीर में 1 % पानी कम होने पर व्यक्ति प्यास अनुभव करता है।
- बिना भोजन के 1 माह रहा जा सकता है, पर बिना पानी के मात्र 1 सप्ताह।
- पर्याप्त पानी पीने से कैंसर का खतरा कम होता है।
- पीठ एवं जोड़ों के दर्द में पर्याप्त पानी पीने से लाभ होता है।
- पानी ही शरीर में सभी न्यूट्रीऐन्ट्स को पहुँचाने वाला साधन है।
- शुद्ध पेयजल स्वस्थ जीवन का आधार है।
- पानी को प्रदूषित करने वाले 2100 जल प्रदूषक तत्त्व हैं।
- पानी पीयें छान के।
- धरती पर कुल उपलब्ध जल राशि में से 3 % ही शुद्ध जल है, शेष 97 प्रति. समुद्री खारा पानी है। कुल शुद्ध जल 3 % का - 0.3 % जल झीलों, नदियों, झरनों, तालाबों आदि में भूतल पर उपलब्ध है, 68.7 % जल ग्लेशियरों में जमा है, 30 % भूगर्भ जल है।
- वातावरण में नदियों आदि जल स्रोतों से अधिक मात्रा में शुद्ध पानी रहता है।
- पृथ्वी पर पानी ही ऐसा पदार्थ है, जो तरल, गैस और ठोस रूप में उपलब्ध है।
- प्रदूषित जल जनित बीमारियों के कारण भारत में 1000 बच्चे प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।
- गंगा विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित दस नदियों में से एक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

9. गंगा की सहायक नदियां एवं उनका प्रबंधन

यदि गंगा की स्वच्छता को सतत बनाये रखना है तो इसमें आकर मिलने वाली छोटी बडी विभिन्न सहायक नदियों की भी स्वच्छता करना उतना ही आवश्यक है अन्यथा पूर्व में किया श्रम व्यर्थ हो सकता है। अभियान के पंचम चरण में इसी प्रकार जन जागरण एवं जन सहयोग से दूषित जल स्रोत प्रबंधन का कार्य आरंभ किया जायेगा।

दूषित जल स्त्रोत प्रबन्धन - स्वच्छ सदा नीरा गंगा-

1. सहायक नदियों/जल स्त्रोतों को स्वच्छ बनाये बिना गंगा को पूर्णरूपेण निर्मल नहीं बनाया जा सकता, अत: गंगा की सहायक नदियों पर भी छोटे-छोटे अभियानों का क्षेत्रीय स्तर पर आयोजन
2. भागीरथी जलाभिषेक के माध्यम से समीपवर्ती/सहायक जल स्त्रोतों की शुद्धि

गंगा के उद्गम से सागर संगम तक उसमें अनेक छोटी बड़ी नदियां समाहित होती हैं। गंगा में उत्तर से मिलने वाली मुख्य सहायक नदियों में यमुना, ताप्ती, गंडक, रामगंगा, कोसी आदि हैं तो दक्षिणी पठार की सहायक नदियों में चंबल, सोन, बेतवा, केन आदि हैं जो मध्यप्रदेश से आती हैं। यमुना गंगा की प्रमुख सहायक नदी है जो हिमालय के बंदर पूंछ नामक चोटी से निकल कर मैदान में आकर इलाहाबाद में गंगा में आकर संगम करती है। गंडक हिमालय से निकल कर नेपाल में शालीग्राम नामक गांव से बहकर मैदान में नारायणी नदी के नाम से गंगा में समाहित हो जाती है। कोसी की मुख्यधारा अरूण है जो गोसाई धाम के उत्तर भाग से निकलती है, हिमालय के कंचनजंगा शिखरों के बीच से बहती हुई यह दक्षिण की ओर 90 किमी बहती है जहां सूनकोसी व तामूर कोसी इसमें मिलती है, जो कोसी के नाम से शिवालिक पार कर मैदान में बिहार में गंगा में समाहित हो जाती है। मध्यप्रदेश से निकली सोन नदी पटना के पास व बेतवा हमीरपुर उत्तर प्रदेश में यमुना में मिलकर गंगा का भाग बन जाती है। जलांगी एवं माथाभांगा बायें किनारे से मिलती हैं, जो पूर्व में गंगा की सहायक नदियां थीं पर आज ये गंगा से अलग होकर वर्षाकालीन नदियां बन चुकी हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गंगा की समस्त सहायक नदियों पर भी भविष्य में इसी प्रकार के देशव्यापी अभियान के माध्यम से कार्य करना पड़ेगा तब ही गंगा पर किया गया निर्मलीकरण का अभियान सफल हो सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

10. निर्मल गंगा मंत्रः

गंगा पुण्यजलां प्राप्य, त्रयोदष विवर्जयेत्
शौचमाचनं सेकं निर्माल्यं मलघर्षणं।
गात्रसंवाहनं क्रीडां प्रतिग्रहमथांरतिम्
अन्यतीर्थरतिंचैवः अन्यतीर्य प्रषंसनम।
वस्त्रत्यागमथाघातं सन्तारंच विशेषतः।।

उपरोक्त श्लोक के अनुसार गंगा या वर्तमान संदर्भ में किसी भी नदी को पवित्र/साफ रखने हेतु नदी में या उसके तट पर निम्नलिखित 13 कार्यों का पूर्णतः निषेध है-

1. मलत्याग
2. धार्मिक/पूजन सामग्री धोना
3. अश्लील क्रियाकलाप करना
4. मैल धोना
5. मंत्रों का गलत/अशुद्ध उच्चारण
6. तैर कर पार करना
7. मैले कपड़े धोना
8. पुराने कपड़ों को छोड़ जाना/फेंक जाना
9. निर्माल्य को ड़ालना/बहाना
10. दान अथवा भीख माँगना
11. प्रदूषित अथवा उपयोग किया पानी उसमें मिलाना
12. जल में क्रीड़ा करना
13. रासायनिक पदार्थ, यथा साबुन तेल आदि का प्रयोग स्नान में करना

वर्तमान समय में उपरोक्त बातें अतिरंजकतापूर्ण एवं अव्यवहारिक लग सकती हैं किंतु गहराई से सोचें तो देश की सारी नदियों, तालाबों की दयनीय हालत को देखते हुए इनका कठोरता से अनुपालन अनिवार्य सा लगता है। अतः अपनी मातृतुल्य नदियों की जीवन रक्षा हेतु इन उपायों को विनम्रतापूर्वक लागू करवाने का कार्य कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

11. विनम्र सुझाव

- केवल घाटों, तटों की सफाई समय-समय पर कराने से समस्या का समाधान नहीं निकलेगा। गंदगी-प्रदूषण पैदा करने वाले स्रोतों को नियंत्रित करना पड़ेगा। उदाहरण-मच्छर, मक्खी, रोगाणुओं को उपजने ही न देने जैसे प्रयास।
- नदियों-सहायक नदियों, उसमें मिलने वाले जल स्रोतों के प्रवाहों का सर्वे करके देखना होगा कि कहाँ-कहाँ से इनमें प्रदूषण किन-किन रूपों में शामिल हो रहा है।
- क्षेत्र की धार्मिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक इकाईयों - संगठनों को जागरूक करके क्षेत्र विशेष में प्रवाहों को प्रदूषण मुक्त कराने की जिम्मेदारी सौंपनी होगी, उनके प्रतिनिधि समय-समय पर मिलकर एक-दूसरे के अनुभव का लाभ लें। एक-दूसरे की समस्याओं का समाधान निकालें। उल्लेखनीय कार्य करने वालों को सम्मानित किया जाये।

मुख्य कार्य-

- प्रवाह के दोनों किनारों पर बसे गाँवों में खुले में शौच जाने की प्रथा बन्द हो। सस्ते सुगम शौचालयों की स्थापना समर्थ लोग शुरू करें, उनसे निकली खाद अतिरिक्त लाभ भी देगी। खेतों में छोटे गड्ढे करके उनमें मल-विसर्जन करने तथा उस पर तत्काल मिट्टी डालने से खेतों की उर्वरता बढ़ेगी।
- ग्राम पंचायतें, नगर पालिकायें गंदे पानी को सीधे प्राकृतिक प्रवाहों में न डालें। शोधक हौद (सैटलिंग टैंक) बनायें। गंदगी नीचे बैठ जाये- निथरा हुआ जल ही प्राकृतिक प्रवाहों में जाये। जमी हुई कीचड़ को खाद के गड्ढों में डालें।
- कारखाने तथा नगर निगम उपयुक्त संशोधक प्रक्रिया (ट्रीटमेण्ट सिस्टम) से निकला जल ही प्रवाहों में जाने दें। इसके लिये नियम बने, उनका ईमानदारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से पालन करने वालों को सहयोग पारितोषिक (इन्सेन्टिव) दिये जायें तथा अवज्ञा करने वालों पर कानून एवं समाज का दबाव बनाया जाये।

- नदियों का पानी जहाँ तक वर्ष में फैलता है, उसे नदियों का क्षेत्र माना जाये। उसमें पक्के निर्माण न होने दिये जायें। वहाँ सघन वृक्षारोपण कराया जाये, इससे भूमि का कटाव रुकेगा। पानी जमीन में प्रविष्ट होगा, भूमिगत जलप्रवाह (अण्डर ग्राउण्ड करेण्ट) सक्रिय होगी। इससे नदियों के प्रवाह पुष्ट होंगे तथा भूमि का जल स्तर (वाटर लेविल) उन्नत होगा।
- बौद्धिक प्रचार करना तथा उपयोगी नियम बनाना आवश्यक तथा उपयोगी तो है, लेकिन उतने भर से काम नहीं चलेगा। उन प्रयासों के साथ भावनाओं को भी जोड़ना होगा। विशेष रूप से भारतवासी बुद्धि के मुकाबले भावनाओं से अधिक संचालित होते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भावभरी अपीलें की जायें-

- धर्मनिष्ठों से- नदियों को माँ और देवी मानकर उनके आशीर्वाद की कामना करनेवाले विचार करें- माता की जय तो बोलें, लेकिन उसकी इज्जत न करें, बल्कि इज्जत लूटें या आँखों के आगे लुटने दें, तो क्या उसके मन से आशीर्वाद निकलेगा?
- नदियों की पवित्रता नष्ट करना या होने देना, उनकी इज्जत लूटने या लुटने देना जैसा जघन्य पाप है। पाप करते हुए पुण्य कमाने का भ्रम न पालें। उनकी पवित्रता बनाये रखने - बढ़ाने के लिये ईमानदारी से प्रयास करें तो पुण्य और आशीर्वाद दोनों पायें।
- समाजनिष्ठों से- समाज का संतुलन भावभरे आदान पर टिका है। हम खेतों से फसल लेते हैं, तो खेतों को खाद-पानी भी देते हैं।
- नदियों से हम सभी सुविधाएँ लेते तो हैं, लेकिन उसे सिवा गंदगी के देते क्या हैं? जीवन की धाराओं को गंदगी ढोने वाली गाड़ी की तरह प्रयोग न करें। भूल सुधारें, नहीं तो प्रकृति वे सुविधाएँ हमसे छीन लेंगी, फिर क्या होगा?
- व्यवसाइयों से- व्यवसाय से जुड़ी सभी इकाइयों को उसकी आमदनी का एक हिस्सा देकर पुष्ट बनाये रखना जरूरी होता है। प्रतिष्ठानों, फैक्ट्रियों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमाई बढ़ाने के लिये उन्हें जल, जलाशयों, नदियों आदि के किनारे स्थापित किया जाता है। उन्हें जिन्दा और स्वस्थ रखने के लिये व्यवसायिक आमदनी का कुछ प्रतिशत खर्च करना स्थायी अर्थनीति की दृष्टि से आवश्यक है। उसकी उपेक्षा कितनों दिनों तक की जा सकेगी ?

- जलाशयों, जल प्रवाहों को व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के अनिवार्य अंग मानें, तो उनके लिये खर्च करना निरर्थक भार नहीं, फायदेमंद समझदारी लगने लगेगी। यदि समझदारी के साथ योजना बनायी जाये तो शोधन यंत्रों (ट्रीटमेण्ट प्लाण्टों) के अतिरिक्त उत्पादों (बाई प्रोडक्ट्स) से काफी कुछ कमाई की जा सकती है।
- इसके लिये जागरूक जनता एवं कर्तव्यनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी मिलकर उन पर दबाव भी बना सकते हैं।

इसके लिये स्वयं सेवी संगठनों को जिम्मेदारी दी जा सकती है। NGO शब्द बड़ा भ्रामक है। गैर सरकारी संगठनों में तो स्मगलर और आतंकवादी भी आ जाते हैं। उन्हें VO (वॉलेण्टरी ऑर्गनाइजेशन) या VCO (वॉलेण्टरी कम्युनिटी ऑर्गनाइजेशन-स्वयंसेवी सामाजिक संगठन) कहा जाये।

*** *** ***

"मैं अपनी अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित करना चाहूँगा, भारत जाने कि कोई है जो गंगा का ध्यान (गंगा से स्नेह) रखता है।" - अलेक्जेंडर डफ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

12. हमारे सात आन्दोलन

प्रस्तुत समय अति जटिलतम, विषमतम एवं दुरूह है। यह अत्यन्त परिवर्तनकारी समय है। सम्पूर्ण संसार के हर क्षेत्र में विकृतियों का अम्बार लगा हुआ है। आज तक के इतिहास में इतनी अधिक समस्याओं से बाढ़ की तरह घिरा हुआ समय नहीं आया। क्या इस कठिनतम वेला में भी हम अपने सुख-मौज, भोग-विलासिता, धन-साधनों या सांसारिक आकर्षणों के पीछे भागते रहेंगे? क्या राष्ट्र-सुधार या राष्ट्र-निर्माण के प्रयोजनों में हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है? क्या हमें आस-पास क्षेत्रों में समाया हुआ पतन, दु:ख-त्रास नहीं दिखाई देता? क्या हमारी भाव संवेदनाएँ इतनी सूख गयी हैं, कि हमें व्यथित-पीड़ित मानवता की वेदनाएँ नहीं अनुभव होतीं? हमारा ख्याल है कि आप उनमें से नहीं हैं, आपके अंदर अवश्य पीड़ित मानवता के लिए वेदना उत्पन्न होती होगी।

जहाँ पूरे विश्व का वातावरण इतना प्रदूषित हो गया है कि अनीति, अनाचार, पापाचार, दुष्ट प्रवृत्तियों का ही बोलबाला दीख पड़ता है। हर कुएँ में भाँग घुल गयी हो, तो अमृत जल कहाँ से मिले? सुधार की शुरुआत कहाँ से हो? यह शुरुआत निश्चय ही अपने अंदर से, अपने घर-परिवार एवं समाज से ही करनी होगी।

युग निर्माण योजना इस युग की महानतम योजना है, जिसका आधार आत्म निर्माण से शुरू होकर परिवार एवं समाज निर्माण तक है। इसके संस्थापक गायत्री के सिद्ध साधक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं उनकी सहधर्मिणी वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा हैं, जिन्होंने युग निर्माण हेतु शत सूत्रीय योजनाएँ बनायी हैं। इन शत सूत्रों में से इन दिनों सात ही सूत्रों को आधाररूप में हाथ में लिया गया है। परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने लिखा है कि इक्कीसवीं सदी में क्रान्तियाँ रेलगाड़ी के डिब्बों की भाँति धड़धड़ाती हुई आयेंगी। सर्वप्रथम इन क्रान्तियों में से सात क्रान्तियों को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ये सात क्रान्तियाँ हैं-

1. साधना 2. शिक्षा 3. स्वास्थ्य

4. स्वावलम्बन 5. पर्यावरण 6. नारी जागरण एवं

7. व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन

साधना आन्दोलन- क्यों ?

- व्यक्ति में आदर्शवादिता, प्रामाणिकता, चरित्रनिष्ठा, ईमानदारी, सदाशयता आदि भाव विकसित करना।
- सभी धर्म सम्प्रदाय के व्यक्तियों के बीच परस्पर प्यार-सद्भावना, त्याग एवं सहकार की भावना विकसित करने हेतु।
- पूरे संसार में जाति, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय आदि के भेदभाव की समस्त दीवारों को हटाने हेतु।
- पूरे जगत् में एकता, समता, ममता एवं शुचिता के विराट् भावों की स्थापना हेतु।
- पूरे विश्व का वातावरण शोधन करने हेतु।
- पूरे विश्व में सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने एवं दुष्प्रवृत्तियों को घटाने हेतु।
- पूरे विश्व में वैचारिक प्रदूषण दूर करने हेतु सद्विचारों का प्रसार करने हेतु।

साधना आन्दोलन - कैसे ?

- हर जाति, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय आदि के व्यक्ति आध्यात्मिक एकता स्थापित करने हेतु सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की भावना के साथ गायत्री मंत्र, ॐ कार मंत्र अथवा इष्ट मंत्र या नाम का जप करें।
- साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा द्वारा जीवन को संस्कारित बनायें।
- अपने किसी इष्ट का, गुरु का ध्यान ज्योति या सूर्य के बीच तेजस्वी रूप में करें।
- जप, ध्यान के साथ न्यूनतम दस बार अनुलोम-विलोम प्राणायाम या प्राणाकर्षण प्राणायाम सम्पन्न करें।
- सम्पूर्ण विश्व के वातावरण शोधन हेतु सप्ताह में एक दिन संक्षिप्त गायत्री हवन या नित्य बलिवैश्व हवन-भोजन के पाँच छोटे ग्रास की आहुति सम्पन्न करना।
- घर-घर में गाँव-मुहल्लों में सद्विचारों का प्रचार-प्रसार स्वयं चलती-फिरती मोबाइल लाइब्रेरी बनकर झोला-पुस्तकालयों के माध्यम से सम्पन्न करना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा आन्दोलन - क्यों ?

- पूरे देश में साक्षरता आन्दोलन बढ़ाने हेतु। हर व्यक्ति साक्षर बनकर अपने रोजमर्रा के सब कार्य स्वयं कर सके।
- स्कूलों में शिक्षा तो दी जाती है, किन्तु उससे अधिक अनिवार्य उनके अन्दर गुण एवं सुसंस्कार भरने वाली विद्या दिया जाना है।
- हमारी शिक्षा उपयोगी, व्यावहारिक, मूल्यपरक एवं बुनियादी अर्थात् रोजगारोन्मुखी हो।
- शिक्षा पूरी तरह से व्यवसाय क्षेत्र से मुक्त बने, कम से कम दसवीं कक्षा तक नि:शुल्क एवं नि:स्वार्थ भाव से दी जाने वाली हो।

शिक्षा आन्दोलन - कैसे ?

- प्रशासन के समानान्तर एक नया शिक्षा तंत्र विकसित हो। हर ग्राम, मोहल्ले में बाल संस्कार शालाएँ, प्रौढ़ पाठशालाएँ एवं कामकाजी विद्यालय चलाये जायें।
- गैर सरकारी सामाजिक एवं धार्मिक संस्थायें व्यावहारिक एवं उपयोगी शिक्षा के तंत्र बनायें।
- गाँव-गाँव में शिक्षा मित्र तैयार कर भेजे जायें, जो निरक्षर लोगों को अलग एवं प्राइमरी से लेकर 12 वीं कक्षा तक के बच्चों को एक साथ बिठाकर पढ़ाते रहें।
- समस्त ग्रामवासियों के सामूहिक श्रमदान एवं सहयोग से ही गाँव में आवश्यकता के अनुरूप विद्यालयों का नया निर्माण किया जा सकता है।

स्वास्थ्य आन्दोलन - क्यों ?

- मनुष्य पुन: प्रकृति का अनुसरण करके, प्रकृति की ओर चलकर प्राकृतिक स्वास्थ्य प्राप्त करे।
- सम्पूर्ण स्वास्थ्य के आधारभूत कारणों की खोज करके मनुष्य को समग्र एवं सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया जा सके।
- रोग-बीमारियों एवं दुर्बलता के कारणों को जड़मूल से उखाड़कर मनुष्य को स्वस्थ शरीर एवं स्वच्छ मन दिया जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- पतञ्जलि ऋषि के अष्टांग योग के माध्यम से मनुष्य मात्र को ध्यान, प्राणायाम, योग एवं व्यायाम द्वारा सम्पूर्ण आध्यात्मिक स्वास्थ्य दिया जाये।
- स्वास्थ्य क्षेत्र को व्यावसायिक लोगों ने पूरी तरह घेर लिया है, उसे पुनः व्यवसाय क्षेत्र से मुक्त किया जाये।
- स्वास्थ्य उपचार के अन्य नये-पुराने वैकल्पिक उपाय खोजे जायें, जो सर्व सुलभ भी हों।
- चरक ऋषि की आयुर्वेद की पुरातन परम्परा को विकसित कर गाँव-गाँव में उपयोगी जड़ी-बूटियों को विकसित किया जाये ।
- घर-घर में उपलब्ध मसालों एवं अन्य प्राकृतिक वस्तुओं के माध्यम से घरेलू चिकित्सा को अति सुलभ बनाया जाये ।

स्वास्थ्य आन्दोलन - कैसे ?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- प्राकृतिक जीवनचर्या के लिए मनुष्य को अभ्यस्त करना।
- संयम एवं नियमितता के अभ्यास से ही रोग-बीमारियों की जड़ें काटी जा सकती हैं। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनुष्य को उसका प्रशिक्षण देना।
- रात को जल्दी सोना, सुबह जल्दी उठना, उषा वेला में वायु सेवन एवं जल सेवन करना उत्तम स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम उपचार एवं टॉनिक है। जन-जन को इसका बोध एवं अभ्यास कराना।
- योग-आसन, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण जन-जन को गाँव-मुहल्लों, पार्कों में जाकर प्रदान करना।
- उन्हें उत्तम जड़ी-बूटियों का प्रशिक्षण दिलाना, जिससे कि वे उपयोगी जड़ी-बूटियाँ अपने ही घर-आँगन एवं गमलों में लगाकर इस्तेमाल करते रह सकें।
- यज्ञोपैथी द्वारा जड़ी-बूटियों के अग्निहोत्र से नया स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है, उसका प्रशिक्षण जन-जन को कराना।
- विश्वव्यापी ऐसे तंत्रों को विकसित एवं प्रोत्साहित करना जो नित्य नये वैकल्पिक चिकित्सा उपचारों द्वारा स्वास्थ्य आन्दोलन को तीव्र एवं सुविधागम्य बनाते हों।
- घरेलू चिकित्सा एवं मसाला वाटिका से घरेलू उपचार, तुलसी के चमत्कारी गुणों के माध्यम से जन स्वास्थ्य उपचार को अति सुलभ बनाया जाये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वावलम्बन आन्दोलन - क्यों ?

- हर हाथ को काम मिले, ताकि कोई बेरोजगारी का दु:ख न झेले। जन-सामान्य की रोटी, कपड़ा और मकान की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हों।
- खाली दिमाग शैतान का घर की स्थिति न बने, श्रमशीलता की प्रवृत्तियाँ लोगों के अन्तराल में उतरें।
- गांधी जी का बुनियादी तालीम का सपना साकार हो सके। हर स्कूल में बच्चों को कुछ कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिये जायें ताकि दसवीं पढ़ते ही वे किसी रोजगार से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सकें।
- पुराने पुश्तैनी धन्धों को पुन: महत्त्व देकर स्थापित किया जा सके।
- नारियों का घर में हाथ काफी तंग रहता है, अत: नारियों को कुटीर उद्योगों में विकसित किया जाये। साथ ही उनमें स्वावलम्बन से हिम्मत भी बढ़ेगी।
- देश की आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी। हमारा देश खुशहाल बनेगा।
- गाँव का पैसा गाँव में ही रहे, हर गाँव आत्मनिर्भर बने। गाँव-गाँव में परस्पर सहयोगी स्वावलम्बन तंत्र विकसित हों।

स्वावलम्बन आन्दोलन - कैसे ?

- नारियों के पास दोपहर का काफी समय खाली होता है, अत: नारी स्वावलम्बन को विशेष प्राथमिकता देकर घर-घर में कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाये।
- बच्चे माता के संग ज्यादा रहते हैं, वे पढ़ाई से बचे समय में अपने घर पर ही कुटीर उद्योगों का अभ्यास कर सकते हैं। पहला प्रशिक्षण उन्हें अपने घर पर ही मिले।
- स्कूली शिक्षा के साथ कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण बच्चों को अनिवार्य कर दिया जाये।
- अपने बच्चों में अपने पुस्तैनी धंधों के प्रति गौरव की भावना जगायी एवं बढ़ाई जाये, जिससे कि पुश्तैनी धंधों को समाज में फिर प्रोत्साहन एवं वृद्धि मिलती रह सके।
- ऐसे सहकारी स्वावलंबी तंत्र विकसित हों, जो लोगों को कच्चा माल उपलब्ध करायें, बने उत्पाद एकत्र करें, और उसके विपणन की व्यवस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हेतु सहकारी केन्द्र खड़े करें। उन्हें सस्ते दरों पर ऋण भी प्रदान करायें। जगह-जगह व्यावसायिक पारमार्थिक मण्डल (व्यापारम) की स्थापना।

पर्यावरण आन्दोलन - क्यों ?

- जंगलों का कटान बड़ी तेज गति से हो रहा है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग, भू-कटान, बाढ़ों एवं सिल्टिंग की समस्या बढ़ी है। अत: इकॉलॉजीकल बैलेन्स के लिए वृक्षारोपण अभियान बहुत आवश्यक है।
- प्राकृतिक जल स्रोत निरंतर प्रदूषित हो रहे हैं, जिससे शुद्ध पेय जल एवं जल द्वारा रोगों की समस्या दिनों-दिन बढ़ रही है।
- पृथ्वी के गर्भ से कोयला, खनिज, तेल, लवण आदि के अत्यधिक उत्खनन, परमाणु प्रयोग, क्लोरो-फलोरो कार्बन्स, रासायनिक खादों आदि के प्रयोग के कारण मृदा, जल, वायु सभी इतने प्रदूषित हो चुके हैं कि पूरा विश्व ही संत्रस्त है। पृथ्वी के अस्तित्व पर ही संकट आ खड़ा हुआ है।

पर्यावरण आन्दोलन - कैसे ?

- घर-घर में तुलसी, गिलोय एवं अशोक वृक्ष जैसे अति उपयोगी पेड़-पौधे लगाये जायें।
- घरेलू शाक वाटिकाओं का प्रचलन बढ़े ताकि टमाटर, धनिया, पुदीना, मिर्च आदि जैसी उपयोगी शाक-वनस्पति की पूर्ति सरलता से हो सके।
- वृक्षों के कटान पर कड़े कानून लगाकर रोक लगायी जाये और जन-जन को वृक्ष लगाने, उसके संरक्षण एवं संवर्धन की जिम्मेदारी अपने ही पुत्र के समान विशेष ध्यान देकर उठाने के लिए प्रेरित किया जाये।
- प्राकृतिक जल के स्रोतों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाये ताकि पानी गंदा न होने पाये।
- पूर्वकालीन समय की भाँति पुन: बावड़ियों, कुओं एवं तालाबों का निर्माण सामूहिक श्रमदान से एवं अंशदान से कराया जाये।
- तालाबों की मिट्टी बहुत अच्छी खाद का काम करती है, साथ ही तालाबों का गहरीकरण भी होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- शुद्ध पेय जल की व्यापक समस्या के निवारण के लिए समुद्री जल को पीने लायक बनाया जा सके, इसको व्यापक रूप से उपलब्ध कराया जा सके, तो कहीं पीने के पानी की समस्या न रहेगी।
- नये प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों को ढूँढ़ा जाये, सूर्य ऊर्जा को विशेष प्राथमिकता दी जाये, उसी से रसोई घर के सारे काम होने लगें, और वाहन भी उसी से चलाये जा सकें।

नारी जागरण आन्दोलन - क्यों ?

1. मानव समाज में न्याय को जीवंत बनाये रखना। मानव समाज में नर-नारी में परस्पर भेद का व्यवहार उसी प्रकार की अन्यायपूर्ण प्रक्रिया है, जैसे कि रंग भेद, नस्ल भेद आदि। जब नर-नारी में परस्पर समानता का व्यवहार होगा, नारी को भी अपनी प्रगति, प्रतिभा विकास एवं अभिव्यक्ति के समान अवसर प्राप्त होंगे, लिंग भेद के आधार पर भेद-भाव नहीं होगा तो दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, नारी उत्पीड़न जैसी समस्याएँ स्वत: ही समाप्त हो जाएंगी।
2. परिवार में शालीनता उत्पन्न करना। दाम्पत्य जीवन में परस्पर सम्मान, सद्भाव का वातावरण होने से स्वत: ही परिवार में शालीनता का सद्गुण विकसित होता है।
3. भावी पीढ़ी को समुन्नत बनाना। नर-नारी दोनों के चिंतन, चरित्र, व्यवहार के सर्वांगीण विकास से आने वाली पीढ़ियाँ भी स्वस्थ, सशक्त और सुसंस्कृत बनेंगी।
4. सर्वतोमुखी आर्थिक प्रगति का पथ प्रशस्त करना। जब सामाजिक प्रगति में विश्व की आधी जनसंख्या नारी, जो अभी भी गई गुजरी स्थिति में है, की भी नर के ही समान बराबर की हिस्सेदारी होगी तो समाज की प्रगति आज की अपेक्षा 50 गुनी अधिक गति से होगी। समाज अधिक सुंदर, सभ्य, सुसंस्कृत, सुविकसित बनेगा।
5. सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का आधार खड़ा करना। भाव-संवेदनाओं के जागरण से ही अन्याय, अनीति, अत्याचार, शोषण, आतंकवाद आदि समाप्त हो सकेंगे और उस जन शक्ति और धन शक्ति को सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में लगाया जा सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- नारियों में धर्म भावना एवं प्रेम भावना ज्यादा प्रगाढ़ होती है, आज के युग में जहाँ सबकी भाव-संवेदनाएँ सूखती जा रही हैं, इसकी बड़ी आवश्यकता बनी हुई है।
- देश में नारियाँ कहीं तो अतिशय पिछड़ी हुई हैं, घर की चारदीवारी में बंद कैदी, नौकरानी, धोबिन आदि जैसी स्थिति में जी रही हैं, तो कहीं अतिशय उच्छृंखल होकर फैशन परस्ती में, ठाठ-बाट में, फिजूलखर्ची में, विलासिता में भटकी हुई हैं। अभाव या अति दोनों ही पीड़ादायक हैं। बीच का संतुलित मार्ग विकसित करना होगा।
- देश की महिलाएँ बहुत लम्बे समय से पुरुष वर्ग या समाज द्वारा दबायी जाती रही हैं, जिससे उनके अन्तर्मनों में हीनता, कुण्ठा, भय या अन्य विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। फिर से उनके अन्तर् के सुमनों को विकसाया जाना है।
- विश्व की सर्वांगीण प्रगति में नर के साथ-साथ नारी का भी समुचित योगदान या बराबरी का योगदान अभी भी नहीं बन पाया है। महिलायें भी अपनी समुचित योगयता एवं प्रतिभा का समाज के विकास में बराबरी से योगदान देकर सामाजिक प्रगति में भागीदार बनें, यह समय की बहुत बड़ी माँग है।

नारी जागरण आन्दोलन - कैसे ?

- नारी जागरण की प्रथम आवश्यकता तो यह है कि घरों में बालक-बालिका के बीच भेद-भाव या पक्षपात जैसा व्यवहार कभी न हो। दोनों को समान ही समझा जाये, दोनों के बीच सहज-सौमनस्य भरा वातावरण दिया जाये।
- बेटे-बेटी तथा बेटी-बहू में भेद न रखा जाये, उन्हें विकास के समान अवसर दिये जायें।
- स्कूल-कॉलेजों में भी कहीं भी नर-नारी के भेद के कारण असमानता भरा कार्य-निर्धारण न किया जाये, नारियों के लिए सब कुछ सीखने और आगे बढ़ने के सब अवसर खुले होने चाहिए।
- विवाहों में दहेज एवं नेग के प्रचलनों में किसी प्रकार की माँग नहीं की जानी चाहिए, परस्पर लेन-देन पूरी तरह व्यक्ति की स्वयं की इच्छा के अनुसार होना चाहिए। पराये धन के प्रति किसी प्रकार की लालसा नहीं जुड़ी होनी चाहिए।
- बिना दहेज के, बिना ज्यादा खर्च के, सादगी युक्त, दिन के विवाहों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रचलन समाज में सामूहिक विवाहों के द्वारा चलाया जाना चाहिए। विवाहों की स्वस्थ परम्परा ही विकसित की जानी चाहिए।

- नारी की प्रसूति के समय तीन माह तक पत्नी के साथ-साथ उनके पति को भी छुट्टी दी जानी चाहिए, ताकि बच्चे का ठीक ढंग से पोषण हो सके। पति-पत्नी दोनों को इस विशेष कर्तव्य का अहसास अवश्य होने चाहिए।
- हारी-बीमारी में आड़े समय में पति अपनी पत्नी के कार्यों में पूरा साथ दे सके, इन विशिष्ट कर्तव्यों का अभ्यास घरों में अवश्य ही पुरुष वर्ग को कराया जाना चाहिए।
- शस्त्र विद्या, ड्राइविंग, मार्शल आर्ट, सुरक्षा आदि का विशेष प्रशिक्षण बालिकाओं को स्कूल में दिया जाना चाहिए, जिससे उनका आत्म विश्वास बढ़े, और सशक्तता, दृढ़ता, शौर्य एवं साहस आदि के ऊँचे भाव-अहसास विकसित हो सकें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन आन्दोलन - क्यों ?

- व्यसन एवं कुरीतियाँ हमारे देश एवं समाज को अन्दर ही अन्दर से खोखला कर रहे हैं। इसमें देश एवं व्यक्ति का बहुत कीमती पैसा, स्वास्थ्य, समय, शरीर, साधन एवं प्रतिष्ठा खराब होती रहती है। व्यक्ति एवं समाज अन्दर से पूरी तरह जर्जर एवं खोखला होता जाता है।
- व्यसन एक धीमे जहर की तरह हैं, जो मनुष्य के आरोग्य के लिए बहुत अधिक नुकसानदायक हैं। इसकी गिरफ्त में फँसा मनुष्य फिर किसी विशेष कार्य के योग्य नहीं रहता। शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता एवं रुग्णता बढ़ती ही चली जाती है।
- व्यसनों से कोमल बच्चों एवं अन्य दूसरों में भी कुटेव लगती है, फिर ये अन्धानुकरण समाज को पतन की राह पर ले जाता है।
- व्यसनों से समाज में अपराध प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं, और दुर्घटनाएँ भी आमतौर से उसी वजह से अधिक होती रहती हैं।
- दहेज एवं खर्चीले विवाह जैसी कुरीतियों से हमारा समाज अन्दर से खोखला होता चला गया है। इसके कारण कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध भी हो रहे हैं, इससे समाज में बहुत बड़ा असंतुलन पैदा हो गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- समाज एवं राष्ट्र में ऊँच-नीच जैसी मान्यताएँ, गोरे-काले, धर्म, जाति के भेदों से समाज पूरी तरह बँटा हुआ है।
- भिक्षा एक व्यवसाय बन गया है, कुछ लोग गरीब अनाथ बच्चों के माध्यम से इस व्यवसाय को चला रहे हैं। मुफ्त की खाते रहने की लोगों की गलत आदत को समाज में प्रोत्साहन मिल रहा है। भिखारियों की बढ़ती जनसंख्या से भारत की गलत छवि संसार में बन रही है।
- कामचोरी एवं हरामखोरी की प्रवृत्तियाँ लोगों के मानस में गहराई से समा गयी हैं, जिससे भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है।

व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन आन्दोलन - कैसे ?

- घर-घर सम्पर्क कर हर व्यक्ति को व्यसन मुक्ति के लिए सहमत कर संकल्पित किया जाये। व्यक्ति के जन्म-दिन, विवाह दिन पर व्यसन छोड़ने के लिए प्रेरित एवं संकल्पित किया जाये।
- सभी बहिनें रक्षा बन्धन पर भाइयों से अपना व्यसन छोड़ने का संकल्प करवायें।
- व्यसनों के दुष्परिणामों एवं कुरीतियों के पतनकारी परिणामों के बारे में जनता में, स्कूल के बच्चों में जागरूकता लायी जाये। इसके लिए जनता में से नेतृत्वकर्ता स्तर की प्रतिभाओं को नेतृत्व के लिए सहमत एवं संकल्पित किया जाये।
- कोई दहेज विरोधी अभियान, कोई अश्लीलता विरोधी अभियान आदि सभी अभियानों के लिए नेतृत्व करें या किसी न किसी समूह में जुड़कर अपने योगदान देते रहें।
- हर एक आन्दोलन से सम्बन्धित फोटो एलबम, ऑडियो-वीडियो क्लिप, वेबसाइट्स, लेख, नारे, ब्रोशर, पुस्तिकाएँ एवं विश्वव्यापी समूह तैयार किये जायें। एक संस्था के कीमती अनुभव अन्य अनेक संस्थाओं में वितरण के लिए उदार हृदयों से वातावरण बनायें।
- पूरे संसार में एकता, समता, ममता एवं शुचिता की स्थापनाएँ की जानी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

13. युग निर्माण योजना एक परिचय

लक्ष्य एवं उद्देश्य-

- मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण।
- व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण।
- स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज।

योजना के उद्घोषक-विस्तारक-

- युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तीन समर्थ आयाम-

- योजना-शक्ति-ईश्वर की। * अनुशासन-संरक्षण-ऋषियों का।
- पुरुषार्थ-सहकार-सत्पुरुषों का।

आत्म निर्माण के दो सूत्र-

- उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्श कर्तृत्व। * सादा जीवन-उच्च विचार।

हमारे आधारभूत कार्यक्रम-

- नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति एवं सामाजिक क्रान्ति।
- धर्मतंत्र-आधारित विविध माध्यमों से लोक शिक्षण।

हमारा उद्घोष-

- हम बदलेंगे-युग बदलेगा * हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा।
- इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य।

हमारा प्रतीक-

- लाल मशाल-समग्र क्रान्ति के लिए सामूहिक और सशक्त प्रयास

हमारा संविधान- * युग निर्माण सत्संकल्प के 18 सूत्र।

हमारी ध्रुव मान्यताएँ-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। * नर-नारी परस्पर प्रतिद्वन्द्वी नहीं, पूरक हैं।
- जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

जीवन निर्माण के चार सूत्र-

- साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा।

आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार-

- उपासना, साधना, आराधना।

प्रगतिशील जीवन के चार चरण-

- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी।

आत्मिक प्रगति के चार चरण-

- आत्म समीक्षा, आत्म सुधार, आत्म निर्माण, आत्मविकास।

परिवार निर्माण के पंचशील-

- श्रमशीलता, मितव्ययिता, शालीनता, सुव्यवस्था एवं सहकारिता।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

* * *

हमारा युग-निर्माण सत्संकल्प

(युग-निर्माण का सत्संकल्प नित्य दुहराना चाहिए। स्वाध्याय से पहले इसे एक बार भावनापूर्वक पढ़ना और तब स्वाध्याय आरंभ करना चाहिए। सत्संगों और विचार गोष्ठियों में इसे पढ़ा और दुहराया जाना चाहिए। इस सत्संकल्प का पढ़ा जाना हमारे नित्य-नियमों का एक अंग रहना चाहिए तथा सोते समय इसी आधार पर आत्मनिरीक्षण का कार्यक्रम नियमित रूप से चलाना चाहिए।)

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत अभ्यास करेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
- नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

* * *

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

14. हमारे प्रमुख संस्थान- एक संक्षिप्त परिचय

गायत्री तीर्थ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार,

दिव्य तीर्थ-सन् 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीप, अखण्ड यज्ञाग्नि, प्रतिदिन करोड़ों गायत्री मंत्रजप, साधना, अनुष्ठान। अनुपम गुरुकुल-आरण्यक-हर व्यक्ति की मनोभूमि के अनुरूप जीवन साधना सत्रों का सतत संचालन, नवयुग की गंगोत्री-वशिष्ठ, विश्वामित्र, भगीरथ, परशुराम, याज्ञवल्क्य, चरक आदि ऋषियों की परम्परा का विस्तार। आध्यात्मिक सेनिटोरियम-प्रत्यक्ष परामर्श एवं पत्राचार द्वारा नित्य हजारों साधकों-परिजनों का मार्गदर्शन।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पूज्यवर की जन्मस्थली, आँवलखेड़ा (आगरा)

ईश चेतना के अवतरण की पुण्य स्थली, जहाँ परम पूज्य गुरुदेव का जन्म हुआ। उनका दिव्य सद्गुरु से साक्षात्कार हुआ। यहीं पर 24 गायत्री महापुरश्चरण आरंभ किये गये। पैतृक सम्पत्ति से निर्मित माता दान कुँवरि इण्टर कॉलेज एवं ग्राम विकास योजनाओं का संचालन यहाँ पर बने भव्य गायत्री शक्ति पीठ के माध्यम से किया जा रहा है। आचार्य श्री की स्मृति में पावन जन्मस्थली पर एक कीर्तिस्तम्भ निर्मित किया गया है, जो युगों-युगों तक युगऋषि की कथा कहता रहेगा।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

महर्षि दुर्वासा की तप:स्थली पर प्रतिष्ठित इस स्थान पर आचार्य श्री ने 24 गायत्री महापुरश्चरण सम्पन्न किये। इसी तप:स्थली पर नरमेध एवं ब्रह्मास्त्र यज्ञ जैसे कई ऐतिहासिक, आध्यात्मिक अनुष्ठान उनके दिव्य संरक्षण में सम्पन्न हुए। गायत्री तपोभूमि से ही धर्मतंत्र से लोक शिक्षण का शुभारम्भ हुआ। आज तपोभूमि में गायत्री माता का भव्य मंदिर एवं देश के 2400 तीर्थों का जल-रज स्थापित है। पूज्यवर द्वारा रचित समग्र साहित्य के प्रकाशन का यही मुख्य केन्द्र है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

एक विराट् देव परिवार की जन्मस्थली, जहाँ लगभग 30 वर्ष तक आचार्य श्री की जीवन साधना सम्पन्न हुई। अखण्ड ज्योति संस्थान में आने वाले साधकों को आचार्यश्री के दिव्य तप की सघन प्राण ऊर्जा का स्पष्ट रूप से अनुभव होता है। यह संस्थान आयुर्वेद एवं गौ मूत्र चिकित्सा के माध्यम से भी मानव सेवा के कार्य में संलग्न है। लाखों की संख्या में प्रकाशित होने वाली मिशन की प्रमुख मासिक पत्रिका ''अखण्ड ज्योति'' का प्रकाशन कार्य भी यहीं से संचालित किया जाता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के निमित्त स्थापित यह संस्थान अपने आप में अनूठा है। गंगा तट पर बने इस संस्थान में मंत्र विद्या, यज्ञ-विज्ञान, विचार-विज्ञान, साधना विज्ञान, मनोविज्ञान, आयुर्वेद आदि पर वैज्ञानिक शोध कार्य अनवरत चलते रहते हैं। साधकों का मनो-शारीरिक परीक्षण एवं साधना काल में उन पर पड़ने वाले प्रभावों का वैज्ञानिक विश्लेषण आधुनिक यंत्रों द्वारा किया जाता है। यहाँ पर गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ यंत्र-फलश्रुतियों सहित प्रतिष्ठित हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री कुञ्ज, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

परम पूज्य गुरुदेव का मन था कि एक ऐसा विश्वविद्यालय होना चाहिए, जहाँ से आदर्श मानव, चरित्रवान् मानव, महामानव ढाले जा सकें। उनके स्वप्न को साकार बनाया गया है, इस देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना द्वारा। इसमें लगभग 300 से अधिक उच्च शिक्षित प्रोफेसर्स, स्टाफ आदि अपनी श्रद्धा-भावना से कार्य कर रहे हैं। लगभग 1500 से अधिक छात्र-छात्राएँ यहाँ के आवासीय विश्वविद्यालय में अनेक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। यह अपने ढंग का एक अनूठा विश्वविद्यालय है, जो यूजीसी से मान्यता प्राप्त है।

* * *

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांतिकुंज हरिद्वार की टोली के सदस्यों ने नरौरा के नरवर गंगा घाट से गंगाजल का नमूना लिया

नरौरा पहुंची गायत्री परिवार की टोली

गंगोत्री से गंगासागर तक निर्मल गंगा अभियान शुरू

■ उत्तराखण्ड से शुरू रूप में आगे ले जाने का आह्वान

18 MiD DAY NATION 31.10.2013 MUMBAI

Spiritual group vows to clean up Ganga in 5 years

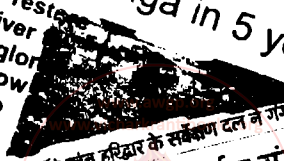

Aiming to restore the holy river to its former glory, members vow to spruce up the 2,525-km long river

HARIDWAR

शांति कुंज हरिद्वार के सर्वेक्षण दल ने गंगा में प्रदूषण देखा

प्रदूषण दूर करने को निर्मल गंगा अभियान

लिया हाल

गंगा को स्वच्छ रखने का लिया संकल्प

मोकामा | संवाद सूत्र

गायत्री परिवार द्वारा शहर में निर्मल गंगा जागरूकता रैली निकाली गई। गंगा को स्वच्छ रखने के लिए निकाली गई रैली में शिवनार मध्य विद्यालय के सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया।

रैली में शामिल छात्रों ने 'हर-हर गंगे' 'अमृत में विष घोल रहे हो' 'गंगा को माता कहते हो पर इसको गंदा करते हो' जैसे नारे लगा कर लोगों को जागरूक करने का काम किया।

छात्रों का काफिला बैनर-पोस्टर के साथ आसपास के इलाकों में घूमकर शिवनार गांव के गंगातट स्थित गायत्री मंदिर पहुंचा। मंदिर में छात्रों ने गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प लिया। संकल्प सभा में ...

शांतिकुंज हरिद्वार की टीम ने गंगा का प्रदूषण देखा

...गा के सर्वेक्षण के लिए हरिद्वार से आया दल। • हिन्दुस्तान

...। शांति कुंज हरिद्वार की टीम ने सोमवार को गंगा प्रदूषण देखा। हरिद्वार से आई टीम का नेतृत्व ओमपाल शर्मा कर रहे थे। यह टीम जिले में अटेना घाट की ओर से यहां पहुंची। टीम के पास वीडियो कैमरा, प्रदूषण नापने की मशीन थी। ...

पहुंची। सुबह यहां से टीम ...रामपुर के लिए रवाना हुई। टीम के सदस्य गोविंद सिंह यहां रुके और उनसे गंगा स्वच्छता के बारे में बातचीत की। गोविंद सिंह ने बताया कि पहले चरण में टीम यह पता कर रही है कि कहां क्या समस्या है। दूसरे ...

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांतिकुंज ने शुरू की निर्मल गंगा की मुहिम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org